सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 47, नई दिल्ली । रविवार, 27 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता...

03 दिल्ली के वार्ड तक सभी मंदिरों में करेंगे श्रद्धांजलि सभा, निकालेंगे आक्रोश मार्च: 06 भूजल को प्रदूषण से बचाया जाना चाहिए। 08 देश के कुल खनिज का 40 प्रतिशत हिस्सेदारी केवल झारखंड की है

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में सम्मान प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म को भरकर जमा करे। आपके फार्म जमा करने के बाद जूरी द्वारा जांच कर आपको ईमेल/व्हाट्सएप से सम्मान समारोह का निमंत्रण भेजा जाएगा।

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSeK5Go2e5KD4m1v82E-oGAISA7BAXqX5hTm31j9OLZG4fifCA/viewform?usp=dialog

सम्मान हेतु योग्यता।।

परिवहन, सड़क सुरक्षा, प्रदुषण नियंत्रण, महिला सुरक्षा एवं अन्य किसी भी श्रेणी/क्षेत्र में आप जनहित में कार्य कर रहे है या करते है तो आप परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में अपना सम्मान प्राप्त करने के लिए... अपना परिचय, कार्य शैली, कार्य क्षेत्र एवं किस आधार पर सम्मान प्राप्त करने में योग्य हैं।

transportvisheshcontent@gmail.com Switch account

The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form

* Indicates required question

अधिकृत मानदंड *

- ◯ नाम
- ◯ संस्था
- ◯ ट्रस्ट
- ◯ अन्य
- ◯ Other:

आपका या संस्थान परिचय *

Your answer

सम्मान श्रेणियां *

- ◯ परिवहन
- ◯ महिला सुरक्षा
- ◯ सड़क सुरक्षा
- ◯ प्रदूषण नियंत्रण
- ◯ लेखाकार
- ◯ कवि
- ◯ कवित्री
- ◯ प्रदूषण मुक्त वाहन निर्माता (इलेक्ट्रिक वाहन)
- ◯ सुरक्षा नियंत्रित उपकरण निर्माता
- ◯ वाहन स्क्रैप डीलर
- ◯ उग्रवाद सुरक्षा जागृति
- ◯ पत्रकार
- ◯ ऐंकर
- ◯ Other:

परिचय पत्र (आधार अंक या पंजीकरण प्रमाण पत्र) *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

आपके द्वारा लागू किया जा रहे मानदंडों को साबित करने के लिए साक्ष्य *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

परिवहन सम्मान श्रेणियां *

- ◯ सार्वजनिक सेवा
- ◯ छात्र वाहन सेवा
- ◯ यात्री बस सेवा
- ◯ यात्री कार सेवा
- ◯ लॉजिस्टिक सेवा
- ◯ ड्राइवर कल्याण सेवा
- ◯ बस कल्याण सेवा
- ◯ लॉजिस्टिक्स कल्याण सेवा
- ◯ N.A. (अगर आप किसी ओर श्रेणी से भाग ले रहे हैं)
- ◯ Other:

Submit Clear form

क्या आप जानते हैं आपकी गलती ना होते हुए भी पद के बल का दुरुपयोग करते हुए दिल्ली परिवहन आयुक्त गैर कानूनी ढंग से अरबों रुपए सरकारी राजस्व में जमा करवा रहा है और आप डर से दे रहे हैं

"क्या इसीलिए गृह मंत्री भारत सरकार, उपराज्यपाल, मुख्य सचिव और मुख्यमंत्री उनके द्वारा खुले आम किए जा रहे गैर कानूनी और जनता के अहित में कार्यों पर नहीं करते कोई सवाल और कार्यवाही"?

संजय बाटला

"बड़े सवाल जो आपको उठा कर जवाब लेने चाहिए पर क्यों है आप लुट कर भी चुप,

1. वाहनों के पंजीकरण के साथ और व्यवसायिक वाहनों से हर फिटनेस के साथ पार्किंग चार्ज वसूलने के बाद भी क्या सिर्फ राजस्व इजाफे के लिए ही परिवहन आयुक्त के दिशा निर्देशों के कारण दिल्ली में पार्किंग प्लेस उपलब्ध नहीं हो पा रहे ?

2. वाहन मालिकों का अति गोपनीय डाटा जो वाहन पंजीकृत करवाने के लिए अनिवार्य किया हुआ है खुले आम ऐप पर उपलब्ध और वाहन मालिकों की जान माल को असुरक्षित। क्या इसके पीछे भी परिवहन आयुक्त का कोई दिशा निर्देश है जो कोई कार्यवाही करने को तैयार नहीं

3. रोड टैक्स वसूलने के बाद भी सुरक्षित, बिना टूटी फूटी और जाम मुक्त सड़के उपलब्ध नहीं करवाने के पीछे भी परिवहन आयुक्त के दिशा निर्देश है क्योंकि चालानों को करने के दिशा निर्देश जारी वही करते हैं

4. अगर वाहन प्रदूषण दिल्ली के प्रदूषण का जिम्मेदार है तो इसका अर्थ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त नहीं होने देने और उसके नाम पर जनता से करोड़ों रुपए से भी ज्यादा हर साल वसूलने के पीछे भी हैं परिवहन आयुक्त

5. जनता की निजी संपति को अपने प्रिय वाहन स्क्रैप डीलरो को बल का दुरुपयोग कर उठवाकर दिलवाने वाले भी परिवहन आयुक्त

दिल्ली में सिर्फ यातायात पुलिस द्वारा एक साल में एक्स्ट्रा चालान कर कितने का जनता से जुर्माना वसूलने का डाटा आपके लिए प्रस्तुत

लाखों का चालान दिल्ली की सड़कों पर अव्यवस्था तीन महीने में वसूले गए 8 करोड़ से ज्यादा

लाखों का चालानः पार्किंग स्पेस की कमी ने खड़ी की नई मुसीबत

क्यों की गलत पार्किंगः दिल्ली की गलत पार्किंग के रहने की वजह जानने की जरूरत है। जब गड़ियों की संख्या के अनुपात में पार्किंग के लिए ठीक जगह उपलब्ध नहीं मिलती, तो लोग जो सुरक्षित, सुखद और समयानुसार सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध नहीं होने के कारण कार चलाने को मजबूर हैं गलत जगह पर भी गड़ियां खड़ी करने को मजबूर रहते हैं।

यानी गलती परिवहन विभाग की वाहनों से पार्किंग चार्ज लेने के बावजूद पार्किंग उपलब्ध नहीं करवाना या यह साजिश की पार्किंग स्थल और सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध मत करवाओ और करो गलत पार्किंग के नाम करोड़ों चालान

गाड़ी को गलत पार्क करने पर ट्रैफिक कैमरे की नजर पड़ रही है।

क्रेन से उठाई गई 40 हजार से ज्यादा गाड़ियां

कैसे कर रही कार्यवाही :

ट्रैफिक पुलिस की कार्यवाही कानून गलत गड़ियों की चैकिंग, नोटिस भेजने और क्रेन की मदद की जा रही है। एक जनवरी 2025 से 31 मार्च 2025 तक ट्रैफिक पुलिस ने की कार्यवाहीः

चालानः 1,67,000+
जुर्मानाः 8.35 करोड़+
नोटिसः 1,18,000+
क्रेन से उठाई गड़ियांः 40,414

"दिल्ली की एक बड़ी समस्या गलत पार्किंग की है। सड़क की चौड़ाई घट जाती है और जाम की समस्या बढ़ जाती है। इसलिए ट्रैफिक पुलिस लगातार कार्यवाही कर रही है।"

ग्रैप (GRAP) के अनुसार जारी किया गया डेटा

2024: 5 लाख 22 हजार **ज्यादा चालान**

2025 (मार्च तक): 1 लाख 67 हजार **ज्यादा चालान**

15 अक्टूबर 2024 से 29 मार्च 2025: 2 लाख 29 हजार **ज्यादा चालान**

1 अक्टूबर 2024 से 31 मार्च 2025: 2 लाख 74 हजार **ज्यादा चालान**

अब भी समझे जाने अपने हक को और परिवहन आयुक्त से मांगे सुरक्षित, साफ सुथरी, बिना टूटी फूटी, प्रकाश से परिपूर्ण और जाम मुक्त सड़के या फिर भरा गया चालान का पैसा उनके खाते से

परिवहन आयुक्त से मांगे सुरक्षित, साफ सुथरी, समयानुसार, गंतव्य स्थल से गंतव्य स्थल की सार्वजनिक सवारी सेवा या उसके बदले मजबूरी में निजी वाहन चलाने पर अधिक हुआ खर्चा वह उनके खाते से

परिवहन आयुक्त से मांगे वायु गुणवत्ता क्योंकि दिल्ली में जनता जिस पेट्रोलियम उत्पाद का उपयोग पैसे देकर वाहनों में कर रही है वह भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार प्रदूषण मुक्त है फिर प्रदूषण के नाम का चालान का भुगतान का हक किसका???

जनता की आंखों में धूल झोंककर साल में खरबों रुपए बिना गलती के भी गलती बता कर राजस्व में पहुंचवाने के कारण ही उनके गैर कानूनी आदेशों पर भी भारत सरकार गृह मंत्रालय, दिल्ली प्रशासक उपराज्यपाल, मुख्य सचिव और मुख्यमंत्री दिल्ली कोई कार्यवाही करने को तैयार नहीं।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता द्वारा व्यवसायिक वाहन मालिकों को वाहनों की फिटनेस में आ रही समस्या के समाधान को लेकर परिवहन आयुक्त एवं वाहन संस्था के पदाधिकारियों से की बैठक

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता द्वारा आज व्यवसायिक वाहन मालिकों को पिछले कई महीनों से वाहनों के जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने में जो परेशानियों उत्पन्न हो रही हैं पर बैठक में वाहन संस्था ट्रांसपोर्टर्स रिप्रेजेंटेटिव वेलफेयर एसोसिएशन के पदाधिकारियों के समक्ष परिवहन आयुक्त से जल्द से जल्द निवारण कराने का निर्देश दिया।

इस बैठक में बुराड़ी में जल्द से जल्द ऑटोमेटिक जांच मशीनों द्वारा जांच शुरू कराने पर मुख्य निर्देश जारी किए गए। विश्वस्त सूत्र के अनुसार अगले हफ्ते इस बाबत परिवहन विभाग पूरी कार्यवाही कर फाइल आयुक्त परिवहन को भेजेंगे।

राष्ट्रीय कहानी सुनाओ दिवस आज

संयुक्त राज्य अमेरिका में हर साल 27 अप्रैल को राष्ट्रीय कहानी सुनाओ दिवस सभी उम्र के लोगों को कहानियाँ साझा करने के लिए प्रोत्साहित करता है। कहानियाँ कई रूप ले सकती हैं। आप किसी किताब से पढ़ सकते हैं या अपनी कल्पना से कोई कहानी बना सकते हैं। बचपन की यादों से बनी कहानियाँ कहानीकार और श्रोता दोनों पर अमिट छाप छोड़ती हैं। आप चाहे जो भी कहानी सुनाएँ, यह दिन दोस्तों और परिवार के साथ मिलकर उन कहानियों को साझा करने का समर्थन करता है।

राष्ट्रीय कहानी दिवस कहानी सुनाने की प्राचीन प्रथा ने ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया। यह पारिवारिक परंपराओं, इतिहास और लंबे समय से कही जाने वाली कहानियों को आगे बढ़ाने का एक शानदार तरीका है। यह मनोरंजक होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी हो सकता है। कोई भी अच्छा कहानीकार आपको बताएगा कि कुछ बेहतरीन कहानियाँ वास्तविक जीवन के अनुभवों से आती हैं।

विश्व कहानी दिवस कब मनाया जाता है? यह उत्सव हर पीढ़ी को कहानियाँ सुनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसमें सबसे कम उम्र के कहानीकार से लेकर सबसे अनुभवी कहानीकार शामिल हैं। दादा-दादी और बच्चों को एक साथ इकट्ठा करके कहानियाँ सुनाएँ। कोई विषय चुनें और कहानियाँ सुनाएँ। अपनी पसंदीदा किताबें या अच्छी तरह याद की गई कहानियाँ लाएँ। परिवार, दोस्तों और प्रियजनों के साथ कहानियाँ सुनाने में समय बिताना सभी के लिए एक-दूसरे से सीखने, याद रखने और एक-दूसरे के करीब आने का समय होता है।

एक बंधनकारी माहौल बनाने के अलावा, मौखिक कहानी सुनाना यादों को ताज़ा करने के समृद्ध अवसर प्रदान करता है। अतीत को हमारे वर्तमान से जोड़ते हुए, मौखिक कहानी सुनाना रचनात्मकता को भी बढ़ावा देता है। यह कल्पना के उपयोग को प्रोत्साहित करता है जो जीवन भर चलता है।

राष्ट्रीय कहानी दिवस कैसे मनाएं? देश भर के पुस्तकालय इस दिन में भाग लेते हैं। वे बच्चों के लिए विशेष कहानी सुनाने का समय प्रदान करते हैं। क्या आपके पास बताने के लिए कोई कहानी है? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कहानी छोटी है या लंबी, काल्पनिक या गैर-काल्पनिक, लंबी कहानी या लोककथा। अपने जीवन में कहानीकारों की तलाश करें और उन्हें कहानियों से आपको आनंदित करने के लिए प्रोत्साहित करें। जैसे ही आप सुनते हैं, उन्हें किसी तरह से रिकॉर्ड करें। यह उन सभी के लिए एक दिन है।

कहानी सुनाएँ। जब आप अपनी कहानी सुनाने की कला का अभ्यास कर रहे हों, तो अपनी कहानियों को जीवंत बनाने के लिए इन युक्तियों को आज़माएँ: अपने दर्शकों को शामिल करें। उन्हें भी भाग लेने के लिए आमंत्रित करें! अपने पात्रों को उनकी अपनी आवाज़ देना सुनिश्चित करें। क्या केरमिट द फ्रॉग या डैनियल द टाइगर अपनी आवाज़ के बिना एक जैसे होंगे? शारीरिक रूप से सक्रिय हो जाएँ! शारीरिक हरकतें आपकी कहानियों को अतिरिक्त प्रभाव देती हैं। आप अपने दर्शकों का ध्यान आकर्षित करेंगे। आप अपनी कहानी को जीवंत भी करेंगे। अपने दर्शकों से सवाल पूछें। मुख्य पात्र मुसीबत से कैसे बाहर निकलेगा? आगे क्या होगा? आपको क्या लगता है कि यह किसने किया? आप क्या करेंगे? अपने दर्शकों को आश्चर्यचकित करने के लिए गलत दिशा का उपयोग करें। ध्वनि प्रभाव, छोटे जादू के करतब और प्रॉप्स सभी आपकी कहानियों में आश्चर्य के तत्व जोड़ते हैं। चेहरे के भाव आपके शब्दों को और भी स्पष्ट करते हैं। किसी पात्र की भावना को घर तक पहुँचाने के लिए इस शक्तिशाली उपकरण का उपयोग करें। कहानी को जोर से पढ़े और लोगों को भी शामिल कर ले।

लीवर रोग

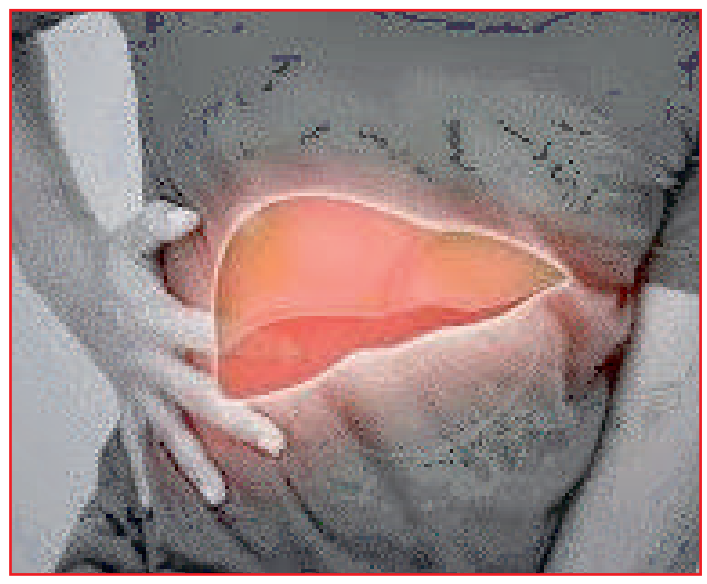

आज कल चारों ओर लीवर के रोगी हैं, किसी को पीलिया हैं, किसी का लीवर सूजा हुआ हैं, किसी का फैटी हैं, और डॉक्टर बस नियमित दवाओं पर चला देते हैं मरीज को, मगर आराम किसी को मुश्किल से ही आते देखा हैं।

लीवर हमारे शरीर का सबसे मुख्य अंग है, यदि आपका लीवर ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर पा रहा है तो समझिये कि खतरे की घंटी बज चुकी है। लीवर की खराबी के लक्षणों को अनदेखा करना बड़ा ही मुश्किल है और फिर भी हम उसे जाने अंजाने अनदेखा कर ही देते हैं।

लीवर की खराबी होने का कारण ज्यादा तेल खाना, ज्यादा शराब पीना और कई अन्य कारणों के बारे में तो हम जानते ही हैं। हालाकि लीवर की खराबी का कारण कई लोग जानते हैं पर लीवर जब खराब होना शुरु होता है तब हमारे शरीर में क्या क्या बदलाव पैदा होते हैं यानी की लक्षण क्या हैं, इसके बारे में कोई नहीं जानता।

वे लोग जो सोचते हैं कि वे शराब नहीं पीते तो उनका लीवर कभी खराब नहीं हो सकता तो वे बिल्कुल गलत हैं।

क्या आप जानते हैं कि मुँह से गंदी बदबू आना भी लीवर की खराबी हो सकती है। क्यों चौंक गए ना?

हम आपको कुछ परीक्षण बताएंगे जिससे आप पता लगा सकते हैं कि क्या आपका लीवर वाकई में खराब है। कोई भी बीमारी कभी भी चेतावनी का संकेत दिये बगैर नहीं आती, इसलिये आप सावधान रहें।

मुंह से बदबू यदि लीवर सही से कार्य नही कर रहा है तो आपके मुंह से गंदी बदबू आएगी। ऐसा इसलिये होता है क्योकि मुंह में अमोनिया ज्याद रिसता है।

लीवर खराब होने का एक और संकेत है कि सकिन क्षतिग्रस्त होने लगेगी और उस पर थकान दिखाई पडने लगेगी। आंखों के नीचे की सकिन बहुत ही नाजुक होती है जिस पर आपकी हेल्थ का असर साफ दिखाई पड़ता है।

पाचन तंत्र में खराबी यदि आपके लीवर पर वसा जमा हुआ है और या फिर वह बड़ा हो गया है, तो फिर आपको पानी भी नहीं हजम होगा।

त्वचा पर सफेद धब्बे यदि आपकी त्वचा का रंग उड गया है और उस पर सफेद रंग के धब्बे पड़ने लगे हैं तो इसे हम लीवर स्पॉट के नाम से बुलाएंगे।

यदि आपकी पेशाब या मल हर रोज़ गहरे रंग का आने लगे तो लीवर गड़बड़ है। यदि ऐसा केवल एक बार होता है तो यह केवल पानी की कमी की वजह से हो सकता है।

यदि आपके आंखों का सफेद भाग पीला नजर आने लगे और नाखून पीले दिखने लगे तो आपको जौन्डिस हो सकता है। इसका यह मतलब होता है कि आपका लीवर संक्रमित है।

लीवर एक एंजाइम पैदा करता है जिसका नाम होता है बाइल जो कि स्वाद में बहुत खराब लगता है। यदि आपके मुंह में कडुआहर लगे तो इसका मतलब है कि आपके मुंह तब बाइल पहुंच रहा है।

जब लीवर बड़ा हो जाता है तो पेट में सूजन आ जाती है, जिसको हम अक्सर मोटापा समझने की भूल कर बैठते हैं।

मानव पाचन तंत्र में लीवर एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विभिन्न अंगों के कार्यों जिसमें भोजन चयापचय, ऊर्जा भंडारण, विषाक्त पदार्थों को बाहर निकलना, डिटॉक्सीफिकेशन, प्रतिरक्षा प्रणाली का समर्थन और रसायनों का उत्पादन शामिल हैं। लेकिन कई चीजें जैसे वायरस, दवाएं, आनुवांशिक रोग और शराब लिवर को नुकसान पहुंचाने लगती है। लेकिन यहां दिये उपायों को अपनाकर आप अपने लीवर को मजबूत और बीमारियों से दूर रख सकते हैं।

करें ये घरेलू कुछ उपाय

हल्दी लीवर के स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए अत्यंत उपयोगी होती है। इसमें एंटीसेप्टिक गुण मौजूद होते है और एंटीऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करती है। हल्दी की रोगनिरोधन क्षमता हैपेटाइटिस बी व सी का कारण बनने वाले वायरस को बढ़ने से रोकती है। इसलिए हल्दी को अपने खाने में शामिल करें या रात को सोने से पहले एक गिलास दूध में थोड़ी सी हल्दी मिलाकर पिएं

सेब का सिरका, लीवर में मौजूद विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। भोजन से पहले सेब के सिरके को पीने से शरीर की चर्बी घटती है। सेब के सिरके को आप कई तरीके से इस्तेमाल कर सकते हैं- एक गिलास पानी में एक चम्मच सेब का सिरका मिलाएं, या इस मिश्रण में एक चम्मच शहद मिलाएं। इस मश्रिण को दिन में दो से तीन बार लें।

आंवला विटामिन सी के सबसे संपन्न स्रोतों में से एक है और इसका सेवन लीवर की कार्यशीलता को बनाये रखने में मदद करता है। अध्ययनों ने साबित किया है कि आंवला में लीवर को सुरक्षित रखने वाले सभी तत्व मौजूद हैं। लीवर के स्वास्थ्य के लिए आपको दिन में 4-5 कच्चे आंवले खाने चाहिए.

पपीता लीवर की बीमारियों के लिए सबसे सुरक्षित प्राकृतिक उपचार में से एक है, विशेष रूप से लीवर सिरोसिस के लिए। हर रोज दो चम्मच पपीता के रस में आधा चम्मच नींबू का रस मिलाकर पिएं। इस बीमारी से पूरी तरह निजात पाने के लिए इस मिश्रण का सेवन तीन से चार सप्ताहों के लिए करें.

सिंहपर्णी जड़ की चाय लीवर के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले उपचारों में से एक है। अधिक लाभ पाने के लिए इस चाय को दिन में दो बार पिएं। आप चाहें तो जड़ को पानी में उबाल कर, पानी को छान कर पी सकते हैं। सिंहपर्णी की जड़ का पाउडर बड़ी आसानी से मिल जाएगा।

लीवर की बीमारियों के इलाज के लिए मुलेठी का इस्तेमाल कई आयुर्वेदिक औषधियों में किया जाता है। इसके इस्तेमाल के लिए मुलेठी की जड़ का पाउडर बनाकर इसे उबलते पानी में डालें। फिर ठंड़ा होने पर छान लें। इस चाय रुपी पानी को दिन में एक या दो बार पिएं।

फीटकोंस्टीट्यूएंट्स की उपस्थिति के कारण, अलसी के बीज हार्मोन को ब्लड में घूमने से रोकता है और लीवर के तनाव को कम करता है। टोस्ट पर, सलाद में या अनाज के साथ अलसी के बीज को पीसकर इस्तेमाल करने से लिवर के रोगों को दूर रखने में मदद करता है

एवोकैडो और अखरोट को अपने आहार में शामिल कर आप लीवर की बीमारियों के आक्रमण से बच सकते हैं। एवोकैडो और अखरोट में मौजूद ग्लुटथायन, लिवर में जमा विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालकर इसकी सफाई करता है।

पालक और गाजर का रस का मिश्रण लीवर सिरोसिस के लिए काफी लाभदायक घरेलू उपाय है। पालक का रस और गाजर के रस को बराबर भाग में मिलाकर पिएं। लीवर की मरम्मत के लिए इस प्राकृतिक रस को रोजाना कम से कम एक बार जरूर पिएं

सेब और पत्तेदार सब्जियों में मौजूद पेक्टिन पाचन तंत्र में उपस्थित विषाक्त पदार्थों को बाहर निकाल कर लीवर की रक्षा करता है। इसके अलावा, हरी सब्जियां पित्त के प्रवाह को बढ़ाती हैं।

एक पौधा और है जो अपने आप उग आता है, जिसकी पत्तियां आंवले जैसी होती है. इन्ही पत्तियों के नीचे की ओर छोटे छोटे फुल आते है जो बाद में छोटे छोटे आंवलों में बदल जाते है . इसे भुई आंवला कहते है. इस पौधे को भूमि आंवला या भू- धात्री भी कहा जाता है .यह पौधा लीवर के लिए बहुत उपयोगी है.इसका सम्पूर्ण भाग , जड़ समेत इस्तेमाल किया जा सकता है.तथा कई बाज़ीगर भुई आंवला के पत्ते चबाकर लोहे के ब्लेड तक को चबा जाते हैं . ये यकृत (लीवर) की यह सबसे अधिक प्रमाणिक औषधि है . लीवर बढ़ गया है या उसमे सूजन है तो यह पौधा उसे बिलकुल ठीक कर देगा . बिलीरुबिन बढ़ गया है , पीलिया हो गया है तो इसके पूरे पढ़े को जड़ों समेत उखाडकर , उसका काढ़ा सुबह शाम लें . सूखे हुए पंचांग का 3 ग्राम का काढ़ा सवेरे शाम लेने से बढ़ा हुआ बाईलीरुबिन ठीक होगा और पीलिया की बीमारी से मुक्ति मिलेगी।

'ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि तन्नो परशुरामः प्रचोदयात।।'

"*क्या आप जानते हैंरू रमहाभारत में जितने भी महारथी और उन्नत शस्त्र थे, उन सभी का आधार भगवान परशुराम थे।"

(१) भगवान श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र परशुराम जी ने ही दिया था।

(२) देवव्रत भीष्म के गुरु भी भगवान परशुराम ही थे।

(३) गुरु द्रोणाचार्य के गुरू भी परशुराम ही थे।

(४) अर्जुन को दिव्यास्त्र सहित ब्रह्मास्त्र का जो ज्ञान गुरु द्रोणाचार्य से मिला, वह गुरु द्रोणाचार्य के पास परशुराम जी से ही आया था। केवल वनवास के दौरान इंद्र के यहां से जो दिव्यास्त्र अर्जुन ने प्राप्त किया, उसके आधार इंद्र सहित अलग-अलग देवता थे।

(५) कर्ण के गुरु भी भगवान परशुराम ही थे। इंद्र द्वारा कवच-कुंडल के एवज में जो शक्ति अस्त्र कर्ण को मिला था, उसे छोड़कर सारे दिव्यास्त्र उन्हें भगवान परशुराम से ही मिले थे।

(६) भारत में शस्त्र विद्या के सबसे बड़े ज्ञाता, अनुसंधानकर्ता और प्रयोक्ता भगवान परशुराम ही हैं।

(७) आधुनिक युग की दृष्टि से सोचें तो भगवान परशुराम परमाणु व मिसाइल तकनीक के सबसे बड़े ज्ञाता थे।

(८) भगवान परशुराम विष्णुजी का अवेशावतार माने जाते हैं।

(९) भगवान परशुराम की और भी बहुत महिमा है, जो रामायण, महाभारत और पुराणों में दर्ज है।

'ॐ रां रां ॐ रां रां परशुहस्ताय नमः।।

'ॐ ब्रह्मक्षत्राय विद्महे क्षत्रियान्ताय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात।।'

जय जय भगवान परशुरामजी

दिन के आठ प्रहर कौन से हैं?

हिन्दू धर्म में समय की धारणा बहुत ही वृहत्त तौर पे रही है। जो वर्तमान में सेकंड, मिनट, घंटे, दिन-रात, माह, वर्ष, दशक और शताब्दी तक सीमित हो गई है लेकिन हिन्दू धर्म में एक अणु, तृसरेणु, त्रुटि, वेध, लावा, निमेष, क्षण, काष्ठा, लघु, दंड, मुहूर्त, प्रहर या याम, दिवस, पक्ष, माह, ऋतु, अयन, वर्ष (वर्ष के पांच भेद- संवत्सर, परिवत्सर, इद्वत्सर, अनुवत्सर, युगवत्सर), दिव्य वर्ष, युग, महायुग, मन्वंतर, कल्प,

अंत में दो कल्प मिलाकर ब्रह्मा का एक दिन और रात, तक की वृहत्तर समय पद्धति निर्धारित है।

आठ प्रहर : हिन्दू धर्मानुसार दिन-रात मिलाकर 24 घंटे में आठ प्रहर होते हैं। औसतन एक प्रहर तीन घंटे या साढ़े सात घटी का होता है जिसमें दो मुहूर्त होते हैं।एक प्रहर एक घटी 24 मिनट की होती है।

दिन के चार और रात के चार मिलाकर कुल आठ प्रहर।

दिन के चार प्रहर- 1.पूर्वान्ह, 2.मध्यान्ह, 3.अपरान्ह और 4.सायंकाल।

रात के चार प्रहर- 5.प्रदोष, 6.निशिथ, 7.त्रियामा एवं 8.उषा।

आठ_प्रहर : एक प्रहर तीन घंटे का होता है।

सूर्योदय के समय दिन का पहला प्रहर प्रारंभ होता है जिसे पूर्वान्ह कहा जाता है।

दिन का दूसरा प्रहर जब सूरज सिर पर आ जाता है तब तक रहता है जिसे मध्याह्न कहते हैं।

इसके बाद अपरान्ह (दोपहर बाद) का समय शुरू होता है, जो लगभग 4 बजे तक चलता है।

4 बजे बाद दिन अस्त तक सायंकाल चलता है फिर क्रमशः प्रदोष, निशिथ एवं उषा काल। सायंकाल के बाद ही प्रार्थना करना चाहिए।

अष्टयाम : वैष्णव मन्दिरों में आठ प्रहर की सेवा-पूजा का विधान 'अष्टयाम' कहा जाता है। वल्लभ सम्प्रदाय में मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, संध्या-आरती तथा शयन के नाम से ये कीर्तन-सेवाएं हैं। इसी के आधार पर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग के गाने का समय निश्चित है।प्रत्येक राग प्रहर अनुसार निर्मित है।

प्रहार 1:- सुबह 6 बजे से 9 बजे तक वैरव, बंगाल वैरव, रामकली, विभास, जोगई, तोरी, जयदेव, सुबह कीर्तन, प्रभात भैरव,गुंकाली और कलिंगरा,

प्रहर 2:- सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तकः देव गांधार, भैरवी, मिश्र भैरवी, असावरी, जोनपुरी, दुर्गा, गांधारी, मिश्रा बिलावल, बिलावल, बृंदावानी सारंग, सामंत सारंग, कुरुभ, देवनागिरी

*प्रहर 3:- दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक गोर सारंग, भीमपलासी, पीलू, मुल्तानी, धानी,त्रिवेणी, पलासी, हंसकनकिनी

प्रहर 4:- दोपहर 3 से शाम 6 बजे बंगाल का पारंपरिक कीर्तन, धनसारी, मनोहर, रागश्री, पुरावी, मालश्री, मालवी, श्रीटंक और हंस नारायणी

प्रहर 5:- शाम 6 बजे से रात 9 बजे तक यमन, यमन कल्याण, हेम कल्याण, पूर्वी कल्याण, भूपाली, पुरिया, केदार, जलधर केदार, मारवा, छाया, खमाज, नारायणी, दुर्गा, तिलक कामोद, हिंडोल, मिश्रा खमाज नट, हमीर

प्रहर 6:- रात्रि 9 से 12 बजे तक सोरत, बिहाग, दर्श, चंपक, मिश्र गारा, तिलंग, जय जवान्ति, बहार, काफी, अरना, मेघा, बागीशारी, रागेश्वरी, मल्हाल, मिया, मल्हार

प्रहर 7:- 12 बजे से 3 बजे तक मालगुंजी, दरबारी कनरा, बसंत बहार, दीपक, बसंत, गौरी, चित्रा गौरी, शिवरंजिनी, जैतश्री, धवलश्री, परज, माली गौरा, माड़, सोहनी, हंस रथ, हंस ध्वनि

प्रहर 8:- सुबह 3 बजे से सुबह 6 बजे तक चंद्रकोस, मालकोस, गोपिका बसंत, पंचम, मेघ रंजिनी, भांकर, ललिता गौरी,ललिता, खाट, गुर्जरी तोरी, बाराती तोरी, भोपाल तोरी, प्रभाती कीर्तन

हनुमान जी की चतुरता की एक अनसुनी कथा.....!!

एक समय कपिवर की प्रशंसा के आनन्द में मग्न श्रीराम ने सीताजी से कहा- 'देवी ! लंका विजय में यदि हनुमान का सहयोग न मिलता तो आज भी मैं सीता वियोगी ही बना रहता।'

सीताजी ने कहा- 'आप बार-बार हनुमान की प्रशंसा करते रहते हैं, कभी उनके बल शौर्य की, कभी उनके ज्ञान की। अतः आज आप एक ऐसा प्रसंग सुनाइये कि जिसमें उनकी चतुरता से लंका विजय में विशेष सहायता हुई हो।'

श्रीराम बोले, 'ठीक याद दिलाया तुमने। युद्ध में रावण थक गया था। उसके अधिकतर वीर सैनिकों का वध हो चुका था। अब युद्ध में विजय प्राप्त करने का उसने अन्तिम उपाय सोचा। यह था देवी को प्रसन्न करने के लिए चण्डी महायज्ञ।

यज्ञ आरम्भ हो गया। किन्तु हमारे हनुमान को चैन कहाँ ? यदि यज्ञ पूर्ण हो जाता और रावण देवी से वर प्राप्त करने मे सफल हो जाता तो उसकी विजय निश्चित थी। बस, तुरन्त उन्होने ब्राह्मण का रूप धारण किया और यज्ञ में शामिल ब्राह्मणों की सेवा करना प्रारम्भ कर दिया। ऐसी निःस्वार्थ सेवा देखकर ब्राह्मण अति प्रसन्न हुये। उन्होंने हनुमान से वर मांगने के लिए कहा।

पहले तो हनुमान ने कुछ भी मांगने से इनकार कर दिया, किन्तु सेवा से संतुष्ट ब्राह्मणों का आग्रह देखकर उन्होंने एक वरदान मांग लिया।' 'वरदान में क्या मांगा हनुमान ने ?' सीताजी के प्रश्न में उत्सुकता थी।

श्रीराम बोले, 'उनकी इसी याचना में तो चतुरता झलकती है। 'जिस मंत्र को बार बार किया जा रहा था, उसी मंत्र के एक अक्षर का परिवर्तन का हनुमान ने वरदान में मांग लिया और बेचारे भोले ब्राह्मणों ने 'तथास्तु' कह दिया। उसी के कारण मंत्र का अर्थ ही बदल गया, जिससे कि रावण का घोर विनाश हुआ।'

सीताजी ने प्रश्न किया, 'एक ही अक्षर से अर्थ में इतना परिवर्तन !' 'कौन सा मंत्र था वह ?' श्रीराम ने मंत्र बताया-

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।

जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥

(अर्गलास्तोत्र-2)

इस श्लोक में 'भूतार्तिहारिणि' मे 'ह' के स्थान पर 'क' का उच्चारण करने का हनुमान ने वर मांगा।

भूतार्तिहारिणि का अर्थ है, 'संपूर्ण प्रणियों की पीड़ा हरने वाली और 'भूतार्तिकारिणिरू का अर्थ है प्राणियों को पीड़ित करने वाली।' इस प्रकार एक सिर्फ एक अक्षर बदलने ने रावण का विनाश हो गया।

'ऐसे चतुरशिरोमणि हैं हमारे हनुमान।' श्रीराम ने प्रसंग को पूर्ण किया। सीताजी इस प्रसंग को सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुई।

मित्रों आज के युग में हमें हनुमान की आवश्यकता है। ऐसे हनुमान की जो स्वामी भक्त हो, ज्ञानी हो, त्यागी हो, चरित्र सम्पन्न और जिसमें चतुरशीलता हो।

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।

सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान॥

भावार्थः- श्री रघुनाथजी का गुणगान संपूर्ण सुंदर मंगलों का देने वाला है। जो इसे आदर सहित सुनेंगे, वे बिना किसी जहाज (अन्य साधन) के ही भवसागर को तर जाएँगे॥

---------धर्म---------

मनुष्य का सच्चा मित्र धर्म ही है, जब कोई साथ नहीं देता तब धर्म साथ देता है, धन सत्यसंपत्ति नष्ट हो जाए कोई चिन्ता नहीं किन्तु धर्म को नष्ट न होने देना चाहिए, सभी सुखों का साधन धन मानना अज्ञानता है, धर्म ही सुख का सच्चा साधन है, मानव सृष्टि संचालित करने हेतु भगवान ने जो विधि विधान बनाए हैं वही धर्म है।

धर्म का आरम्भ सत्य से होकर आत्म समर्पण पर समाप्त होता है -

1. सत्य -- 'यथादृष्टार्थगोचरभूतहितवाक्यम' सत्य ही ईश्वर का स्वरुप है, धर्म की गति सूक्ष्म है, सत्य वह साधन है जिसका आश्रय ग्रहण करने वाला सत्यनारायण में लीन होता है, जिससे सर्वकल्याण हो सके ऐसा विवेक युक्त वचन ही सत्य है, दूसरों को चोट न पहुँचाना ही सत्य है। दूसरों के हित के लिए जो कुछ निश्चित रूप से ज्ञात है, उसे शब्दों द्वारा व्यक्त करना ही सत्य है रसत्यं भूतहितं प्रोक्तम्र सत्य वह है जो सबके कल्याण के लिए कहा जाता है - सत्य की सीमाओं को पार करना।

2. दयाभाव 'भूतेषु सर्वेषु दुःखसहिष्णुत्वम' जहाँ तक हो सके दूसरो भला करना चाहिए, सभी प्राणियों पर दया करना' का अर्थ है दूसरों के दुख को सहन न कर पाना।

तुलसीदास जी के अनुसार--

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।

तुलसी दया न छोड़िए, जब लग घट में प्राण।'

व्याख्याः

'दया धर्म का मूल है' दया ही धर्म का आधार है, धर्म की शुरुआत है।

'पाप मूल अभिमान' अभिमान, अहंकार, या घमंड पाप का मूल कारण है।

'तुलसी दया न छोड़िए' मनुष्य को कभी भी दया का त्याग नहीं करना चाहिए।

'जब लग घट में प्राण' जब तक शरीर में प्राण है, तब तक दया का अभ्यास करना चाहिए।

धर्म का मार्ग दया से ही शुरू होता है और अभिमान से बचना चाहिए।

3. पवित्रता - पावित्र्य सभी का धर्म है, पवित्रता का मतलब है ईश्वर द्वारा पवित्र किया जाना या अलग किया जाना, पवित्रता वह अलगाव है जिसमें नैतिक शुद्धता शामिल है, आजकल शरीर बहुत शुद्ध किया जाता है किन्तु मन नहीं मन एवं चित्त शुद्धि परमावश्यक है मृत्यु के पश्चात मन साथ जाता है अतः इसे शुद्ध रखने का हर संभव प्रयास होना चाहिए।

4. तपश्चर्या - तप का अर्थ है- उष्णता, गति, क्रियाशीलता, घर्षण, संघर्ष, तितिक्षा, कष्ट सहना, विचार, वाणी , वर्तन को शुद्ध रखना ही तपश्चर्या है।

5. तितिक्षा - तितिक्षा का मतलब है, सहनशीलता, क्षमा, शांति, सामर्थ्य, या त्याग, भगवद्कृपा से जो दुःख मिले उसे सहन करते हुए शत्रु के प्रति भी सद्भाव बनाए रखना ही तितिक्षा है।

6. अहिंसा - 'अहिंसां प्राणिनां पीड़ावर्जनमरू किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुँचाना, मन में किसी का अहित न सोचना, किसी को कटुवाणी आदि के द्वार भी नुकसान न देना तथा कर्म से भी किसी भी अवस्था में, किसी भी प्राणी कि हिंसा न करना, यह अहिंसा है।

7. ब्रह्मचर्य - ब्रह्मचर्य का मतलब है, परमात्मा में विचरना या सदा उसी का ध्यान करना, ब्रह्मचर्य का पालन करने से असाधारण ज्ञान मिलता है, ब्रह्मचर्य पालन करने से जीवन के सभी खतरों से बचाव होता है, ब्रह्मचर्य पालन करने से कई तरह की सिद्धियां मिलती हैं ब्रह्मचर्य पालन करने से आत्म-साक्षात्कार जल्दी होता है, ब्रह्मचर्य पालन करने से परमानंद की प्राप्ति होती हैब्रह्मचर्य पालन करने का सबसे आसान साधन सिद्धासन करना है, ब्रह्मचर्य आश्रम जीवन के पहले 20-25 वर्षों तक रहता है ब्रह्मचर्य में मद्य-मांस-ग्रहण, गंधद्रव्य सेवन, स्वादिष्ट और मधुर वस्तुओं का खाना, स्त्रीप्रसंग करना, नृत्यगीतादि देखना सुनना आदि निषिद्ध थे, किसी स्त्री या पुरुष का भी चिंतन न करना ही सच्चा ब्रह्मचर्य है, कामभाव के गीत श्रवण करना भी ब्रह्मचर्य भंग ही है, ब्रह्मचर्य तो मन को स्थिर करने का साधन है ।

8. त्याग - 'आत्महितप्रत्ययनिकपरिग्रहविमोचनम' कुछ भी त्याग करना धर्म है, त्याग का अर्थ है अपने हित के विरुद्ध सभी चीजों का त्याग करना, त्याग का मतलब है किसी चीज़ को छोड़ देना या अपने स्वत्व से हटा लेना. त्याग एक भावना है, जो हमें सांसारिक मोह-माया से अलग करती है।

9. स्वाध्याय - सद्ग्रन्थ का चिंतन , मनन ही स्वाध्याय है, जो सभी का धर्म है, स्वाध्याय से ज्ञान बढ़ता है,स्वाध्याय से मन और आचरण पर नियंत्रण होता है , स्वाध्याय से व्यवहार में कुशलता और संतुलन आता है, स्वाध्याय से नैतिक और चारित्रिक पतन से बचा जा सकता है, स्वाध्याय से श्रेष्ठ विचारों की आपूर्ति होती है, स्वाध्याय से स्वयं की समीक्षा होती है, स्वाध्याय से विचार परिवर्तन होता है, अतः 'स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्' अर्थात पढने और पढ़ाने में प्रमाद मत करो, और -- 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' अर्थात स्वाध्याय में प्रमाद मत करो।

10. आर्जवम् -आर्जव का मतलब है - सीधापन, ईमानदारी, और सरलता, यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक अवधारणा है. स्वभाव को सरल रखना ही सभी का धर्म है।

11. संतोष - वह मानसिक अवस्था जिसमें व्यक्ति प्राप्त होने वाली वस्तु को यथेष्ट समझता है और उससे अधिक की कामना नहीं रखता, ऐसी मानसिक अवस्था जिसमें प्रदत्त वस्तु या स्थिति ही यथेष्ट हो, ईश्वर ने जो और जितना दिया है ,उसी में संतुष्ट रहने वाला ही श्रीमंत एवं असंतुष्ट रहने वाला दरिद्र है

12. समदृष्टि - सभी के प्रति समदृष्टि से देखना सभी का धर्म है, समदृष्टि का अर्थ है समान दृष्टि जिसमें द्वैत नहीं है, जिसमें अच्छा-बुरा, ऊंचा-नीच, पाप- पुण्य, मान-अपमान सभी को एक समान दृष्टि से देखा जाता है, मन और शरीर से मानव कभी भी एक नहीं हो सकता है। समदृष्टि का अर्थ है तत्त्व दृष्टि अर्थात वह जो देखता है वह वास्तव में है।

13. मौन -- 'वाङ्नियमोऽपि मनः संयम पूर्वको भवति इति कार्येण कारणम उच्यते मनः संयमो मौनमिति' यह मानसिक तप कहलाता है, केवल वाणी विषयक मन के संयम का नाम मौन है, अन्तःकरण का संयम, क्योंकि वाणी का संयम भी मनः संयम पूर्वक ही होता है, बिना कारण व्यर्थ कुछ भी न बोलना ही मौन है जो सभी का धर्म है, मौन से मन को शांति मिलती है एवं मानसिक पापों का शमन होता है

14. आत्म चिंतन - प्रतिदिन चिंतन करें कि मैं शरीर नहीं,बल्कि परामात्मा का अंश हूँ, जन्म के पूर्व न कोई रिश्तेदार था और न मृत्यु के बाद रहेगा, इन दोनों के मध्य ही रिश्तेदार होते हैं, आत्मस्वरुप को बराबर जानने वाला ही आनन्द पा सकता है, आत्म चिंतन आपकी अपनी भावनाओं, कार्यों, प्रेरणाओं और व्यवहारों तथा उनके पीछे छिपे कारणों के बारे में सोचने की गतिविधि है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है जिसका उपयोग आप यह समझने के लिए कर सकते हैं कि आप कौन हैं, आपके मूल्य और विश्वास क्या हैं और आप जिस तरह से सोचते, महसूस करते और कार्य करते हैं, वह क्यों करते हैं।

15. पंच महाभूतों में ईश्वर की भावना करना, ईश्वर का अनुभव करना सभी का धर्म है।

16. कृष्णकथा का श्रवण करना भी सभी का धर्म है।

17. कृष्ण कीर्तन , स्मरण , सेवा , पूजा , नमस्कार और उनके प्रति दास्य सख्य और आत्मसमर्पण ये सभी का धर्म है।

सुरक्षा बलों के ऑपरेशन का न करें प्रसारणः सूचना प्रसारण मंत्रालय

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने सभी मीडिया चैनलों को राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में रक्षा अभियानों और सुरक्षा बलों की आवाजाही का सीधा प्रसारण न करने की अडवाइजरी जारी की है। अडवाइजरी में कहा गया है, ₹राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में, सभी मीडिया प्लेटफॉर्म, समाचार एजेंसियों और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को सलाह दी जाती है कि वे रक्षा और अन्य सुरक्षा-संबंधी अभियानों से संबंधित मामलों पर रिपोर्टिंग करते समय अत्यधिक जिम्मेदारी का प्रयोग करें और मौजूदा कानूनों और विनियमों का सख्ती से पालन करें।"

हिन्दी रूपांतरण

संख्या 41015/3/2024-बीसी-III

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार 'ए' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली - 110001, दिनांकः 26 अप्रैल, 2025

सभी मीडिया चैनल

विषयः सभी मीडिया चैनलों को रक्षा अभियानों और सुरक्षा बलों की आवाजाही का लाइव कवरेज दिखाने से परहेज करने की सलाह।

1. राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में, सभी मीडिया प्लेटफार्मों, समाचार एजेंसियों और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को सलाह दी जाती है कि वे रक्षा और अन्य सुरक्षा संबंधी कार्यों से संबंधित मामलों पर रिपोर्टिंग करते समय अत्यधिक जिम्मेदारी निभाएं और मौजूदा कानूनों और नियमों का सख्ती से पालन करें।

2. विशेष रूप सेः रक्षा संचालन या आंदोलन से संबंधित ₹स्रोत-आधारित₹ जानकारी के आधार पर कोई वास्तविक समय कवरेज, दृश्यों का प्रसार या रिपोर्टिंग नहीं की जानी चाहिए। संवेदनशील जानकारी का समय से पहले खुलासा अनजाने में शत्रुतापूर्ण तत्वों की सहायता कर सकता है और परिचालन प्रभावशीलता और कर्मियों की सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है।

3. पिछली घटनाओं ने जिम्मेदार रिपोर्टिंग के महत्व को रेखांकित किया है। कारगिल युद्ध, मुंबई आतंकी हमले (26/11) और कंधार अपहरण जैसी घटनाओं के दौरान, अप्रतिबंधित कवरेज से राष्ट्रीय हितों पर अनपेक्षित प्रतिकूल परिणाम हुए।

4. मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म और व्यक्ति राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कानूनी दायित्वों के अलावा, यह सुनिश्चित करना एक साझा नैतिक जिम्मेदारी है कि हमारी सामूहिक कार्रवाइयों से चल रहे ऑपरेशन या हमारे बलों की सुरक्षा से समझौता न हो।

5. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने पहले ही सभी टीवी चैनलों को केबल टेलीविजन नेटवर्क (संशोधन) नियम, 2021 के नियम 6(1)(पी) का पालन करने के लिए सलाह जारी की है। नियम 6(1)(पी) में कहा गया है कि ₹केबल सेवा में कोई भी कार्यक्रम नहीं चलाया जाना चाहिए जिसमें सुरक्षा बलों द्वारा किसी भी आतंकवाद विरोधी ऑपरेशन का लाइव कवरेज शामिल हो, जिसमें मीडिया कवरेज उपयुक्त सरकार द्वारा नामित अधिकारी द्वारा आवधिक ब्रीफिंग तक सीमित रहेगा, जब तक कि ऐसा ऑपरेशन समाप्त न हो जाए।"

6. ऐसा प्रसारण केबल टेलीविजन नेटवर्क (संशोधन) नियम, 2021 का उल्लंघन है और इसके तहत कार्रवाई की जा सकती है। इसलिए, सभी टीवी चैनलों को सलाह दी जाती है कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में सुरक्षा बलों द्वारा आतंकवाद विरोधी अभियान और आंदोलन का सीधा प्रसारण न करें। मीडिया कवरेज को ऐसे ऑपरेशन के समाप्त होने तक उपयुक्त सरकार द्वारा नामित अधिकारी द्वारा आवधिक ब्रीफिंग तक सीमित रखा जा सकता है।

7. सभी हितधारकों से अनुरोध है कि वे राष्ट्र की सेवा में उच्चतम मानकों को बनाए रखते हुए, कवरेज में सतर्कता, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का प्रयोग जारी रखें।

8. इसे मंत्रालय में सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

(क्षितिज अग्रवाल) डेप्युटी डायरेक्टर

में कॉपीः

1. केबल टेलीविजन (संशोधन) नियम, 2021 के तहत पंजीकृत टीवी चैनलों के स्व-नियामक निकाय।
2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के संघ/निकाय।
3. प्रसारण सेवा पोर्टल.

No. 41015/3/2024-BC-III

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING
'A' WING, SHASTRI BHAWAN,
NEW DELHI - 110001

Dated : 26th April, 2025

ADVISORY

To,

All Media Channels

Subject: Advisory to all Media channels to refrain from showing live coverage of defence operations and movement of security forces reg.

1. In the interest of national security, all media platforms, news agencies, and social media users are advised to exercise utmost responsibility and adhere strictly to existing laws and regulations while reporting on matters concerning defence and other security related operations.

2. Specifically: No real-time coverage, dissemination of visuals, or reporting based on "sources-based" information related to defence operations or movement should be undertaken. Premature disclosure of sensitive information may inadvertently assist hostile elements and endanger operational effectiveness and the safety of personnel.

3. Past incidents have underscored the importance of responsible reporting. During events such as the Kargil war, the Mumbai terror attacks (26/11), and the Kandahar hijacking, unrestricted coverage had unintended adverse consequences on national interests.

4. Media, digital platforms, and individuals play a vital role in safeguarding national security. Apart from the legal obligations, it is a shared moral responsibility to ensure that our collective actions do not compromise ongoing operations or the security of our forces.

5. Ministry of Information and Broadcasting has earlier already issued advisories to all TV channels to adhere to Rule 6(1)(p) of Cable Television Networks (Amendment) Rules, 2021. Rule 6(1)(p) states that

" No programme should be carried in the cable service which contains live coverage of any anti-terrorist operation by security forces, wherein media coverage shall be restricted to periodic briefing by an officer designated by the appropriate Government, till such operation concludes."

6. Such telecast is in violation of Cable Television Networks (Amendment) Rules, 2021 and is liable for action thereunder. Therefore, all TV channels are advised not to telecast live coverage of anti-terrorist operation and movement by the security forces in interest of national security. Media coverage may be restricted to periodic briefing by an officer designated by the appropriate Government till such operation concludes.

7. All stakeholders are requested to continue exercising vigilance, sensitivity, and responsibility in coverage, upholding the highest standards in the service of the nation.

8. This issues with the approval of competent authority in the Ministry.

(Kshitij Aggarwal)
Deputy Director

Copy to:
1. Self -Regulatory Bodies of TV Channels Registered under the Cable Television (Amendment) Rules, 2021.
2. Association/ Bodies of Electronic Media.
3. Broadcast Seva Portal.

दिल्ली में कार ड्राइवर ने कॉरपोरेट मंत्रालय के सहायक निदेशक को मारी टक्कर, कई मीटर तक घसीटा; आरोपी गिरफ्तार

दिल्ली पुलिस ने प्रगति मैदान के पास एक तेज रफ्तार क्रेटा कार द्वारा स्कूटी सवार एक सरकारी अधिकारी को टक्कर मारने के मामले में कार्रवाई की है। टक्कर में घायल हुए अधिकारी गंभीर धोखाधड़ी जांच विभाग में कार्यरत हैं जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने आरोपी कार चालक को गिरफ्तार कर लिया है और मामले की जांच कर रही है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। कारपोरेट मंत्रालय के अंतर्गत गंभीर धोखाधड़ी जांच विभाग के अधिकारी को प्रगति मैदान-भैरो मंदिर मार्ग टनल के ब्रेकर के पास एक तेज रफ्तार क्रेटा कार चालक ने जोरदार टक्कर मार दी। पीड़ित स्कूटी पर सवार थे। टक्कर इतनी तेज थी कि वह सड़क पर कई मीटर तक घसीटते हुए चले गए।

हादसे में उनका दाहिने पैर का घुटना फ्रैक्चर हो गया और भी कई जगह चोटें आई हैं। उन्हें इलाज के लिए सफदरजंग अस्पताल भर्ती कराया गया। इसके बाद करोल बाग के मैक्स अस्पताल में रेफर कर दिया गया। वहीं तिलक मार्ग पुलिस ने कार्रवाई करते आरोपित कार चालक को गिरफ्तार कर लिया है। जिसकी पहचान यमुना विहार के हर्ष गुप्ता के रूप में हुई है।

घायल की पहचान बुराड़ी के विशाल गुप्ता के तौर पर हुई

पुलिस अधिकारी के मुताबिक, घायल की पहचान शांति नगर बुराड़ी के विशाल गुप्ता के रूप में हुई है। वह गंभीर धोखाधड़ी जांच विभाग में सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। उनका आरोप है कि वह 21 अप्रैल की सुबह करीब 8:15 बजे अपनी स्कूटी से सीजीओ काम्पलेक्स स्थित अपने आफिस स्कूटी से जा रहे थे। करीब 8:50 मिनट पर वह प्रगति मैदान-भैरो मंदिर मार्ग टनल के पास स्पीड ब्रेकर के पास पहुंचे। तभी पीछे से तेज रफ्तार में आ रहे क्रेटा कार चालक ने उनकी स्कूटी में जोरदार टक्कर मार दी।

टक्कर इतनी तेज थी कि वह काफी दूर तक सड़क पर घसीटते हुए चले गए। दो राहगीरों ने उनकी मदद की और उनके परिवार और पुलिस को सूचना दी। आरोपित कार चालक भी वहीं पर मौजूद रहा। इस दौरान पीड़ित ने अपने आफिस के ज्वाइंट डायरेक्टर को भी बुला लिया।

करोल बाग स्थित मैक्स अस्पताल किया गया था रेफर

उसके बाद उन्हें सफदरजंग के इमरजेंसी में भर्ती कराया गया। वहां पर पता चला कि उनका घुटना फ्रैक्चर हो गया। तब करोल बाग स्थित मैक्स अस्पताल में उन्हें रेफर कर दिया गया। 24 अप्रैल को उनका बयान दर्ज किया गया। इस मामले में उसी समय आरोपित कार चालक को गिरफ्तार कर लिया गया।

दिल्ली के वार्ड तक सभी मंदिरों में करेंगे श्रद्धांजलि सभा, निकालेंगे आक्रोश मार्चः जगद्गुरु स्वामी योगी जी महाराज

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

शनिवार। जगद्गुरु स्वामी योगी जी महाराज ने उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि अब समय धर्म की जागृति का है, सभी हिंदुओं को एक होना होगा।

आज दिल्ली श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सभी पूज्य संत, विश्व हिंदू परिषद, आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं के साथ सरकार से आतंकवाद के समूल नाश के लिए जो भी करना पड़े, करें, हम सभी आपके साथ हैं।

दिल्ली के सभी सनातन धर्म मंदिरों एवं सभी धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से आग्रह है कि सभी आने वाले सप्ताह में सभी प्रकार के कीर्तनों में दिवंगत हिंदुओं के लिए श्रद्धांजलि पाठ करें, सभा करें और जगह जगह आक्रोश मार्च निकालें।

सभी के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक सचदेवा जी ने बताया कि सभा अब वार्ड स्तर तक अपनी टीम बना रही है। कोरोना से पहले सभा के साथ 3500 से ज्यादा मंदिर जुड़े थे, अब पूरी दिल्ली में 6000 से ज्यादा मंदिरों को वार्ड तक टीम बनाकर जोड़ेंगे।

कार्यालय मंत्री सुमीत अलघ ने बताया इस प्रदर्शन में दिल्ली के प्रत्येक क्षेत्र से कार्यकर्ता आए, प्रांत संगठन मंत्री सुशील कुमार शुक्ला, हरि नगर विधानसभा क्षेत्र से अध्यक्ष श्री सुदर्शन आनंद अपनी टीम के साथ बस लेकर आए तथा साथ में रिक्की जी, अध्यक्ष राजौरी गार्डन विधानसभा सहित अशोक अग्रवाल ठाठी भी सम्मिलित रहे।

सफदरजंग अस्पताल: चिकित्सा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू रहा है

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्लीः सफदरजंग अस्पताल ने अपने रोबोटिक सर्जरी कार्यक्रम में एक नई उपलब्धि हासिल की है। यहां 36 वर्षीय महिला की जटिल रोबोटिक सर्जरी सफलतापूर्वक की गई है। महिला को एक विशाल एड्रेनल ट्यूमर का पता चला था। सफदरजंग अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. संदीप बंसल ने बताया कि 18.2 x 13.5 सेमी का यह एड्रेनल ट्यूमर दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा एड्रेनल ट्यूमर है, जिसे रोबोटिक तरीके से न्यूनतम इनवेसिव तरीके से हटाया गया है।

रोबोटिक सर्जरी यूरोलॉजी और रीनल ट्रांसप्लांट विभाग के प्रोफेसर और प्रमुख डॉ. पवन वासुदेवा ने डॉ. नीरज कुमार और डॉ. अविषेक मंडल के साथ मिलकर की। एनेस्थीसिया टीम में डॉ. सुशील, डॉ. भव्या और डॉ. मेघा शामिल थीं।

यह प्रक्रिया ख़तरों से भरी हुई थी क्योंकि ट्यूमर न केवल बहुत बड़ा हो गया था बल्कि शरीर की तीन महत्वपूर्ण संरचनाओं यानी इंफीरियर वेना कावा, लिवर और दायाँ गुर्दा पर भी कब्ज़ा कर लिया था और ख़तरनाक तरीके से चिपक गया था। यह ज़रूरी था कि ट्यूमर को आसपास की महत्वपूर्ण संरचनाओं को नुकसान पहुँचाए बिना पूरी तरह से हटा दिया जाए। डॉ. वासुदेव ने कहा कि सटीक विच्छेदन ऐसी सर्जरी करने की कुंजी है और दा विंची रोबोट के 3डी विज़न और उसके निपुण रोबोटिक हाथों की मदद से जटिल सर्जरी को आमतौर पर लेप्रोस्कोपी से ज़्यादा सटीकता के साथ किया जा सकता है। इस मामले में, सर्जरी तीन घंटे से ज़्यादा चली और ट्यूमर को बिना किसी जटिलता के पूरी तरह से हटाया जा सका। ऑपरेशन के बाद रिकवरी में कोई समस्या नहीं हुई और मरीज़ को 3 दिन में छुट्टी दे दी गई। रोबोटिक सर्जरी कई फ़ायदे देती है, जिसमें छोटे कीहोल चीरे, सटीक काम, ऑपरेशन के बाद कम दर्द, ऑपरेशन के बाद जल्दी रिकवरी और काम पर जल्दी वापसी शामिल है। डॉ. वासुदेवा ने बताया कि अगर यह सर्जरी खुले रास्ते से की जाती तो इसके लिए 20 सेंटीमीटर से ज़्यादा त्वचा चीरा लगाना पड़ता और इसके बाद पूरी तरह ठीक होने में कुछ हफ़्ते लगते। डॉ. संदीप बंसल ने कहा कि यह उपलब्धि रोबोटिक सर्जरी में सफ़दरजंग अस्पताल की विशेषज्ञता और सभी रोगियों को निःशुल्क अत्याधुनिक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के प्रति इसके समर्पण को दर्शाती है। इस तरह की जटिल रोबोटिक सर्जरी, जो सफ़दरजंग अस्पताल में निःशुल्क की जाती, निजी क्षेत्र में कुछ लाख से ज़्यादा खर्च होती।

दिल्ली में अतिक्रमण हटाओ अभियान जारी, 150 झुग्गियों पर चला बुलडोजर, 9000 वर्ग मीटर जमीन हुआ कब्जामुक्त

दिल्ली में रेलवे ने पुरानी सीलमपुर से कांति नगर के बीच अतिक्रमण हटाया। इस दौरान 150 झुग्गियां तोड़ी गईं और लगभग नौ हजार वर्ग मीटर जमीन को कब्जा मुक्त कराया गया। रेलवे ने झुग्गीवासियों को पहले नोटिस दिया था जिसके बाद कार्रवाई की गई। रेलवे अब खाली कराई गई जमीन पर दोबारा अतिक्रमण रोकने के लिए निगरानी रखेगा।

दिल्ली। पुराना सीलमपुर से कांति नगर के बीच शनिवार को रेलवे ने बुलडोजर चलाकर अपनी जमीन पर बनी झुग्गियों को हटाया। सात घंटे चली कार्रवाई में करीब 150 झुग्गियां ध्वस्त की गईं। इनमें रह रहे लोगों को रेलवे की ओर से तीन माह में दो बार नोटिस दिया गया था। उसका पालन न होने पर इनको दोबारा चेतावनी देते हुए जगह खाली करने का निर्देश दिया गया था। फिर भी लोग झुग्गियों में डटे रहे, इस पर रेलवे ने अपने स्तर पर कार्रवाई कर करीब नौ हजार वर्ग मीटर भूमि को कब्जा मुक्त कराया।

कबाड़ियों ने रेल लाइन के किनारे को किया था कब्जा

पुराना सीलमपुर से कांति नगर के बीच कबाड़ियों ने रेल लाइन के किनारे कब्जा किया हुआ था। बड़ी संख्या में लोग यहां पर झुग्गियां डाल कर रहे भी रहे थे। आरोप है कि झुग्गीवासी आए दिन रेलवे के लिए कोई न कोई परेशानी खड़ी करते थे। धीमी होने पर ट्रेनों में चढ़ कर वारदात करते थे।

शाम छह बजे तक कार्रवाई जारी रही

रेलवे ने इनके कब्जे से अपनी जमीन को मुक्त कराने के लिए हर स्तर पर प्रयास शुरू किए। नोटिस दिए गए थे। शनिवार सुबह 10 बजे आरपीएफ के सहायक सुरक्षा आयुक्त राज सिंह चौधरी के नेतृत्व में स्थानीय पार्षद नीलम चौधरी के सहयोग से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई शुरू की गई। इसमें कृष्ण नगर थाना पुलिस का भी सहयोग लिया गया। शाम छह बजे लगातार कार्रवाई जारी रही। इस दौरान झुग्गियां टूटने पर लोग आपत्ति करते हुए दिखे। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि खाली कराई जमीन पर दोबारा अतिक्रमण न हो, इसका बंदोबस्त किया जाएगा। आरपीएफ यहां पर लगातार निगरानी रखेगी।

टीम इंडिया के हेड कोच गौतम गंभीर को मिली थी जान से मारने की धमकी, दिल्ली पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार...

कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद गौतम गंभीर को जान से मारने की धमकी मिली थी। दिल्ली पुलिस ने इस मामले में जिग्नेश सिंह परमार नामक एक इंजीनियरिंग छात्र को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार आरोपी ने आईएसआईएस कश्मीर के नाम से ईमेल भेजकर गंभीर को धमकी दी थी। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दिल्ली। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारतीय क्रिकेट टीम के हेड कोच गौतम गंभीर को जान से मारने की धमकी देने वाले को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपित की पहचान गुजरात के जिग्नेश सिंह परमार के रूप में हुई है। वह एक इंजीनियरिंग छात्र है, जिसके परिवार ने दावा किया है कि वह मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित है। पुलिस उसे गिरफ्तार कर आगे की जांच कर रही है। मध्य जिले के उपायुक्त एम हर्षवर्धन के मुताबिक, पहलगाम में आतंकी हमले के बाद गौतम गंभीर ने अपने एक्स अकाउंट पर ट्वीट किया था, जिसमें उन्होंने हमले की कड़ी निंदा करते हुए लिखा था कि हमले के जिम्मेदार लोगों को इसकी कीमत चुकानी होगी। इसके बाद उन्हें आइएसआइएस कश्मीर की ओर से दो ईमेल मिले जिसमें उन्हें जान से मारने की धमकी दी गई थी। उन्होंने परिवार की जान को खतरा मानते हुए राजेंद्र थाने में इसकी शिकायत दी थी।

मनुष्य मरते समय जैसी चाह करता है, वैसा ही वह दूसरा जन्म पा लेता है। यदि एक मनुष्य जिसका सारा जीवन पाप करने में ही व्यर्थ हो गया हो, मरते समय दूसरे जन्म में महावीर और बुद्ध जैसा बनने की चाह करे, तो क्या यह सम्भव है?

अंतिम क्षण में जो विचार होगा, जो वासना होगी, वही दूसरे जीवन का कारण बन जाती है। अंतिम विचार हमारे पूरे जीवन का निचोड़ होता है। अंतिम विचार वही हो सकता है जो हमने जीवनभर बार-बार जीया/अभ्यास किया है। ऐसा हो नहीं सकता कि इस समय कोई भी नया विचार किया जा सकता है, सम्भव ही नहीं है। मरते क्षण में अपने आप को धोखा नहीं दे सकते। समय भी नहीं होता धोखा देने के लिए। मरते क्षण में तो पूरे जीवन की वासना निचुड़कर घनीभूत हो जाती है। वही बीज बन जाती है, उसी बीज से फिर नए जन्म की शुरुआत होती है। ऐसा समझें कि एक बीज हम बोते हैं, वृक्ष बनता है, फूल खिलते हैं। फूल में फिर बीज लगते हैं। उस बीज में उसी वृक्ष का प्राण फिर से समाविष्ट हो जाता है। वह बीज नए वृक्ष का जन्म बनेगा। हमने जीवनभर जो किया है, जो सोचा है, जिस भांति हम रहते हैं, वह सब निचुड़कर हमारी अंतिम वासना का बीज बन जाता है। इस बीज को उस समय/क्षण में बदलना हमारे हाथ में नहीं है। बदलना है तो अभी जीवित क्षणों/जीवन में ही कुछ किया जा सकता है, बदला जा सकता है।

संकेत गांव के योग माया मंदिर

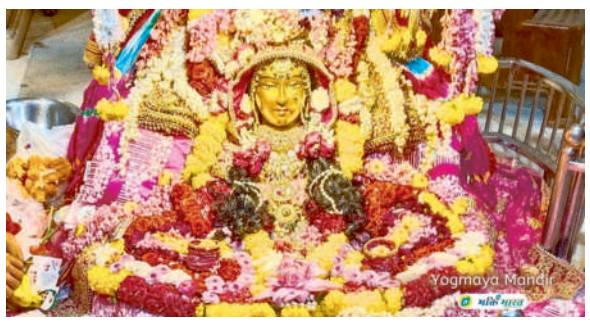

संकेत वन एक ऐसा स्थान है जहां योग माया ने श्रीराधा और श्रीकृष्ण को मिलने का संकेत दिया था। यह स्थान बरसाना के पास स्थित है और इसे संकेत वन, संकेत वट या संकेत गाँव भी कहा जाता है। संकेत देवी ही योग माया है, वे ही ललिता सखी हैं। वे ही मां महात्रिपुर सुंदरी हैं। वे हीं दुर्गा देवी हैं।

योग माया क्या है : योग माया भगवान की शाश्वत ऊर्जा की देवी हैं। उन्हें दिव्य संबंधों की सूत्रधार भी माना जाता है। वे दुर्गा देवी के रूप में भी जानी जाती हैं।

संकेत वन का महत्व : राधा-कृष्ण मिलन : यह स्थान राधा और कृष्ण के पहले मिलन के लिए प्रसिद्ध है।

योग माया का संकेत : योग माया ने ही राधा और कृष्ण को मिलने का संकेत दिया था।

ब्रज के पांच वट : संकेत वन ब्रज के पांच वटों में से एक हैं।

राधा-कृष्ण का विवाह : गर्ग संहिता के अनुसार, राधा-कृष्ण का विवाह यहीं हुआ था।

संकेत वन श्री राधा तथा श्रीकृष्ण के प्रेम और उनके दिव्य संबंधों का प्रतीक है। योग माया की कृपा से ही यहां श्रीराधा और श्रीकृष्ण का मिलन संभव हुआ।

जय जय श्रीराधे

क्या आप जानते हैं जब कौवा बीमार महसूस करता है तो वह चींटियों की तलाश करता है।

जी हां, आपने सही पढ़ा। जब कौवा अस्वस्थ महसूस करता है, तो वह किसी चींटी के बिल के पास बैठ जाता है, अपने पंख फैला लेता है, और एकदम शांत हो जाता है ताकि चींटियाँ उस पर चढ़ जाएँ और हमला करें।

इसके पीछे एक खास वजह होती है : चींटियाँ कौए के शरीर पर फॉर्मिक एसिड छिड़कती हैं, जो एक प्राकृतिक कीटाणुनाशक (antiparasitic) के रूप में काम करता है। यह एसिड कौए को फंगस, बैक्टीरिया और परजीवियों से छुटकारा दिलाने में मदद करता है, जिससे वह बिना किसी दवा के ठीक हो जाता है।

इस व्यवहार को "एंटिंग" (Anting) कहा जाता है और इसे कई पक्षियों में देखा गया है। यह पशु स्व-चिकित्सा (self-medication) का एक अद्भुत उदाहरण है।

प्रकृति अपनी खामोश बुद्धिमत्ता से हमेशा हमें चौंकाती रहती है!

साभार मां प्रकृति

प्यार परवान चढ़ता है...!

हमें एकसाथ देखकर सभी को खलता है,
देख रही है दुनिया प्यार परवान चढ़ता है।
अभी से उंगलियां उठ रही इस दोस्ती पर,
कुछ गौर किया करों ये हमारी बेबसी पर।
थोड़ा ही समय गुजारा घूरने लगती आँखें,
क्या ? बिगड़ जाएगा जो दूर बैठोगे जाके।

हमें एकसाथ देखकर सभी को खलता है,
देख रही है दुनिया प्यार परवान चढ़ता है।
क्या ? तुमने प्यार नहीं किया-अरे मत करो,
हमें करने दो, क्यों कहा ज़माने से ना डरो।
हाँ, इतना तो तय है गुनाह तो नहीं किया,
एक-दूसरे से हमने प्यार तो बेपनाह किया।

हमें एकसाथ देखकर सभी को खलता है,
देख रही है दुनिया प्यार परवान चढ़ता है।
उम्मीद करते है मिलेगी आपकी रजामंदी,
जीवन में एक ही बार चाहिए होती संधि।
चाहते है हश्र न हो इस प्यार का गमगीन,
कोई जीते-हारें, मिलन हो मीठा-नमकीन।

संजय एम तराणेकर

"मेहमान"

पाँच की मैगी साठ में खरीदी,
सौदा भी कोई सौदा था?
खच्चर की पीठ पे दो हज़ार फेंके,
इंसानियत भी कोई इरादा था?

बीस के पराठे पर दो सौ हँस कर,
पचास टिप फोटो वाले को,
हाउस बोट के पानी में बहा दिए
हज़ारों अपने भूखे प्याले को।

नकली केसर की खुशबू में
अपनी सच्चाई गँवा बैठे,
सिन्थेटिक शाल के झूठे रेशों में
अपने सपनों को सिलवा बैठे।

इतना लुटे, फिर भी मुस्काए,
आज जान भी लुटा आए हो,
और सुनो —
वो फिर भी कहते हैं —
"मेहमान हो, मेहमान हमारे हो!"

--- डॉ सत्यवान सौरभ

कानपुर में दोस्तों पर होटल से गिराकर छात्र की हत्या का आरोप, जांच शुरू

सुनील बाजपेई

कानपुर। एक छात्रा के होटल से गिरकर हुई मौत के मामले में उसकी हत्या का आप दोस्तों पर लगाया गया है ,जिसके लिए पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर घटना की जांच शुरू कर दी है। वहीं घटना से छात्र के परिवार में कोहराम भी मचा हुआ है। घटना का संबंध हरबंस मोहाल थाना क्षेत्र स्थित द ड्रीम्स से है।

प्राप्त विवरण के मुताबिक नौबस्ता थानाक्षेत्र के खाड़ेपुर के रहने वाले नरेंद्र कुमार गौतम का 22 साल का बेटा शिव गौतम सहदेव प्रसाद महाविद्यालय रमईपुर में बीए का छात्र था। उनके परिवार में छोटा भाई अवनीश और मां मंजू देवी हैं। परिजनों के मुताबिक दो दोस्त उसे घर से लेकर होटल द ड्रीम्स इन ले गए थे।

घटना की छानबीन में जुटी पुलिस को परिजनों ने बताया कि कि बेटे को शराब पिलाने के बाद उसे पहली मंजिल से फेंक दिया गया। होटल स्टॉफ ने उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। जहां आज शनिवार सुबह उसकी मौत हो गई। मृतक के पिता ने दो दोस्तों पर हत्या का आरोप लगाया। इसके बाद पुलिस ने घटना की छानबीन शुरू कर दी है। इसके लिए सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले जा रहे है।

महाराजा अग्रेसैन मैड़ीकल युनवर्स्टी बहादुरगढ की 340 विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा सैल झज्जर पुलिस की टीम ने यातायात के नियमों वा साईब्रक्राईम वा नये तीन कानुनो के बारे किया जागरूक

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़। पुलिस कमिश्नर श्रीमती डॉक्टर राजश्री सिंह के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में झज्जर पुलिस की अलग-अलग टीमें जिले भर में चौराहों, कंपनियाओ वेयरहाउस, शिक्षण संस्थाओं में जाकर सभी को यातायात के नियमों और साइबर क्राइम के बारे में जागरुक कर रही है। इसी कड़ी में शनिवार को सड़क सुरक्षा प्रभारी निरीक्षक सतीश कुमार की पुलिस टीम ने महाराजा अग्रेसेन मैडीकल युनिवर्स्टी बहादुरगढ़ के विद्यार्थियों को जागरूक किया। इस दौरान निरीक्षक सतीश कुमार ने बताया कि इन प्रोग्राम का मुख्य उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं के आंकड़ों को कम करने के लिए प्रत्येक नागरिक को जागरुक करना है। हमें यातायात के नियमों की पालना केवल चालान के डर से नहीं करनी चाहिए बल्कि एक सभ्य और जिम्मेवार नागरिक की तैसियत से करनी चाहिए सड़क दुर्घटनाओं में सबसे ज्यादा नुकसान युवा वर्ग को हो रहा है युवा वर्ग यातायात नियमों को अपने व्यवहार में अपनाकर और छोटी-छोटी आदतों को जीवन का हिस्सा बनाकर अपना वह दूसरों के जीवन को सुरक्षित बना सकता है। वा सड़क सुरक्षा को ले कर काफी स्वाल जबाव किये बच्चो ने इसमे काफी उत्साह दिखाया वा दोराने सवाल जबाब कालेज की एक भुतपुर्व छात्रा ने जो अब बतोर प्रोफेसर गिता पाढा कार्यरत है .२०१३ मे भी उन्होने नि० सतीश कुमार का यातायात नियमो पर व्यख्यान सुना था नि० सतीश कुमार जो पिछले 15साल से यातायात नियमो का पाठ पढा रहे है सतीश कुमार पर एक कवीता सुनाई

"झज्जर पुलिस प्रशासन के दिल पर आप करते राज है,
युवा पीढ़ी को सड़क परिवहन नियमों से अवगत कराने के लिए निरंतर आपके दिल में जो आग है,,
मूलधन से अधिक प्रिय होता ब्याज है,
सीट बेल्ट और हेलमेट क्यों पहने,यह तार्किक नियम समझाने में आप सरताज है,,
बेटियों की सुरक्षा के लिए हर वक्त आप बेताब है,
कानून के नियमों के प्रति सख्त आपका मिजाज है,,
आपके सरल, सौम्य व्यक्तित्व पर हम सभी को नाज है,
रोड सेफ्टी के लिए बुलंद आपकी आवाज है,,
यह तो अभी आपकी सफलताओं का आगाज है,
भविष्य में असंख्य उपलब्धियों का होगा आपके मस्तक पर ताज है..

वा इसी क्रम मे Psi दिपक ने छात्राओ को तीन नये कानुनो बारे विस्तार से बताया वा साईबरक्राईम

वारे उन्होने बताया की किसी को भी फोन पर अपने एटीएम कार्ड, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड या बैंक से संबंधित कोई भी जानकारी ना दें आजकल युवा बिना किसी पूछताछ या छानबीन के फेसबुक पर आई हुई किसी भी फ्रेंड रिक्वेस्ट को तुरंत ही स्वीकार कर लेता है ऐसी रिक्वेस्ट साइबर अपराधी द्वारा भी भेजी जा सकती है। इसलिए फेसबुक आदि पर दोस्त बनाने से पहले उनके बारे में अच्छे से जानकारी प्राप्त कर लें। अनजान नंबर से व्हाट्सएप पर आने वाली किसी भी प्रकार की ऑडियो या वीडियो कॉल को किसी भी सूरत में अटेंड ना करें किसी भी प्रकार की साइबर ठगी होने पर साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करके अपनी शिकायत दर्ज करवा सकते है। इस अवसर पर कोलज प्रार्चाय ललिता भठ ने पुलिस टीम का आभार व्यक्त किया वा डा० चरण सिह पुनिया शकर लालनहरा गिता पढा वा 340 छात्राऐ हाजीर रही।

"राष्ट्रवाद का रंगमंच"

रात की चादर तले, स्क्रीन पर उठता है शोर,
लाहौर की दीवारें काँपती हैं, ऐसा चलता है ज़ोर।
धमाकों की छवियाँ, सीजीआई की चमक,
हर एंकर बना सेनापति, हर बहस में क्रुद्ध विमर्श।

वीरता बिकती है यहाँ, पैकेज बना दी गई है मौत,
शहीदों के आँसू सूखते हैं, पर टीआरपी पाती है सौगात।
अधजली चिट्ठियाँ, अधूरी पेंशन की फाइलें,
झाँकती हैं पर्दे की ओट से — रुकब आएगा मेरा हक?

बालाकोट के साये में बनती हैं फ़िल्में,
जहाँ राष्ट्रवाद का संवाद है, पर खामोश हैं आँखें।

'हाउ इज़ द जोश' गूंजता है सिनेमा हॉल में,
पर शहीद की माँ के आँगन में पसरा है सन्नाटा।

प्रश्न पूछने पर लगते हैं तमगे — गद्दार, देशद्रोही,
और उत्तर नहीं, मिलते हैं मीम्स, ट्रोल, मौन की तोहीनें।
सोशल मीडिया पर झंडा लगा, चल पड़ते हैं योद्धा,
मगर युद्धभूमि में अब भी अकेला खड़ा है सच्चा सिपाही।

चुनावी मौसम में उगते हैं 'स्ट्राइक' के फूल,
वोटों की फ़सल काटने को उछाले जाते हैं जुमले अनगिनत।
जो चुप रहे, वह राष्ट्रभक्त; जो बोले, वह शक़ के घेरे में,
सत्ता और मीडिया की यह साठगांठ लिखती है झूठ की गाथाएँ।

कश्मीर की घाटियों में जो बहता है खून,
उसकी कोई स्क्रिप्ट नहीं, कोई रीटेक नहीं,
वह मृत्यु है — निर्वस्त्र, नग्न, अनकही,
जिसे ढकते हैं राष्ट्रवाद के पर्दे।

तो पूछो —
क्या देशभक्ति अब एक 'सीन' है, या संवेदना की पुकार?
क्या हम तालियाँ ही बजाएँगे, या पकड़ेंगे रोते हाथों की दरकार?

वक़्त है अब,
राष्ट्रवाद को थियेटर से उतार
ज़मीन की धूल में ढूँढने का।

– प्रियंका सौरभ

पहलगाम में हुए विभित्सक आतंकवाद के खिलाफ़ पूरी दुनियाँ भारत के साथ मज़बूती से खड़ी है

अंतरराष्ट्रीय जगत में आतंकवाद के खिलाफ़ लड़ाई में भारत को मज़बूती से समर्थन की घोषणाओं का ताँता लगा-सर्जिकल स्ट्राइक की सुबसुबाहट -

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर पहलगाम में टूरिस्टों पर हुए विभित्सक हमले में बेगुनाह मारे गए 27 पर्यटकों के बारे में सुनकर भारत ही नहीं करीब करीब पूरी दुनियाँ के देशों ने निंदा कर भारत को आतंकवाद के मुद्दे पर समर्थन में सहयोग की पेशकश की है, जिसमें अब मुस्लिम वर्ल्ड भी शामिल हो गया है। बता दें, केंद्रीय गृह मंत्री ने शुक्रवार दिनांक 25 अप्रैल 2025 को सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने निर्देश दिया कि वे अपने-अपने राज्यों में रह रहे सभी पाक नागरिकों की पहचान कर जल्द से जल्द पाक वापस भेजने के लिए कदम उठाएं। इस फैसले के तहत भारत सरकार ने सभी प्रकार के वीजा को तत्काल प्रभाव से रद्द कर दिया है। दूसरी और बता दें, पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाक दोनों की फौजें हाई अलर्ट पर हैं। गुरुवार रात पाक आर्मी ने लाइन ऑफ कंट्रोल पर स्मॉल आर्म फायरिंग की, जिसका भारतीय सेना ने माकूल जवाब दिया।दूसरी तरफ पूरी रात अलग अलग जगहों पर फायरिंग की आवाज गूंजती रही। भारतीय सेना पूरे एलओसी पर अलर्ट है। सूत्रों के मुताबिक हाई अलर्ट में सभी अहम पदों पर तैनात लोग हर वक्त उपलब्ध रहते हैं। क्विक रिएक्शन टीम का रिस्पॉन्स टाइम कम हो जाता है। यानी कुछ भी होने पर तुरंत उसपर एक्शन होता है। सभी असेस्ट्स एकदम रेडी होते हैं। राशन का रिजर्व स्टॉक 7 से 15 दिन का पूरी तरह सुनिश्चित हो जाता है। यह अलग अलग यूनिट में अलग अलग होता है क्योंकि सबकी लोकेशन और भौगोलिक स्थिति अलग होती है। हर यूनिट के पास जितना गोला-बारूद होनाचाहिए वह चेक होता है और सुनिश्चित होता है कि संभावित स्थितियों केहिसाब से सभी तैयारी हो।पिछले कुछ दशक से अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत की स्थिति काफी मजबूत हुई है, भारत की हर बात को गौर से सुना जाता है, दुनिया हर छोटे-बड़े ईलीट क्लब की सदस्यता भारत के पास है, वहीं पाक की हालत दिन प्रति दिन खराब होती जा रही है, आज उसे असफल देश की श्रेणी में रखा जा रहा है, उसकी आर्थिक स्थिति भी बद से बदतर होती जा रही है, वह लगातार अंतरराष्ट्रीय समर्थन भी खोता जा रहा है, वह पिछले कुछ सालों से अमेरिका से रिश्ते सुधारने की कोशिशों में लगा हुआ है, लेकिन अमेरिका उसे भाव नहीं दे रहा है आतंकवाद से उसका संबंध उसामा बिन लादेन के एबटाबाद में मारे जाने के बाद से और उजागर हुआ है। इससे अंतरराष्ट्रीय जगत में उसकी स्थिति कमजोर हुई है। वर्तमान सरकार नें भारत ने अरब जगत में अपनी दमदार मौजूदगी दर्ज कराई है। सऊदी अरब, यूएई, ईरान और कतर जैसे देशों के साथ भारत के रिश्ते प्रगाढ़ हुए हैंजिस दिन पहलगाम हमला हुआ, उस दिन पीएम सऊदी अरब में ही थे, उन्हें हमले की सूचना वहीं दी गई थी। हमले की जानकारी मिलने के बाद सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने हमले की निंदा की।उन्होंनेभारत को मदद का आश्वासन भी दिया था।पहलगाम हमले की निंदा करने वालों में मुस्लिम वर्ल्ड लीग भी शामिल है।पहलगाम हमले पर अरब और मुस्लिम जगत से आई प्रतिक्रिया से यह पता चलता है कि वहां से भी पाक को निराशा ही हाथ लगेगी, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय जगत में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत को मजबूती से समर्थन की घोषणा करता लगा हुआ है,इसलिए सर्जिकल स्ट्राइक की सुबसुबाहट बन रही है, हमले की निंदा करने वालों में खुद कश्मीर की आम जनता भी शामिल हो गई है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे पहलगाम में हुई विभित्सक आतंकवाद के खिलाफ़ पूरी दुनियाँ मजबूती से भारत के साथ खड़ी है।

साथियों बात अगर हम पहलगाम हमले पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं की करें तो, आतंकवादियों ने 22 अप्रैल को जम्मू कश्मीर के पहलगाम में जब पर्यटकों को निशाना बनाया तो दुनियाँ भर के नेताओं ने इसकी निंदा की थी। इनमें अमेरिका, ब्रिटेन,यूरोपीय यूनियन,इजरायल जर्मनी, ईरान और सऊदी अरब समेत दुनियाँ के कई देशों और मुस्लिम वर्ल्ड लीग जैसे संगठन शामिल थे, इन सभी देशों ने भारत के साथ एकजुटता प्रदर्शित की है। यह हमला ऐसे समय हुआ जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति भारत के आधिकारिक दौरे पर थे, हमले के बाद निंदा करते हुए भारत से एकजुटता दिखाई थी। अमेरिका ने हमले के बाद अपनी यात्रा को रद्द करने की जगह उसे जारी रखने का फैसला किया,वहीं राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर लिखा कि कश्मीर से बहुत परेशान करने वाली खबर आई है। आतंकवाद के खिलाफ अमेरिका भारत के साथ मजबूती से खड़ा है, इस तरह से अमेरिका ने यह दिखाया कि अमेरिका भारत के साथ कितनी मजबूती से खड़ा है। भारत के एक और विश्वसनीय सहयोगी रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पहलगाम हमले के बाद पीएम और राष्ट्रपति को संदेश भेजा, उन्होंने कहा कि वो भारत के साथ हैं। वहीं इजराइली पीएम ने भी भारत के साथ एकजुटता दिखाई, भारत की रक्षा जरूरतों को पूरा करने में इजरायल का बड़ा हाथ है, वह भारत को कई तरह के उपकरण मुहैया कराता है, वह आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत का मजबूती से समर्थन देता है।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय समुदाय में पाक के खैरखुवाह चीन की प्रतिक्रिया उत्साहवर्धक होने की करें तो, अंतरराष्ट्रीय समुदाय में आजकल पाक का सबसे बड़ा खैरख्वाह चीन ही है, वह हर समय उसके साथ खड़ा नजर आता है, लेकिन पहलगाम हमले के बाद चीन की जो प्रतिक्रिया दी वह काफी उत्साहजनक रही। नई दिल्ली स्थिति चीनी दूतावास ने अपने बयान में कहा कि पहलगाम में हुए हमले से स्तब्ध हूं और इसकी निंदा करता हूं, पीड़ितों के प्रति गहरी संवेदना और घायल और शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक सहानुभूति। सभी प्रकार के आतंकवाद का विरोध करें, टैरिफ वार सेपरेशान भारत और चीन आर्थिक सहयोग के नए रास्ते तलाश रहे हैं, यहां यह समझ लेना भी जरूरी है कि सीमा पर तनाव और 2020 में गलवान जैसी घटना होने के बाद भी भारत -चीन ने व्यापार ठप नहीं किया। चीन का हित पाक से अधिक भारत के साथ है, क्योंकि भारत जितना बड़ा बाजार पाक में नहीं है. ऐसे में युद्ध की स्थिति में चीन कोई फैसला लेने से पहले इस बात को ध्यान में जरूर रखेगा, ऐसा उसने अतीत में दिखाया भी है भारत- पाक के बीच हुए युद्धों में चीन ने खुद को दूर रखा था।

साथियों बात अगर हम तालिबान के समर्थन की करें तो हमले की निंदा करते हुए तालिबान ने भारत का समर्थन किया है। अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज तालिबान के बड़े नेता ने पहलगाम हमले पर अपने बयान में पाक को आईना दिखाते हुए कहा कि इस घटना के दोषियों को न्याय के कटघरे में लाते हुए सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए।

पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़े शब्दों में निंदा की है। उन्होंने कहा कि इस तरह की घटनाएं क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता के प्रयासों को कमजोर करती हैं। ऐसे में जरूरी हैकि इसके दोषियोंको सजा मिले ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं ना हों। तालिबान का पहलगाम हमले पर बयान और भारत के प्रति समर्थन अहम है क्योंकि पाक और अफगानिस्तान के बीच संबंध बीते कुछ दिनों से अच्छे नहीं हैं। पहलगाम आतंकी हमले के तार पाक से जुड़े हैं। इस हमले की जिम्मेदारी द रेजिस्टेंस फ्रंट नाम के आतंकी संगठन ने ली है। ये गुट प्रतिबंधित आतंकी समूह लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा हुआ है। हालांकि पाक सरकार ने भारत के आरोपों को खारिज किया है। पाक का कहना है कि भारत बिना किसी सबूत के ही पहलगाम हमले के लिए इस्लामाबाद पर उंगली उठा रहा है।

साथियों बात अगर हम भारत के समर्थन में अमेरिका के ऐलान की करें तो, इस क्रम में अमेरिका ने बड़ा ऐलान किया है, अमेरिका ने कहा है कि वह पहलगाम हमले के आतंकियों को दबोचने में भारत की मदद करेगा, इसकी घोषणा ट्रंप प्रशासन में राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड ने की, उन्होंने इस भयावह हमले की कड़े शब्दों में निंदा की और भारत के लोगों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त की हैं।ब्रूस ने कहा था,राष्ट्रपति ट्रंप और सचिव रुबियो ने स्पष्ट कर दिया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के साथ खड़ा है और आतंकवाद के सभी कृत्यों की कड़ी निंदा करता है, हम मारे गए लोगों के जीवन के लिए प्रार्थना करते हैं और घायलों के स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हैं तथा इस जघन्य कृत्य के अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाने का आह्वान तहे दिल से करते हैं।

साथियों बात अगर हम भारत पाक में युद्ध जैसे हालातो की करें तो, पहलगाम हमले के बाद पाक और भारत की ओर से आक्रामक बयानबाजी देखने को मिली है। दोनों देशों की ओर से कई कदम भी उठाए गए हैं। भारत ने सिंधु जल समझौते को निलंबित करते हुए सभी पाक नागरिकों को देश छोड़ने के लिए कहा है। पाक ने इसके जवाब में शिमला समझौता रद्द करने की बात कही है। फिलहाल दोनों देशों के बीच युद्ध जैसे हालात नजर आ रहेहैं।भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच जम्मू के गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज को किसी भी इमरजेंसी से निपटने के लिए तैयार रहने को कहा गया है। हॉस्पिटल के स्टोर कीपर को सभी जरूरी सप्लाई, इमरजेंसी दवाएं और महत्वपूर्ण उपकरण तुरंग इस्तेमाल करने के लिए तैयार रखने के निर्देश दिए गए हैं। इसके अलावा अस्पताल कर्मचारियों को अनावश्यक छुट्टियां ने लेने की सलाह दी गई है। इन निर्देशों पर कॉर्डिनेशन के लिए एक 24x7 कंट्रोल रूम भी बनाया गया है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि पहलगाम में हुए विभित्सक आतंकवाद के खिलाफ़ पूरी दुनियाँ भारत के साथ मज़बूती से खड़ी है।पहलगाम हमले की निंदा करने वालों में खुद कश्मीर की आम जनता व मुस्लिम वर्ल्ड भी शामिल हो गया है।अंतरराष्ट्रीय जगत में आतंकवाद के खिलाफ़ लड़ाई में भारत को मज़बूती से समर्थन की घोषणाओं का ताँता लगा-सर्जिकल स्ट्राइक की सुबसुबाहट !

मारुति सुजुकी इस साल लॉन्च करेगी दो नई एसयूवी, दूसरी साल के अंत तक मारेगी एंट्री

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में साल 2025 में Maruti Suzuki दो SUV को लॉन्च करने वाली है। एक इनकी पहली इलेक्ट्रिक कार Maruti eVitara होने वाली है और दूसरी Grand Vitara का 7-सीटर वर्जन हो सकता है। वहीं कंपनी 2025 में अपने व्यापक योजनाओं के साथ भारतीय बाजार में फिर से 50% मार्केट शेयर हासिल करने के लिए तैयारी कर रही है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में सबसे ज्यादा गाड़ियों की बिक्री करने वाली Maruti Suzuki अपनी पहले इलेक्ट्रिक कार जल्द ही लॉन्च करने वाली है। कंपनी ने इसके लॉन्च की टाइनलाइक की भी घोषणा कर दी है। इतना ही नहीं इसे नेक्सा शोरूम में डिस्प्ले भी करना शुरू कर दिया है। इसके साथ ही कंपनी साल 2025 में एक और कार लॉन्च करने की प्लानिंग कर रही है, जो SUV होने वाली है। आइए जानते हैं कि Maruti eVitara भारत में कब लॉन्च होगी और दूसरी SUVs कौन सी होने वाली है और उसे कब लॉन्च किया जाएगा?

Maruti eVitara कब होगी लॉन्च?

यह कंपनी की पहली इलेक्ट्रिक कार है, जिसे सितंबर 2025 में लॉन्च किया जाएगा। कंपनी इसकी नेक्सा आउटलेट्स के जरिए बिक्री करेगी। इसके साथ ही इन आउटलेट पर ईविटारा को डिस्प्ले भी किया जा रहा है। कंपनी ने इसे भारत में ऑटो एक्सपो 2025 में शोकेस किया था। भारत में लॉन्च होने के बाद eVitara का मुकाबला Tata Curve EV, Hyundai Creta Electric और MG ZS EV से देखने के लिए मिलेगा। भारत में Maruti eVitara की एक्स-शोरुम कीमत 16 लाख रुपये से लेकर 17 लाख रुपये के बीच हो सकती है।

दूसरी SUV का भी हुआ एलान

eVitara के अलावा, मारुति सुजुकी साल 2025 में दूसरी SUV को भी लॉन्च करेगी। कंपनी ने अभी तक यह नहीं बताया है कि दूसरी SUV कौन-सी होगी और इसे कब लॉन्च किया जाएगा, लेकिन यह साल 2025 के अंत तक भारतीय बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध होगी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह SUV Grand Vitara का 7-सीटर वर्जन हो सकता है, जिसे भारतीय ग्राहकों के लिए पेश किया जाएगा। दरअसल, कई बाद इसे भारत की सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया जा सकता है। इसके फ्रंट और रियर डिजाइन में खासा बदलाव देखने के लिए मिल सकता है और इसे एक नया और अलग लुक दिया जा सकता है।

Maruti का आगे का लक्ष्य

मारुति सुजुकी घरेलू बाजार के साथ-साथ ग्लोबल बाजार में भी अपनी पकड़ को मजबूक करने की प्लानिंग कर रही है। वित्तिय वर्ष 2025 में कंपनी ने घरेलू बिक्री में केवल 2% की वृद्धि हुई थी, इसलिए अब कंपनी FY 2026 में 20% एक्सपोर्ट ग्रोथ का लक्ष्य लेकर चल रही है। इसके साथ ही 2025 में अपने व्यापक योजनाओं के साथ भारतीय बाजार में फिर से 50% मार्केट शेयर हासिल करने के लिए तैयार है।

नई रॉयल एनफील्ड हंटर 350 भारत में लॉन्च; नए हेडलैंप, इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर समेत मिले बड़े अपडेट

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में 2025 Royal Enfield Hunter 350 लॉन्च हो गई है। इसमें कई बदलाव देखने के लिए मिले हैं। इसके पुराने संस्पेसन की जगह पर लीनियर स्प्रिंग से प्रोग्रेसिव स्प्रिंग दिया गया है। वहीं इसमें एलईडी हेडलैंप ट्रिपर पॉड के साथ डिजी-एनालॉग इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है। साथ ही इसके सभी वेरिएंट को स्लिप-असिस्ट क्लच का फीचर को शामिल किया गया है।

नई दिल्ली। रॉयल एनफील्ड की सबसे किफयती रोडस्टर मोटरसाइकिल 2025 Royal Enfield Hunter 350 को लॉन्च कर दिया गया है। इस मोटरसाइकिल के लॉन्च होने के बाद से पहली बार बड़ा अपडेट मिला है। कंपनी ने Hunter 350 को और भी ज्यादा अट्रैक्टिव बनाने के लिए कुछ जरूरी बदलाव किए हैं। आइए जानते हैं कि नई Royal Enfield Hunter 350 किन नए फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है?

क्या मिला नया?

2025 Royal Enfield Hunter 350 में सबसे बड़ा बदलाव इसमें मिलने वाला रियर सस्पेंशन है। इसे अब लीनियर स्प्रिंग से प्रोग्रेसिव स्प्रिंग में बदल गया है। एग्जॉस्ट के लिए नए रूटिंग के साथ-साथ, ग्राउंड क्लीयरेंस में 10 मिमी की बढ़ोतरी की गई है। इसमें नए डिजाइन की सीट भी दी गई है, जिसका प्रोफाइल पहले की तरह ही रखा गया है। कंपनी ने इसके सभी वेरिएंट को स्लिप-असिस्ट क्लच का फीचर दे दिया है। इसके अलावा, इसे और भी कई बेहतरीन फीचर्स के साथ अपडेट किया गया है।

मिले ये नए फीचर्स

2025 Royal Enfield Hunter 350 में अब एलईडी हेडलैंप, ट्रिपर पॉड के साथ डिजी-एनालॉग इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है और इसके टॉप वेरिएंट में टाइप-सी चार्जर भी दिया गया है। यह अब 6 कलर ऑप्शन में ऑफर की जाएगी।

कैसा है इंजन?

नई Royal Enfield Hunter 350 के इंजन में किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। इसमें पहले की तरह ही 349cc एयर-कूल्ड J-सीरीज मोटर इंजन मिलेगा, जो 20.2hp की पावर और 27Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को उसी स्लिक-शिफ्टिंग 5-स्पीड गियरबॉक्स से जुड़ा है जिसे अब स्लिप-असिस्ट क्लच के साथ जोड़ा गया है।

कितनी बढ़ी कीमत?

नई Royal Enfield Hunter 350 के बेस वेरिएंट की कीमत को पहली की तरह ही रखा गया है। इसके बेस वेरिएंट की एक्स-शोरुम कीमत 1.50 लाख रुपये, मिड-स्पेक वेरिएंट की एक्स-शोरुम कीमत 1.77 लाख रुपये और टॉप वेरिएंट की एक्स-शोरुम कीमत 1.82 लाख रुपये है। इसके टॉप वेरिएंट की कीमत में पुराने मॉडल की तुलना में 5,000 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। वर्तमान में भ रतीय बाजार में Royal Enfield Hunter 350 का मुकाबला Honda CB350 RS and Jawa 42 जैसी मोटरासाइकिल से रहता है।

2025 एमजी विंडसर ईवी का बड़ा बैटरी पैक वेरिएंट जल्द होगा लॉन्च, 400km से ज्यादा मिलेगी रेंज

2025 एमजी विंडसर ईवी का बड़ा बैटरी वेरिएंट भारत में जल्द ही लॉन्च होने वाला है। इसे अगले महीने यानी मई में लॉन्च किया जा सकता है। इसे 50.6 kWh बैटरी पैक दिया जा सकता है जो फुल चार्ज होने के बाद करीब 400 किलोमीटर से ज्यादा की रेंज दे सकती है। वहीं इसे कई नए एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम फीचर्स से भी लैस किया जा सकता है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। मौजूदा MG Windsor EV को छोटे बैटरी पैक 38-kWh के साथ पेश की जाती है। इसका ARAI प्रमाणित रेंज 332 किलोमीटर है। वहीं, जल्द ही कंपनी इसे बड़े बैटरी पैक साथ भारत में लॉन्च करने वाली है। इसे बड़ा बैटरी पैक मिलने के बाद बिक्री में भी बढ़ोतरी देखने के लिए मिल सकती है। आइए जानते हैं कि MG Windsor EV में कितनी बड़ी बैटरी पैक मिल सकता है और यह भारत में कब लॉन्च होगी?

बड़े बैटरी पैक वाला नया वैरिएंट

कंपनी MG Windsor EV के बड़ी बैटरी वाला वेरिएंट लेकर आने वाली है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इसमें 50.6 kWh बैटरी पैक देखने के लिए मिल सकता है। यह बैटरी फुल चार्ज होने के बाद 460 किलोमीटर तक की रेंज दे सकती है। वहीं, भारतीय मानकों के अनुसार, बड़े बैटरी पैक के साथ इसकी रेंज करीब 400 किलोमीटर तक हो सकती है। जिसके बाद इसे एक बार चार्ज करने के बाद लंबी दूरी का सफर किया जा सकेगा। वहीं, बड़ी बैटरी वाले वेरिएंट को प्रति सप्ताह कम रिचार्ज करने की जरूरत पड़ेगी। बड़े बैटरी पैक वाले वैरिएंट के साथ प्रदर्शन पहलू अपरिवर्तित रहेंगे।

मिल सकते हैं ये भी फीचर्स

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, बड़ी बैटरी के साथ आने वाली नई Windsor में ADAS के नए फीचर्स के साथ पेश किया जा सकता है। इसके ADAS किट में ऑटोनोमस इमरजेंसी ब्रेकिंग, लेन कीपिंग असिस्ट, ट्रैफिक साइन रिकग्निशन, ब्लाइंड स्पॉट मॉनिटरिंग, अडैप्टिव क्रूज़ कंट्रोल और सराउंड व्यू मॉनिटरिंग जैसे फीचर्स को शामिल किया जा सकता है। मौजूदा Windsor में 6 एयरबैग, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल, 360 डिग्री कैमरा, हिल होल्ड कंट्रोल, पार्किंग सेंसर और टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम जैसी सुरक्षा सुविधाएं मिलती है।

6 महीनों में 20,000 Windsor की बिक्री

MG Windsor EV को बड़ा बैटरी पैक और ज्यादा सेफ्टी फीचर्स मिलने के बाद इसकी बिक्री में और भी बढ़ोतरी देखने के लिए मिल सकती है। हाल ही में 6 महीनों में विंडसर ईवी की 20,000 यूनिट की बिक्री करने का आंकड़ा पार किया है। इस आंकड़े को भारतीय बाजार में पार करना किसी भी इलेक्ट्रिक कार के लिए एक नया रिकॉर्ड है। मौजूदा विंडसर ईवी 14 लाख रुपये से 16 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में आती है। इसके बड़े बैटरी पैक वेरिएंट की कीमत इससे ज्यादा हो सकती है।

मर्सिडीज ने भारत में बंद की अपनी सबसे सस्ती लग्जरी 7-सीटर एसयूवी, डिस्कंटीन्यू का बताया ये कारण

परिवहन विशेष न्यूज

मर्सिडीज-बेंज जीएलबी की बिक्री को भारत में बंद कर दिया है। यह एक सबसे कॉम्पैक्ट 7-सीटर SUV होने के साथ ही सबसे सस्ती लग्जरी 7-सीटर SUV भी थी। कंपनी ने इसकी बिक्री को भारत में बंद करने के पीछे का कारण बताते हुए कहा कि GLB को भारत में लिमिटेड यूनिट्स के लिए लाई गई थी और उन सभी यूनिट की बिक्री हो गई चुकी है।

नई दिल्ली। मर्सिडीज-बेंज की सबसे कॉम्पैक्ट 7-सीटर SUV Mercedes-Benz GLB को भारतीय बाजार से हटा दिया है। इस प्रीमियम थ्री-रो SUV को दिसंबर 2022 में लॉन्च किया गया है, लेकिन अब इसे कंपनी अपनी भारत की वेबसाइट और लाइनअप से हटा दिया है। आइए जानते हैं कि Mercedes-Benz GLB किन बेहतरीन फीचर्स के साथ आती थी और इसे भारत में क्यों बंद किया गया है?

कैसी थी Mercedes-Benz GLB?

इसे GLA का ज्यादा प्रैक्टिकल वर्जन माना जाता था। इसमें तीसरी रो की सीटों को लगाने के लिए लंबाई को थोड़ा बढ़ाया गया था। इसे बॉक्सी लुक, सीधा स्टाइल और 7 लोगों के बैठने की सुविधा दी गई थी। इसे भारत में CBU के तौर पर मेक्सिको से इम्पोर्ट किया गया था, जिसकी वजह से यह थोड़ी महंगी थी। इसे भारत में तीन वेरिएंट में पेश किया जाता है।

GLB 200 Progressive Line: इस वेरिएंट को 1.3 लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन के साथ पेश किया जाता था, जो 163 PS पावर और 250 Nm टॉर्क जनरेट करता था। इसके इंजन को 7-स्पीड DCT गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया था।

GLB 220d Progressive Line: इसमें 2 लीटर डीजल इंजन दिया गया था, जो 190 PS की पावर और 400 Nm का टॉर्क जनरेट करता था। इसके इंजन को 8-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया था।

GLB 220d 4MATIC AMG Line: इसमें भी 2 लीटर डीजल इंजन मिलता था, लेकिन इसे स्पोर्टी डिजाइन, 19-इंच व्हील और अंदर-बाहर AMG लुक के साथ, साथ में 4MATIC ऑल-व्हील ड्राइव सिस्टम के साथ ऑफर किया जाता था।

कितनी थी कीमत?

Mercedes-Benz GLB को भारत में 63.8 लाख रुपये से लेकर से 69.8 लाख रुपये की कीमत में ऑफर किया जाता था। इसे भारत की सबसे सस्ती लग्जरी 7-सीटर SUV थी।

क्यों किया गया बंद?

इसे बंद करने को लेकर कंपनी का कहना है कि GLB को भारत में लिमिटेड यूनिट्स के लिए लाई गई थी। उन सभी यूनिट की बिक्री हो चुकी है और लोकल असेंबली की कोई योजना नहीं है, इसलिए फिलहाल इसकी नई खेप नहीं आ रही। वहीं, इसके बंद होने के पीछे का दूसरा कारण CBU इम्पोर्ट होने की वजह से यह महंगी पड़ती थी और कीमत पर लोग GLC या इलेक्ट्रिक EQB को खरीदना पसंद करना भी है।

मारुति अर्टिगा बनी सबसे ज्यादा बिकने वाली 7-सीटर कार, आराम से फिट हो जाती है पूरी फैमिली

परिवहन विशेष न्यूज

सबसे ज़्यादा बिकने वाली 7-सीटर कार MPV सेगमेंट में सबसे ज्यादा बिकने वाली कार Maruti Ertiga बनी है। यह मुकाम इसने लगातार 6वीं बार हासिल किया है। वित्तीय वर्ष 2025 में इसके 1.90 लाख से ज्यादा यूनिट्स की बिक्री हुई है। इस सेगमेंट में बिक्री में दूसरे नंबर पर Toyota Innova Hycross और Crysta और तीसरे नंबर Kia Carens ने हासिल किया है।

नई दिल्ली। भारतीय ऑटोमोबाइल बाजार में MPV यानी मल्टी पर्पज व्हीकल सेगमेंट की डिमांड लगातार बढ़ रही है। वित्तीय वर्ष 2025 की बिक्री में एक तरफ जहां MPV मॉडलों की बिक्री में बढ़ोतरी देखने के लिए मिली है। वहीं, कुछ गाड़ियों की बिक्री में गिरावट भी देखने के लिए मिली है। FY 2025 में Maruti Ertiga और Toyota Innova Hycross ने इस सेगमेंट में पहले की तरह ही अपना दबदबा बनाए रखा है। आइए जानते हैं कि किस कार की कितनी बिक्री हुई?

Maruti Ertiga

Maruti Ertiga एक बार फिर से सबसे ज्यादा बिकने वाली MPV बनी है। FY 2025 में कंपनी ने 1.90 लाख से ज्यादा यूनिट्स की बिक्री की है, जो पिछले वित्तीय वर्ष FY 24 से करीब 41,000 यूनिट्स ज्यादा है। यह 28 प्रतिशत की शानदार बढ़ोतरी को दिखाता है। यह काफी किफायती कीमत, शानदार माइलेज और प्रैक्टिकल डिजाइन के साथ आती है, जिसकी वजह से यह लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय बनी हुई है।

Toyota Innova Hycross और Crysta

FY 2025 में Toyota Innova Hycross और Crysta की मिलाकर 1 लाख से ज्यादा यूनिट्स की बिक्री हुई है। इस बिक्री से कंपनी को 9 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। Innova Crysta की विश्वसनीयता और Hycross के मॉडर्न फीचर्स की वजह से यह भी लोगों की बीच पॉपुलर कार बनी हुई है। दोनों ने ही अपने सेगमेंट में अपनी स्थिति को बनाए रखा है।

Kia Carens

MPVs सेगमेंट की गाड़ियों की बिक्री में Kia Carens ने तीसरा स्थान हासिल किया है। वित्तीय वर्ष 2025 में इसकी करीब 64,500 यूनिट्स की बिक्री हुई है, जो पिछले साल की तुलना में 2 प्रतिशत ज्यादा है। यह भारतीय ग्राहकों के बीच अपने स्पेसियस इंटीरियर और फीचर-लोडेड पैकेज की वजह से अपनी जगह बनाने में कामयाब रही है।

Maruti XL6 और Invicto

जहां एक तरफ कई मॉडल्स की बिक्री में बढ़ोतरी देखने के लिए मिली है, वहीं, Maruti की XL6 की बिक्री में बड़ी गिरावट देखने के लिए मिला है। प्रीमियम MPV की बिक्री में 18 प्रतिशत की गिरावट आई और कंपनी इसके केवल 37,000 से थोड़ी ज्यादा यूनिट्स की ही बिक्री कर पाई है। वहीं Maruti Invicto की बात करें तो यह MPV FY 2025 में 5,000 यूनिट्स की बिक्री का आंकड़ा तक पार नहीं कर पाई। वहीं, इसकी बिक्री में 8 प्रतिशत तक की गिरावट देखने के लिए मिला है।

स्मार्ट क्लासरूम - फायदे और नुकसान

विजय गर्ग

स्मार्ट क्लासरूम बेहतर सीखने और शिक्षण के उद्देश्य से तकनीकी उपकरणों के साथ बढ़ाया गया क्लासरूम है। उपलब्ध उपकरणों के आधार पर स्मार्ट कक्षाओं को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है:
बेसिक स्मार्ट क्लासेसः बेसिक स्मार्ट टेक्नोलॉजी वाले क्लासरूम में लैपटॉप या कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, डीवीडी या वीसीडी प्लेयर और व्यूइंग स्क्रीन आदि जैसे गैजेट्स शामिल हैं। इंटरमीडिएट स्मार्ट क्लासेसः इंटरमीडिएट स्मार्ट क्लासरूम बुनियादी प्रौद्योगिकी स्मार्ट कक्षाओं से एक कदम आगे हैं। इनमें लैपटॉप, प्रोजेक्टर, स्क्रीन और डीवीडी या वीसीडी प्लेयर आदि के अलावा कंट्रोल पैनल के साथ स्मार्ट पोडियम जैसे गैजेट्स शामिल हैं। उन्नत स्मार्ट कक्षाएंः उन्नत स्मार्ट कक्षाओं में एक बुनियादी या मध्यवर्ती स्मार्ट कक्षा के सभी गैजेट हैं, लेकिन उनकी विशेषताएं बहुत उन्नत हैं, यानी वे नवीनतम तकनीक का उपयोग करते हैं। स्मार्ट क्लासरूम में स्थापित उपकरण क्या हैं? अधिकांश स्मार्ट कक्षाओं में स्थापित उपकरण हैं:
कंप्यूटर या लैपटॉपः एक कंप्यूटर या लैपटॉप एक स्मार्ट कक्षा की एक बुनियादी और आवश्यक आवश्यकता है। चाक या मार्कर के साथ बोर्ड पर लिखने के बजाय, शिक्षण प्रक्रिया एक स्मार्ट कक्षा में प्रस्तुति या छवियों या मल्टीमीडिया द्वारा की जाती है। प्रोजेक्टरः यह एक ऑप्टिकल डिवाइस है। यह एक स्क्रीन पर स्टेशनरी या चलती वस्तुओं को प्रोजेक्ट करता है। वे पारदर्शी लेंस के माध्यम से या लेजर द्वारा प्रकाश को चमकाकर एक छवि बनाते हैं। स्क्रीनः यह एक सतह है जिसका उपयोग प्रोजेक्टर द्वारा अनुमानित छवियों को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। स्क्रीन कठोर दीवार पर चढ़कर स्क्रीन, स्क्रीन नीचे खींच, फिक्स्ड फ्रेम स्क्रीन, इलेक्ट्रिकल स्क्रीन, स्विचेबल प्रोजेक्शन स्क्रीन या मोबाइल स्क्रीन हो सकती हैं। माइक्रोफोनः इसे आम तौर पर माइक या माइक कहा जाता है। यह एक उपकरण है जो ऑडियो सिग्नल को विद्युत संकेतों में परिवर्तित करता है। इन संकेतों को तब प्रेषित, प्रवर्धित या रिकॉर्ड किया जाता है। एम्पलीफायर और स्पीकरः ये इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हैं जिनका उपयोग ध्वनि की मात्रा बढ़ाने के लिए किया जाता है। पोडियमः यह आमतौर पर लकड़ी से बना एक मंच है जो उस पर खड़े व्यक्ति को उठाता है ताकि वह सभी दर्शकों के लिए दृश्य बन जाए। दस्तावेज़ कैमराः उन्हें दृश्य प्रस्तुतकर्ता, विजुअलाइज़र, डिजिटल ओवरहेड्स भी कहा जाता है। उनका उपयोग बड़े दर्शकों के लिए एक वस्तु प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। एक दस्तावेज़ कैमरा दो आयामी और साथ ही एक त्रि-आयामी वस्तु की छवियों को बढ़ाता है और प्रोजेक्ट करता है। ऑब्जेक्ट को केवल दस्तावेज़ कैमरे के नीचे रखा गया है। कैमरा अपनी छवि लेता है और प्रोजेक्टर का उपयोग करके अपनी लाइव छवि बनाता है। स्मार्ट पोडियमः उन्हें स्मार्ट बोर्ड या स्मार्ट एलसीडी भी कहा जाता है। यह एक इंटरैक्टिव पेन डिस्प्ले है जिसे यूएसबी पोर्ट या आरजीबी पोर्ट के माध्यम से बाहरी रूप से कंप्यूटर या लैपटॉप से जोड़ा जा सकता है। इसे डिजिटल इनकमिंग की सुविधा के साथ बाहरी मॉनिटर कहा जा सकता है। एक स्मार्ट पोडियम के साथ, हम दस्तावेज़, प्रस्तुतियाँ, मल्टीमीडिया फ़ाइलें खोल सकते हैं और उन पर डिजिटल पेन से लिख सकते हैं। हम अपना काम भी बचा सकते हैं। डीवीडी या वीसीडी प्लेयरः इंटरनेट पर बड़ी संख्या में वीडियो उपलब्ध हैं लेकिन फिर भी वीसीडी या डीवीडी प्लेयर की आवश्यकता है क्योंकि कुछ वीडियो हैं जिनमें कॉपीराइट है और उन्हें खरीदना होगा। ये अक्सर डीवीडी या सीडी के रूप में होते हैं। ओवरहेड प्रोजेक्टरः यह एक उपकरण है जिसका उपयोग स्क्रीन पर अपने आधार पर रखी गई पारदर्शी एसीटेट शीट की बढ़ी हुई छवियों को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। यह उपकरण कुछ साल पहले बहुत प्रसिद्ध था, लेकिन अब इसे कंप्यूटर आधारित प्रोजेक्टर द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है। स्मार्ट कक्षाओं के लाभ स्मार्ट कक्षा के कई फायदे हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:
ऑनलाइन संसाधनों तक पहुंचः एक स्मार्ट कक्षा में, शिक्षक छात्रों की बेहतर समझ के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर सकता है। हर विषय के लिए, इंटरनेट पर कई संसाधन उपलब्ध हैं जिन्हें शिक्षकों के साथ-साथ किसी भी समय छात्रों द्वारा स्मार्ट कक्षा में एक्सेस किया जा सकता है। इंटरनेट सीखने की प्रक्रिया में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। आज के छात्र हर चीज के बारे में जानने के लिए उत्सुक हैं। वे कक्षा में चल रहे विषय के बारे में अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। यह पुस्तकों की एक सीमा है। किताबें केवल सिलेबस प्रिंट करती हैं। जो लोग पाठ्यक्रम से परे सीखना चाहते हैं, उनके लिए इंटरनेट एक बहुत ही उपयोगी उपकरण है। सिलेबस के लिए भी इंटरनेट पर उपलब्ध संसाधन काफी मददगार होते हैं। नोट्स के लिए डिजिटल माध्यमः एक नियमित कक्षा में, शिक्षक बोर्ड पर लिखता है और छात्र इसे अपनी नोटबुक में नोट करते हैं। शिक्षण की इस पद्धति में, छात्र के दिमाग को दो दिशाओं में मोड़ दिया जाता है, एक शिक्षक और समझ को सुन रहा है और दूसरा शिक्षक के संदर्भ के लिए नोट्स लिख रहा है या बना रहा है। इस तरह, छात्र विषय को ठीक से नहीं समझते हैं या भ्रमित हो जाते हैं या कभी-कभी भी, वे कुछ भी नहीं सुनते हैं और सिर्फ नोट्स बनाते हैं। यह शिक्षण प्रक्रिया में बहुत सुस्त दृष्टिकोण है। लेकिन स्मार्ट क्लासरूम में ऐसा नहीं है। एक स्मार्ट कक्षा में, नोटों के लिए एक डिजिटल दृष्टिकोण है। शिक्षक, बोर्ड पर लिखने के बजाय, PowerPoint प्रस्तुति, शब्द दस्तावेज़, चित्र, वीडियो और ऑडियो का उपयोग करने वाले शिक्षक। ये संसाधन छात्रों को पेन ड्राइव, सीडी में दिए जाते हैं, या उन्हें ईमेल किया जाता है। इस तरह, छात्रों को नोट्स बनाने के लिए नहीं लिखना पड़ता है। नोट्स उन्हें प्रदान किए जाते हैं और वे व्याख्यान के लिए अपनी पूरी एकाग्रता समर्पित कर सकते हैं। अनुपस्थित लोगों के लिए लाभप्रदः यदि कोई छात्र जो नियमित कक्षा में पढ़ता है, वह एक दिन के लिए अनुपस्थित रहता है, तो उसके लिए उन कक्षाओं के सभी नोटों को इकट्ठा करना मुश्किल हो जाता है जो वह चूक गया था। साथ ही, अनुपस्थित रहने वाले छात्रों को पिछले विषयों की व्याख्या करना शिक्षक के लिए मुश्किल हो जाता है। छात्र फिर एक शॉर्टकट विधि लेते हैं और नोट्स को अन्य छात्रों से फोटोकॉपी करवाते हैं। इस तरह, छात्रों को उन कक्षाओं से कुछ भी समझ में नहीं आता है जो वह चूक गए थे। एक स्मार्ट कक्षा में, व्याख्यान दर्ज किए जाते हैं। जब भी कोई छात्र अनुपस्थित होता है तो वह कभी भी रिकॉर्ड किए गए व्याख्यान को देख सकता है। ये रिकॉर्ड किए गए व्याख्यान इंटरनेट पर भी अपलोड किए जाते हैं जिन्हें छात्रों द्वारा कभी भी लॉगिन आईडी और पासवर्ड द्वारा एक्सेस किया जा सकता है। नोट्स भी डिजिटल रूप में हैं, इसलिए उन्हें आसानी से छात्र को प्रदान किया जा सकता है। समझने में आसानीः पाठ्यक्रम में कई विषय हैं जिन्हें समझना बहुत मुश्किल है। उन्हें सिर्फ चाक और ब्लैक ब्लैकबोर्ड का उपयोग करके नहीं पढ़ाया जा सकता है। उन्हें एक इंटरैक्टिव शिक्षण दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। स्मार्ट कक्षाओं के साथ, शिक्षक छात्रों को उस विषय को पढ़ाने के लिए मल्टीमीडिया का उपयोग कर सकता है। छात्र जो सुनते हैं, उसके बजाय वे जो देखते हैं उससे अधिक सीखते हैं। इसलिए छात्र स्मार्ट कक्षा में सभी कठिन विषयों को आसानी से और प्रभावी ढंग से समझते हैं। लर्निंग आनंददायक बनाता हैः यदि हम नियमित कक्षा में जाते हैं और देखते हैं, तो छात्र बहुत नींद महसूस कर रहे हैं। कुछ छात्र शिक्षक की बात भी नहीं सुन रहे हैं। वे अपने दोस्तों के साथ बात करने में व्यस्त हैं। संक्षेप में, कक्षा उनके लिए बहुत उबाऊ हो जाती है। लेकिन स्मार्ट क्लासरूम में ऐसा नहीं है। कक्षा में स्मार्ट तकनीक का उपयोग कक्षा को एक मजेदार कमरा बनाता है। कक्षा छात्रों के लिए दिलचस्प और सुखद हो जाती है। किसी भी छात्र को नींद नहीं आती। यह सीखने को एक मजेदार प्रक्रिया बनाता है। जो छात्र स्कूलों में जाना पसंद नहीं करते हैं, वे भी स्कूल का आनंद लेने लगते हैं। शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधारः यह अक्सर देखा जाता है कि स्मार्ट क्लास में पढ़ने वाले छात्रों को नियमित कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में बेहतर परिणाम मिलता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि स्मार्ट कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों में समझ की क्षमता अन्य छात्रों की तुलना में अधिक है। शिक्षण के लिए कक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग से छात्रों की समझ बढ़ जाती है। विषय स्पष्ट हो जाता है और विषय का आधार मजबूत हो जाता है। जाहिर है, विषय की बेहतर पकड़ वाले छात्र और विषय के मजबूत बुनियादी ज्ञान के साथ परीक्षा में अधिक स्कोर करेंगे।
संचारः एक स्मार्ट कक्षा में उपयोग की जाने वाली तकनीक कक्षा में ही वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग संभव बनाती है। इस तरह, छात्र उस व्यक्ति के साथ संवाद कर सकते हैं जो विषय का विशेषज्ञ है। स्मार्ट कक्षाओं की सुविधा वाले विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों में, अतिथि व्याख्यान साप्ताहिक रूप से आयोजित किए जाते हैं जिसमें छात्र आईआईटी और आईआईएम के प्रोफेसरों या अनुसंधान कार्य में लगे लोगों जैसे विशेषज्ञों के साथ संवाद कर सकते हैं। यह छात्रों को उनके विषयों के बारे में अतिरिक्त जानकारी प्रदान करता है जो पाठ्यपुस्तकों के दायरे से परे है। छात्रों को अपने विषयों से संबंधित चल रहे मुद्दों के बारे में पता चलता है। वे आगामी तकनीक और सिद्धांतों से परिचित हो जाते हैं। यह निकट भविष्य में उनके लिए बहुत फायदेमंद साबित होता है। स्वास्थ्य के अनुकूलः कुछ शिक्षक हैं जो चाक या मार्करों के उपयोग के प्रति बहुत संवेदनशील हैं। उनमें से कुछ चाक के साथ लिखने पर त्वचा की एलर्जी का अनुभव करते हैं और कुछ को चाक की धूल से एलर्जी होती है। कुछ शिक्षक मार्कर में उपयोग की जाने वाली स्याही की गंध के साथ सहज नहीं हैं। इन शिक्षकों के लिए स्मार्ट क्लासरूम लाभप्रद हैं। स्मार्ट कक्षा में मार्कर या चाक का कोई या बहुत कम उपयोग नहीं होता है। शिक्षण डिजिटल या ई-संसाधनों का उपयोग करके किया जाता है। इसलिए, एलर्जी की कोई संभावना नहीं है। स्मार्ट कक्षाओं के नुकसानः स्मार्ट कक्षाओं के इतने सारे फायदों के साथ, कुछ नुकसान भी हैं जो स्मार्ट तकनीक के उपयोग को काफी सीमित बनाते हैं। वो हैं:
महंगाः स्मार्ट कक्षाओं में उपयोग की जाने वाली तकनीक बहुत महंगी है। सभी स्कूल इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। यहां तक कि जो स्कूल इसे खरीद सकते हैं, वे इसे खरीदने के बाद बजट पर पहुंच जाते हैं। कुछ स्कूल अक्सर स्मार्ट तकनीक खरीदने के लिए ऋण लेते हैं। नतीजतन, उपकरणों की लागत को पूरा करने के लिए स्कूलों की फीस बढ़ा दी जाती है। स्मार्ट कक्षाओं वाले स्कूलों की प्रवेश फीस भी बढ़ जाती है। सभी माता-पिता अपने बच्चों के लिए इतनी महंगी शिक्षा नहीं दे सकते। हर बच्चे को स्मार्ट कक्षाओं तक पहुंच नहीं मिल सकती है। कुशल संकायः सभी शिक्षक शिक्षण के लिए स्मार्ट तकनीक का उपयोग नहीं कर सकते। शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए इससे पहले कि वे एक स्मार्ट कक्षा में शिक्षण शुरू कर सकते हैं। शिक्षकों को प्रभावी तरीके से प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। उन्हें गैजेट्स में दोषों को संभालने के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है। इस प्रशिक्षण में भी बहुत खर्च होता है। यदि शिक्षकों को ठीक से प्रशिक्षित नहीं किया जाता है तो प्रौद्योगिकी सहायक बनने के बजाय एक परेशान करने वाला कारक बन जाएगी। रखरखावः सभी इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की तरह, स्मार्ट कक्षाओं में उपयोग किए जाने वाले गैजेट्स को उचित रखरखाव की आवश्यकता होती है। जिन कमरों में ये गैजेट्स लगाए जाते हैं, उन्हें धूल के कणों से मुक्त होना चाहिए और सीधे धूप का सामना नहीं करना चाहिए अन्यथा गैजेट्स दोषपूर्ण हो जाएंगे। इसके अलावा, ये उपकरण आसपास में बहुत अधिक गर्मी छोड़ते हैं, इसलिए कमरों को वातानुकूलित किया जाना चाहिए। उपकरणों के रखरखाव के लिए तकनीकी कर्मचारियों को नियुक्त किया जाना है। यह आगे लागत में जोड़ता है। उपकरणों को भी नियमित रूप से अपडेट करने की आवश्यकता है जो बहुत समय लेने वाली प्रक्रिया है। तकनीकी दोषः सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में दोष का खतरा होता है। यदि उपकरण एक दिन काम नहीं करते हैं, तो दिन को बेकार माना जाता है। उन्हें अपने उचित कामकाज की स्थिति में वापस आने के लिए बहुत समय चाहिए। उस दिन कोई शिक्षण नहीं किया जा सकता है। इस मामले में, शिक्षक को हमेशा ब्लैकबोर्ड का उपयोग करने वाले शिक्षण के लिए एक वैकल्पिक पद्धति के लिए तैयार रहना चाहिए। लेकिन यह शिक्षकों के साथ-साथ स्मार्ट कक्षाओं में नियमित रूप से भाग लेने वाले छात्रों के लिए एक बहुत ही सुस्त अनुभव होगा। शिक्षकों का कार्यभार भी बढ़ाया जाता है क्योंकि उन्हें शिक्षण के दो अलग-अलग तरीकों के अनुसार विषय तैयार करना होता है। निष्कर्ष स्मार्ट क्लासरूम पढ़ाई में छात्रों की रुचि बढ़ाते हैं। छात्र अधिक सीखते हैं। इतने सारे फायदे और कुछ नुकसान के साथ, स्मार्ट कक्षाओं को अभी भी छात्रों के लिए अच्छा माना जा सकता है। कुछ नुकसान के कारण, हम स्मार्ट कक्षाओं के लाभों को अनदेखा नहीं कर सकते। सभी नुकसानों में शामिल लागत के नुकसान को छोड़कर एक समाधान है। लेकिन आने वाले कुछ दशकों में, प्रौद्योगिकी में वृद्धि निश्चित रूप से इन उपकरणों की लागत को कुछ हद तक कम कर देगी। इसके अलावा, कंप्यूटर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में नए आविष्कार निश्चित रूप से शिक्षण और सीखने को और भी बेहतर बनाएंगे। सरकारी स्कूलों को अपनी कक्षाओं में स्मार्ट तकनीक भी नियोजित करनी चाहिए ताकि सभी छात्रों के पास स्मार्ट कक्षाओं तक पहुंच हो सके।

कपास के धागों में उलझे किसान

विजय गर्ग

भारत कभी विश्व में कपास का एक प्रमुख उत्पादक और निर्यातक था। मगर आज कपास उत्पादन गंभीर संकट से जूझ रहा है। यह संकट न केवल किसानों की आजीविका पर खतरा पैदा कर रहा है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था और वस्त्र उद्योग पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। कपास भारत की महत्त्वपूर्ण नकदी फसल है, जिसका देश की कृषि अर्थव्यवस्था में अहम योगदान है। यह लाखों किसानों और कृषि श्रमिकों के लिए आय का मुख्य स्रोत है। इसके अलावा, यह भारतीय वस्त्र उद्योग की रीढ़ की हड्डी है, जो देश के सबसे बड़े रोजगार सृजन क्षेत्रों में से एक है। सदियों से, भारत ने उच्च गुणवत्ता वाले कपास का उत्पादन किया है और वैश्विक बाजार में प्रमुख स्थान बनाए रखा है। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय कपास उत्पादन कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिससे इसके में गिरावट आई है और किसानों को कीटों का प्रकोप, मिट्टी की उर्वरता में भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है कमी, पानी की कमी, बढ़ती लागत और बाजार की अस्थिरता जैसे कारकों ने मिल कर इस संकट को जन्म दिया है। इस संकट का सीधा असर किसानों की आर्थिक स्थिति, वस्त्र उद्योग में प्रतिस्पर्धा और अंततः देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन भारतीय कृषि के लिए बड़ा खतरा बन गया है। कपास उत्पादन भी इससे अछूता नहीं है। अनियमित वर्षा, अत्यधिक गर्मी, सूखा और बाढ़ से कपास बुरी तरह प्रभावित हो रही है। लंबे समय तक सूखे के कारण सिंचाई के लिए पानी की कमी हो जाती है, जबकि अत्यधिक वर्षा और बाढ़ से फसलें नष्ट हो जाती हैं। बदलते मौसम के कारण कीटों और बीमारियों का प्रकोप भी बढ़ गया है, जिससे फसल की पैदावार र गुणवत्ता दोनों प्रभावित हो रही हैं। दरअसल, कपास की फसल विभिन्न के कीटों और र बीमारियों के के प्रति संवेदनशील होती है। इनमें सबसे प्रमुख गुलाबी 'बालवर्म' है, जिसने हाल के वर्षों में देश के कई कपार उत्पादक क्षेत्रों क्षेत्रों में भारी तबाही मचाई है। बीटी कपास, जिसे 'बालवर्म' के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने के लिए जेनेटिक रूप से संशोधित किया गया था, शुरू में में काफी सफल रहा, लेकिन धीरे-धीरे कौटों ने इसके प्रति भी प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली है। इसके अलावा, सफेद मक्खियों और अन्य बीमारियों ने भी कपास की फसल को नुकसान पहुंचाया है, जिससे किसानों को भारी आर्थिक नुकसान हुआ है।

लगातार एक ही प्रकार र की फसल उगाने और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग के कारण देश के कई कपास उत्पादक क्षेत्रों में में मिट्टी की उर्वरता कम हो गई है। मिट्टी में जैविक कार्बन की कमी हो गई है, र जिससे मिट्टी की जल धारण क्षमता र पोषक तत्त्वों बनाए रखने की क्षमता कम हो गई है। इसके परिणामस्वरूप, कपास की पैदावार में गिरावट आई है और उत्पादन लागत बढ़ गई है। कपास पानी की खपत वाली फसल है। भारत के कई कपास उत्पादक क्षेत्र पहले से ही पानी की कमी से जूझ रहे से हैं। भूजल स्तर में गिरावट और सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता में कमी के कारण किसानों को कपास की खेती करने में कठिनाई हो रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण सूखे की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है।

कपास की खेती की लागत पिछले कुछ वर्षों में काफी बढ़ गई है। बीज, उर्वरक, कीटनाशक और श्रम की लागत में वृद्धि के कारण किसानों के लिए कपास की खेती करना महंगा हो गया है। इसके अलावा, कीटों और बीमारियों के प्रकोप के कारण किसानों को अतिरिक्त कीटनाशक खरीदने और उनका उपयोग करने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जिससे उत्पादन लागत और बढ़ जाती है। कपास की कीमतों में भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है, जिससे किसानों के लिए अपनी उपज की बिक्री से स्थिर आय प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है। कई बार किसानों को अपनी फसल को लागत से भी कम कीमत पर बेचने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जिससे उन्हें भारी नुकसान होता है। सरकारी समर्थन मूल्य (एमएसपी) की व्यवस्था भी सभी किसानों तक प्रभावी रूप से नहीं पहुंच पाती है। कई क्षेत्रों में किसानों को नकली या निम्न गुणवत्ता वाले बीजों का सामना करना पड़ता है, जिससे फसल की पैदावार और गुणवत्ता प्रभावित होती है। बढ़ती लागत के कारण कई किसान कर्ज के जाल में फंस गए हैं।

कपास उत्पादन संकट से निपटने तथा कपास किसानों और वस्त्र उद्योग भविष्य सुरक्षित करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। । रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग को कम करने और मिट्टी स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना महत्त्वपूर्ण है। जैविक खेती, प्राकृतिक खेती और एकीकृत कीट प्रबंधन जैसी तकनीक अपनाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। 1 कपास की खेती में पानी के 5 कुशल उपयोग को बढ़ावा देने के लिए 'स्प्रिंकलर सिंचाई' जैसी आधुनिक सिंचाई तकनीकों को अपनाने के लिए किसानों को वित्तीय सहायता और तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया जाना ।चाहिए। जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन के उपायों क को भी प्रोत्साहित किया जाना । कीटों और बीमा बीमारियों के प्रकोप से से निपटने के लिए अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाने की की आवश्यकता है।

भारत में कपास उत्पादन का संकट गंभीर चुनौती है, जिसका सामना देश के किसान, वस्त्र उद्योग और अर्थव्यवस्था कर रहे हैं। इस संकट का किसानों की आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। हालांकि, सही नीतियों और रणनीतियों को अपना कर इस संकट से निपटा जा सकता है। टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना, देना, पानी के कुशल उपयोग को प्रोत्साहित करना, कीटों और बीमारियों के प्रबंधन के लिए प्रभावी रणनीतियां विकसित करना, मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करना, बाजार समर्थन सुनिश्चित करना और किसानों को शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना कुछ महत्त्वपूर्ण कदम हैं, जो कपास उत्पादन को फिर से पटरी पर लाने में मदद कर सकते हैं।

सहयोग में संतुलन

विजय गर्ग

समाज में यह धारणा प्रचलित है कि जो व्यक्ति मांगता है, वह सक्षम नहीं होता। हमें यह डर रहता है कि अगर हमने किसी से मदद मांगी तो कहीं लोग हमें कमजोर न समझ 1 वास्तव में जरूरत के वक्त मांगना कोई कमजोरी नहीं है, बल्कि यह आत्मविकास की दिशा में एक सशक्त कदम है। यह न केवल हमारी विनम्रता और स्वीकार्यता को दर्शाता है, बल्कि हमारे सीखने और आगे बढ़ने की प्रक्रिया को भी मजबूती प्रदान करता है। इंसान सामाजिक प्राणी है और सामाजिकता के मूल में सहयोग का भाव होता है। कोई भी व्यक्ति जीवन की हर समस्या का समाधान खुद नहीं कर सकता इसलिए समय-समय पर सहायता देने के साथ-साथ सहायता मांगना, मार्गदर्शन लेना या अपनी जरूरतें स्पष्ट करना जीवन का एक भाग है। हर क्षेत्र में ऐसा समय आता है, जब मदद मांगना जरूरी हो जाता है, चाहे वह शिक्षा हो, कार्यक्षेत्र हो, संबंध हों या भावनात्मक स्थिति । अगर थामस एडीसन ने अपने समय में अन्य वैज्ञानिकों से सलाह लेना आवश्यक न समझा होता, तो क्या वे अपने आविष्कारों में सफलता प्राप्त कर पाते ? या अब्राहम लिंकन ने अपने राजनीतिक जीवन में अपने सलाहकारों से मार्गदर्शन लेने में संकोच किया होता, तो क्या वे अमेरिका के सबसे प्रभावशाली राष्ट्रपतियों में गिने जाते ? इतिहास गवाह है कि जो लोग समय पर सही व्यक्ति से उचित सहयोग मांगते हैं, वे ही अपने लक्ष्य तक पहुंच पाते हैं।

जब हम किसी से कुछ मांगते हैं, तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी बात स्पष्ट हो कि क्या चाहिए, क्यों चाहिए और किसके लिए चाहिए। मांगना तभी प्रभावशाली बनता है, जब उसमें स्पष्टता के साथ ही आत्मसम्मान का भी संतुलन हो । अस्पष्ट मांगें भ्रम उत्पन्न करती हैं और सामने वाले को असहज बनाती हैं। उदाहरण के लिए अगर कोई छात्र अपने शिक्षक से कहे कि मुझे आपकी मदद चाहिए, तो यह वाक्य अधूरा है। लेकिन अगर वही छात्र कहे कि सर, मुझे गणित के इस अध्याय में समस्या हो रही है, क्या आप मुझे समझा सकते हैं, तो यह मांग स्पष्ट, विनम्र और उद्देश्यपूर्ण होगी। मांगने के साथ-साथ विनम्रता और कृतज्ञता भी आवश्यक है।

जब कोई हमारी मदद करता है तो उसे धन्यवाद देना हमारे संस्कारों और सामाजिकता का हिस्सा होना चाहिए। 'धन्यवाद' कहना केवल औपचारिकता नहीं है । यह उस व्यक्ति के प्रति हमारे सम्मान को दर्शाता है। इससे सामने वाला व्यक्ति भविष्य में भी सहायता के लिए तैयार रहेगा। मगर यह भी जरूरी है कि हम आत्मनिर्भरता और मांगने के बीच का संतुलन बनाए रखें। बार-बार छोटी-छोटी बातों के लिए दूसरों पर निर्भर रहना हमारी छवि को कमजोर कर सकता है। इसलिए बहुत ज्यादा आवश्यकता होने पर ही मदद मांगना चाहिए। खुद को सक्षम बनाना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। यह प्रक्रिया हमारे आत्मविश्वास को भी बढ़ाती है और हमें स्वतंत्र बनाती है ।

कई बार लोग इसलिए मदद मांगने से डरते हैं कि उन्हें लगता है कि अगर उन्होंने मदद मांगी और सामने वाले ने मना कर दिया तो वे अपमानित महसूस करेंगे या कहीं उनका मजाक न बनाया जाए। इस डर से निपटने के लिए यह समझना आवश्यक है कि अस्वीकृति हमारी योग्यता का नहीं, बल्कि सामने वाले की परिस्थिति का संकेत हो सकती है। जरूरी नहीं कि वह व्यक्ति हमारी मदद नहीं करना चाहता। संभव है कि वह उस समय असमर्थ हो । मांगने की प्रक्रिया को सहज बनाने के लिए हम छोटे अनुरोधों से शुरुआत कर सकते हैं। इससे हमें आत्मविश्वास मिलता है और जब हमें सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है, तो हमारा डर कम होता है। जैसे दफ्तर में किसी सहकर्मी से काम में छोटी-सी मदद मांगना या घर में किसी सदस्य से थोड़ी सहायता लेना । धीरे-धीरे यह आदत बन जाती है और हम बड़े विषयों पर भी बिना झिझक बात कर पाते हैं। मांगना केवल संवाद नहीं, बल्कि आत्म- चर्चा का भी हिस्सा है। जब हम स्वयं से कहते हैं कि हमें अब सहायता की जरूरत है, तब यह आत्म-स्वीकृति का भाव हमारे भीतर मजबूती लाता है। सामूहिकता को महत्त्व देने वाली संस्कृतियों, जैसे भारत और जापान में लोग सामाजिक जुड़ाव और आपसी सहयोग को प्राथमिकता देते हैं, वहां सहायता मांगना सामान्य बात मानी जाती है और इसे रिश्तों को गहरा करने का माध्यम समझा जाता है। इसके विपरीत, अमेरिका और यूरोप जैसी व्यक्तिवादी संस्कृतियों में आत्मनिर्भरता को प्रमुखता दी जाती है, फिर भी वहां परामर्श लेना, नेटवर्किंग करना और सहयोगात्मक सोच को सकारात्मक रूप में लिया जाता है। कुल मिलाकर, अगर मांग सम्मानपूर्वक और समझदारी से की जाए, तो उसका असर हर संस्कृति में सकारात्मक होता है।

जब हम मदद मांगते हैं, तो हमारे पास नए दृष्टिकोण आते हैं। हम ऐसी बातों को समझ पाते हैं जो अकेले सोचने से शायद न समझ पाते। इसके अतिरिक्त, कई बार ऐसे अवसर बनते हैं जो हमें आगे बढ़ाते हैं । नए संपर्क, नए अनुभव और नए रास्ते खुलते हैं। यह हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाता है और एक परिपक्व सोच विकसित करता है। मांगने की प्रक्रिया तभी सार्थक होती है, जब हम स्वयं भी देने के लिए तत्पर हों। अगर हम केवल दूसरों से सहायता लेते रहें और जरूरत पड़ने पर पीछे हट जाएं, तो इससे जीवन का संतुलन प्रभावित होता है । दूसरों को कुछ देना केवल एक सामाजिक दायित्व नहीं है, बल्कि यह हमारी मानवता और संवेदनशीलता को दर्शाता है। जब हम किसी की मदद करते हैं, तो न केवल सामने वाले को राहत मिलती है, बल्कि हमें भी आंतरिक संतोष और खुशी की अनुभूति होती है।

भारत का स्टार्टअप उछाल: एक नया नवाचार शक्तिशाली

विजय गर्ग

दस साल से भी कम समय में, भारत एक नवोदित स्टार्टअप परिदृश्य से दुनिया के तीसरे सबसे बड़े स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में बदल गया है, केवल संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम के पीछे

केवल एक दशक में, भारत का स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र नवाचार, रोजगार और राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का एक शक्तिशाली चालक के रूप में उभरा है। एक नवजात स्टार्टअप दृश्य से, भारत दुनिया के सबसे गतिशील और तेजी से विस्तार वाले स्टार्टअप पारिस्थितिक तंत्र में से एक में विस्फोट हो गया है। संख्या एक नाटकीय कहानी बताती है, जहां 2016 में लगभग 500 सरकारी मान्यता प्राप्त स्टार्टअप से, गिनती 15 जनवरी 2025 तक 1.59 लाख से अधिक हो गई।

यह सिर्फ विकास नहीं है, बल्कि भारत के आर्थिक ढांचे में एक मौलिक बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे देश संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप हब बन गया है। 100 से अधिक यूनिकॉर्न की उपस्थिति इस जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर बनाए जा रहे पैमाने और मूल्य को दर्शाती है।

भारत का स्टार्टअप बूम, 2014 से 2025 की शुरुआत तक, केवल उद्यमशीलता की भावना का परिणाम नहीं है, बल्कि एक शक्तिशाली अभिसरण का परिणाम है - एक संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र का पोषण करने के लिए डिज़ाइन की गई सक्रिय सरकारी नीतियों के साथ युग्मित भारतीय उद्यमियों की ड्राइव।

यह उल्लेखनीय वृद्धि जानबूझकर नीति और जैविक नवाचार के बीच तालमेल पर प्रकाश डालती है, जो पूरे देश में छिपी क्षमता को उजागर करती है। यह दर्शाता है कि वैश्विक स्टार्टअप हब के रूप में भारत के उद्भव का मार्ग प्रशस्त करते हुए, कैसे केंद्रित प्रयासों ने विचारों को सफल व्यवसायों में बदल दिया है।

भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का घातीय विकास प्रक्षेपवक्र प्रमुख सरकारी कार्यक्रमों और दूरदर्शी नेतृत्व के रोलआउट के साथ सीधे मेल खाता है जिसने बाधाओं को दूर किया और सक्रिय रूप से नवाचार को बढ़ावा दिया। 2016 में शुरू की गई, इन पहलों ने एक संरचित ढांचा प्रदान किया जिसने उद्यमशीलता की वृद्धि को उत्प्रेरित किया। इस परिवर्तन के लिए धुरी जनवरी 2016 में स्टार्टअप इंडिया पहल का शुभारंभ था। एक प्रमुख कार्यक्रम के रूप में कल्पना की गई, इसका मुख्य उद्देश्य एक स्टार्टअप संस्कृति की खेती करना, एक मजबूत और समावेशी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना और मौलिक रूप से भारत को नौकरी चाहने वालों के बजाय नौकरी बनाने वालों के देश में बदलना था

भारत के दूरदर्शी नेतृत्व ने देश को नौकरी चाहने वालों से नौकरी प्रदाताओं में बदल दिया है, जो अपनी उद्यमशीलता की भावना और आत्मनिर्भर, नौकरी पैदा करने वाली अर्थव्यवस्था के निर्माण की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह सिर्फ एक नारा नहीं था; इसे सरलीकरण, धन और ऊष्मायन पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक व्यापक कार्य योजना द्वारा समर्थित किया गया था। इस ढांचे ने शुरुआती चरण के उपक्रमों को धन और नियामक चुनौतियों से उबरने में मदद करने के लिए कर छूट, सरलीकृत अनुपालन और वित्तीय सहायता की पेशकश की।

इसके साथ ही, सरकार ने 2016 में अटल इनोवेशन मिशन (AIM) की शुरुआत की, जिसने अटल टिंकरिंग लैब्स और अटल इनक्यूबेशन सेंटर जैसी पहल के माध्यम से नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा दिया। इन कार्यक्रमों ने न केवल युवा प्रतिभाओं का पोषण किया, बल्कि एक मजबूत बुनियादी ढांचा भी बनाया, जिसने प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा और विनिर्माण सहित विभिन्न क्षेत्रों में स्टार्टअप का समर्थन किया। रचनात्मकता और अनुसंधान के पोषण पर एआईएम के ध्यान ने पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने और भविष्य के लिए इसे तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2024 में, भारत सरकार ने केंद्रीय बजट में परी कर को समाप्त करके एक परिवर्तनकारी निर्णय लिया। 2012 में पेश किया गया, इस कर ने निवेशकों के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा के रूप में काम किया था, उचित बाजार मूल्य से ऊपर उठाई गई पूंजी पर लेवी लगाकर निवेश को हतोत्साहित करना, अक्सर महत्वपूर्ण चरणों में महत्वपूर्ण धन में बाधा डालना। इस कदम ने देश भर में स्टार्टअप्स के लिए विकास और अवसर को बढ़ावा देते हुए, अधिक निवेशक-अनुकूल वातावरण के लिए रास्ता साफ कर दिया है।

इस कर को हटाने को अधिक निवेशक-अनुकूल वातावरण बनाने की दिशा में एक प्रमुख कदम के रूप में मनाया गया है, स्टार्टअप को उन फंडिंग तक पहुंचने में मदद करता है जिनकी उन्हें स्केल और सफल होने की आवश्यकता होती है।

अन्य सुधारों के साथ-साथ परी कर को समाप्त करने का निर्णय, उद्यमिता को पनपने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम की वृद्धि केंद्रीकृत से बहुत दूर रही है। जबकि बेंगलुरु, हैदराबाद और गुरुग्राम जैसे पारंपरिक टेक हब महत्वपूर्ण हैं, एक ध्यान देने योग्य बदलाव हुआ है क्योंकि छोटे शहरों और कस्बों के उद्यमियों ने अपनी पहचान बनाना शुरू कर दिया है।

नवाचार के इस लोकतंत्रीकरण को सरकार द्वारा अधिक समावेशी स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के लिए धक्का देने की सुविधा दी गई है जो प्रतिभा के व्यापक पूल के लिए सुलभ है।

फिनटेक, हेल्थटेक और एग्रीटेक जैसे सेक्टर नवाचार के लिए हॉटस्पॉट के रूप में उभरे हैं, जिसमें अकेले 2022 में 1,300 से अधिक सक्रिय टेक स्टार्टअप जोड़े गए हैं। सरकार ने इन क्षेत्रों के भीतर विकास को बढ़ावा देने, निवेश को प्रोत्साहित करने और महत्वपूर्ण सामाजिक जरूरतों को पूरा करने वाले स्टार्टअप को विशेष सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उदाहरण के लिए, फिनटेक स्टार्टअप्स ने वित्तीय सेवाओं तक पहुंच में क्रांति ला दी है, हेल्थटेक उपक्रमों ने स्वास्थ्य सेवा में सुधार किया है, और एग्रीटेक नवाचारों ने कृषि क्षेत्र में दक्षता ला दी है। धन मंदी और फ्रीज को काम पर रखने जैसी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, पारिस्थितिकी तंत्र ने लचीलापन का प्रदर्शन किया। 2023 में, भारत ने उभरते क्षेत्रों में 400 सहित 1,000 से अधिक स्टार्टअप जोड़े, जो इस क्षेत्र की अनुकूलनशीलता को रेखांकित करते हैं।

प्राचीन से आधुनिक भारत तक हमारे राष्ट्र की यात्रा उल्लेखनीय उपलब्धियों और मील के पत्थर की गाथा है। इसकी शुरुआत महान संतों के ज्ञान से होती है, स्वामी विवेकानंद और उपनिषदों की गहन शिक्षाओं के माध्यम से आगे बढ़ती है, और आधुनिक नवाचार जैसे उपग्रह (उपग्रह) और पारंपरिक कुंभ मेले से लेकर स्टार्टअप कुंभ मेले तक विकास की प्रगति तक फैली हुई है। इस यात्रा का प्रत्येक अध्याय हमारे देश की अथक परिश्रम, अभूतपूर्व नवाचार और अटूट आत्मनिर्भरता के लिए एक शक्तिशाली वसीयतनामा के रूप में खड़ा है।

भारत अब टिकाऊ, अभिनव और संपन्न स्टार्टअप को बढ़ावा देने में एक वैश्विक नेता के रूप में तेजी से उभर रहा है। जैसा कि 16 जनवरी 2025 को प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी) द्वारा रिपोर्ट किया गया है, देश स्टार्टअप इंडिया के नौ वर्षों की याद दिलाता है, जो 2016 में शुरू की गई एक खेल-बदलती पहल है। राष्ट्रीय स्टार्टअप दिवस भारत की उद्यमशीलता यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शुरू किया गया स्टार्टअप इंडिया राष्ट्रीय नवाचार और विकास का एक आधार बन गया है। इसने देश भर में उद्यमशीलता की भावना को चैंपियन बनाया है, रचनात्मकता और नवाचार का पता लगाने के लिए हजारों को सशक्त बनाया है। नतीजतन, भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र बन गया है।

भारत की स्टार्टअप कहानी न्यू इंडिया की अदम्य उद्यमी भावना का एक वसीयतनामा है। 2016 के बाद से, हमारी दृष्टि नवाचार को चलाने, वित्तीय सहायता प्रदान करने और नवोदित व्यवसायों का पोषण करने की रही है। केवल एक दशक के तहत, विचार उद्योग के दिग्गजों में विकसित हुए हैं, और सपने मूर्त वास्तविकताएं बन गए हैं।

आज, भारत लंबा खड़ा है, न केवल प्रौद्योगिकी के लिए एक केंद्र के रूप में, बल्कि विविध क्षेत्रों में प्रगति के एक बीकन के रूप में। टीकाकरण जैसे क्षेत्रों में हमारी उपलब्धियां हमारे वैज्ञानिक कौशल और सामाजिक लचीलापन को दर्शाती हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम (दुनिया एक परिवार है) और ना फलेशु कडाचना (कार्रवाई पर ध्यान दें, परिणाम नहीं) के सिद्धांतों से प्रेरित होकर, भारत अपने मूल में मूल्यों के साथ बढ़ता जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ₹विकास भी, विराट भी₹ (विकास और विरासत, हाथ में हाथ) के लिए धक्का आज के भारत को परिभाषित करता है-जो आधुनिक और आकांक्षी है, फिर भी अपनी समृद्ध परंपराओं और संस्कृति में गहराई से निहित है । भारत की कहानी केवल आर्थिक विस्तार में से एक नहीं है, बल्कि उद्देश्य, जुनून और प्रगति की

मणिभाई देसाई: गाँव की मिट्टी से गढ़ा एक गांधीवादी जीवन

[गाँवों के गांधीवादी प्रहरी मणिभाई देसाई: नारे नहीं, परिवर्तन की नि:शब्द क्रांति]

जब कोई इंसान अपना पूरा जीवन दूसरों की भलाई के लिए समर्पित कर देता है, तो वह सिर्फ़ एक नाम नहीं रहता—वह एक विचार बन जाता है, एक ऐसी चिंगारी, जो समय की सबसे तेज़ आंधियों में भी नहीं बुझती। मणिभाई भीमभाई देसाई ऐसी ही शख्सियत थे, जिन्होंने गांधीवाद को न केवल अपने दिल में उतारा, बल्कि उसे धरती पर जीकर दिखाया। उनका जीवन एक आंदोलन था—ग्रामीण भारत को सशक्त करने का, सामाजिक चेतना को जगाने का, और सेवा को सच्चे अर्थों में परिभाषित करने का। उनकी जयंती पर हमें न केवल उनके अमूल्य योगदान को स्मरण करना है, बल्कि उनके उस अटूट जज़्बे को अपनाना है, जो आज भी हमें भारत की जड़ों को मज़बूत करने की राह दिखाता है।

27 अप्रैल 1920 को गुजरात की मिट्टी में जन्मे मणिभाई का बचपन संवेदनशीलता और जिज्ञासा की गहरी छाप लिए था। उनके मन में समाज के प्रति एक अनकहा लगाव था, जो युवावस्था में और गहरा गया। जब देश स्वतंत्रता संग्राम की आग में तप रहा था, तब मणिभाई ने महात्मा गांधी के विचारों को अपनी मंज़िल बनाया। सेवाग्राम आश्रम में गांधीजी के सान्निध्य में उन्होंने चरखे की लय में आत्मनिर्भरता का सबक सीखा। यहीं से उनके जीवन का मकसद साफ़ हुआ—गाँवों को सशक्त करना, गरीबों की आवाज़ बनना, और भारत की आत्मा को फिर से जगाना। गांधीजी ने उन्हें सिखाया कि भारत की असली ताकत उसकी शहरों की चमक में नहीं, बल्कि गाँवों की मिट्टी में छिपी है। मणिभाई ने इस सत्य को न सिर्फ़ समझा, बल्कि इसे अपने जीवन का आधार बनाया।

आज़ादी के बाद, जब देश की नज़रें शहरों की चकाचौंध पर टिक गई थीं और गाँव उपेक्षा के अंधेरे में डूब रहे थे, तब मणिभाई ने गाँवों को अपनी कर्मभूमि चुना। उनका मानना था कि जब तक गाँव आत्मनिर्भर नहीं होंगे, भारत की स्वतंत्रता अधूरी रहेगी। इस दृष्टिकोण ने जन्म दिया एक क्रांतिकारी शुरुआत को। 1959 में, पुणे के पास उरली कांचन गाँव में, उन्होंने भारतीय कृषि उद्योग फाउंडेशन (बीएआईएफ) की नींव रखी। यह कोई साधारण संस्था नहीं थी; यह एक ऐसी कार्यशाला थी, जहाँ विकास के सपने कागज़ों पर नहीं, बल्कि ज़मीन पर साकार होते थे। मणिभाई ने ग्रामीणों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया, उनकी ज़रूरतों को समझा, और उनके लिए स्थायी समाधान तलाशे।

बीएआईएफ के ज़रिए मणिभाई ने वैज्ञानिक सोच और गांधीवादी मूल्यों का ऐसा संगम रचा, जो आज भी सामाजिक संगठनों के लिए मिसाल है। उन्होंने देशी गायों की नस्ल सुधार, कृत्रिम गर्भाधान तकनीक, वर्षा जल संचयन, वृक्षारोपण, और ग्रामीण युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण जैसे कार्यों को बढ़ावा दिया। उनका दृष्टिकोण साफ़ था—विकास का मतलब सिर्फ़ सड़कें और बिजली के तार नहीं, बल्कि वह हर वह बदलाव है, जो किसी इंसान के जीवन में रोशनी लाए। चाहे वह स्वच्छ पानी की बूंद हो, स्थायी रोज़गार का अवसर हो, या फिर आत्मसम्मान की वह मुस्कान, जो किसी के चेहरे पर खिल उठे।

मणिभाई का कार्यक्षेत्र कभी सीमाओं में बंधा नहीं। गुजरात और महाराष्ट्र से शुरू हुआ उनका सफ़र राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, और यहाँ तक कि नेपाल तक फैला। उनके लिए सेवा का कोई भौगोलिक दायरा नहीं था, क्योंकि वे मानवता को राष्ट्रवाद से ऊपर मानते थे। उनके प्रयासों से लाखों ग्रामीण परिवारों की ज़िंदगी बदली। खेतों में हरियाली लौटी, गौशालाओं में समृद्धि आई, और गाँवों में आत्मविश्वास की लौ जल उठी। BAIF के ज़रिए उन्होंने न सिर्फ़ आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया, बल्कि सामाजिक जागरूकता और पर्यावरण संरक्षण जैसे मूल्यों को भी गाँव-गाँव तक पहुँचाया।

मणिभाई भीमभाई देसाई का जीवन एक ऐसी

गाथा है, जो ग्रामीण भारत के हृदय में उत्साह और उमंग की लौ जलाती है। उनकी उपलब्धियाँ किसी चमत्कार से कम नहीं—उन्होंने गाँवों में स्वच्छ पेयजल के लिए सामुदायिक कुओं और ट्यूबवेल की व्यवस्था को बढ़ावा दिया, जिसने लाखों ग्रामीणों की जिंदगी को आसान बनाया। उनकी खासियत थी उनकी अद्भुत संगठन क्षमता; उन्होंने ग्रामीण कारीगरों के लिए मेलों और बाजारों का आयोजन किया, जहाँ उनकी हस्तकला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच मिला। मणिभाई ने ग्रामीण बच्चों के लिए रात्रि पाठशालाएँ शुरू कीं, जो खेतों में दिनभर काम करने वाले परिवारों के लिए शिक्षा की किरण बनीं। उनका व्यक्तित्व एक प्रेरक दीपक की तरह था—वे जहाँ जाते, वहाँ उम्मीद का उजाला छा जाता। उनका विश्वास था, "हर गाँव की मिट्टी में समृद्धि का बीज छिपा है; जरूरत है उसे प्यार और परिश्रम से सींचने की।"

उनकी कार्यशैली में एक अनोखा संयम और साहस था। वे न तो दिखावे के भूखे थे, न ही तालियों के। उनका विश्वास अपने काम की ताकत में था। वे कहा करते थे, "विकास का असली मापदंड आँकड़ों की जटिल तालिकाओं में नहीं, बल्कि उन चेहरों की मुस्कान में है, जो पहले निराशा के अंधेरे में डूबे थे।" यही वजह थी कि उन्हें रेमन मैग्सेसे पुरस्कार (एशिया का नोबेल पुरस्कार), जमनालाल बजाज पुरस्कार जैसे सम्मान मिले। लेकिन इन सबसे परे, वे सादगी की जीवंत तस्वीर थे। खादी का कुरता पहने यह कर्मयोगी हर सुबह खेतों में, गौशालाओं में, या ग्रामीणों के बीच काम करता दिखता था।

14 नवंबर 1993 को मणिभाई इस दुनिया से विदा हुए, लेकिन उनके विचार और कर्म आज भी ज़िंदा हैं। बीएआईएफ आज भी उनके सपनों को साकार कर रहा है, उनके मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं, और उनकी प्रेरणा आज भी अनगिनत युवाओं को समाज सेवा की राह दिखा रही है। मणिभाई का जीवन हमें सिखाता है कि बदलाव का रास्ता आसान नहीं होता, लेकिन अगर इरादे पक्के हों और मकसद साफ़ हो, तो सबसे जटिल समस्याएँ भी हल हो सकती हैं। उन्होंने नारे नहीं लगाए, योजनाएँ नहीं बाँटीं, बल्कि चुपचाप, संकल्प के साथ काम किया। उनके लिए समाज सेवा कोई पेशा नहीं थी—वह उनका स्वभाव था, उनकी आत्मा की पुकार।

आज, जब विकास को हम अक्सर ऊँची इमारतों और चमकते शहरों से मापते हैं, मणिभाई देसाई जैसे व्यक्तित्व हमें सच्चाई का आईना दिखाते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि असली विकास वही है, जो समाज के सबसे निचले पायदान को ऊपर उठाए। वह विकास, जो किसी गाँव की उस औरत को नई आवाज़ दे, जो कभी चुप रहने को मजबूर थी। वह विकास, जो किसी किसान के दिल में अपने बच्चों के लिए बड़े सपनों का बीज बोए। मणिभाई का जीवन महज एक कहानी नहीं, बल्कि एक प्रेरणा है—उन सभी के लिए, जो भारत को उसकी जड़ों से समृद्ध होते देखना चाहते हैं। उनकी जयंती पर उस अटल संकल्प को नमन करें, जो गाँवों की माटी, खेतों की हरियाली और हर उस हृदय में जीवित है, जो निःस्वार्थ सेवा की ज्योति जलाए रखता है।

-प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

"पशु सेवा, जनसेवा से कम नहीं"
"विश्व पशु चिकित्सा दिवस पर एक विमर्श"

विश्व पशु चिकित्सा दिवस हर साल अप्रैल के अंतिम शनिवार को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य पशु चिकित्सकों की भूमिका को सम्मान देना और पशु स्वास्थ्य, मानव स्वास्थ्य व पर्यावरण के आपसी संबंधों पर ध्यान केंद्रित करना है। यह लेख बताता है कि कैसे पशु चिकित्सक सिर्फ जानवरों के डॉक्टर नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, खाद्य सुरक्षा और जनस्वास्थ्य के अभिन्न स्तंभ हैं। भारत में पशु चिकित्सा सेवाएँ, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, संसाधनों की कमी, नीति उपेक्षा और सामाजिक सम्मान की कमी से जूझ रही हैं। हरियाणा जैसे राज्यों में VLDA कर्मियों के लंबे आंदोलन इस बदहाली की झलक देते हैं। तकनीक, महिला भागीदारी और 'वन हेल्थ' जैसी अवधारणाएँ इस क्षेत्र में नई संभावनाएँ ला रही हैं। लेकिन जब तक पशु चिकित्सकों को उचित संसाधन, समाजिक सम्मान और नीति समर्थन नहीं मिलेगा, तब तक समग्र स्वास्थ्य सुरक्षा अधूरी रहेगी। पशु चिकित्सा सिर्फ पशुओं की नहीं, पूरे समाज की सेवा है—और इसे उसी गंभीरता से लेना चाहिए।

-डॉ सत्यवान सौरभ

हर वर्ष अप्रैल के अंतिम शनिवार को विश्व पशु चिकित्सा दिवस मनाया जाता है, जो न केवल पशु चिकित्सकों के कार्य को सराहने का अवसर होता है, बल्कि यह पशु स्वास्थ्य, मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के आपसी संबंधों पर भी प्रकाश डालता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि स्वस्थ पशु न केवल पशुपालकों की आजीविका का आधार हैं, बल्कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा, जनस्वास्थ्य और जैव विविधता के भी रक्षक हैं।

पशु चिकित्सकों की भूमिका: जीवन रक्षा के मूक नायक

पशु चिकित्सक सिर्फ पशुओं का इलाज नहीं करते, वे पूरे पशुपालन तंत्र के संरक्षक होते हैं। गांव के किसान से लेकर बड़े डेयरी उद्योगों तक, सभी की रीढ़ की हड्डी यही विशेषज्ञ होते हैं। ये न केवल बीमारियों का इलाज करते हैं बल्कि उन्हें रोकने, टीकाकरण अभियान चलाने, और महामारी से लड़ने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं।

कोरोना महामारी के दौरान जब मानव स्वास्थ्य पर संकट गहराया, तब भी पशु चिकित्सकों ने अपने कर्तव्य से मुँह नहीं मोड़ा। पशुओं के टीकाकरण, पशुपालन सेवाओं और आपातकालीन सर्जरी जैसे काम लगातार जारी रहे। इनका योगदान 'वन हेल्थ' (One Health) दृष्टिकोण की अहमियत को साबित करता है—जहाँ मानव, पशु और पर्यावरण के स्वास्थ्य को एक समग्र दृष्टि से देखा जाता है।

ग्रामीण भारत में पशु चिकित्सा सेवाएँ: उपेक्षा का शिकार

भारत की बड़ी आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, जहाँ पशुपालन सिर्फ व्यवसाय नहीं, बल्कि जीवन का एक हिस्सा है। परंतु यही ग्रामीण भारत पशु चिकित्सा सेवाओं की बदहाली का सबसे बड़ा उदाहरण भी है। सीमित संसाधन, अपर्याप्त स्टाफ, खराब ढांचागत सुविधाएँ और फील्ड में काम करने वाले कर्मचारियों की उपेक्षा – ये सभी मिलकर पशुओं के इलाज को एक संघर्ष बना देते हैं।

VLDA (Veterinary Livestock Development Assistants) जैसे कर्मचारी वर्षों से सेवा शर्तों में सुधार और प्रोफेशनल मान्यता के लिए आंदोलन कर रहे हैं। हरियाणा में 1000 से अधिक दिन तक चला VLDA का आंदोलन इस उपेक्षा की गंभीरता को उजागर करता है।

पशु चिकित्सा और महिला सशक्तिकरण

इस पेशे में महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ रही है, खासकर पशु सहायिकाओं और पारा-वैटरनरी स्टाफ के रूप में। कई ग्रामीण महिलाएं आज पशु स्वास्थ्य सेवाओं का हिस्सा बन रही हैं, जो न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं, बल्कि अपने समुदाय में बदलाव की वाहक भी बन रही हैं। यह एक सकारात्मक संकेत है, जिसे नीति स्तर पर और प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

चुनौतियाँ: डॉक्टर बनाम डॉग केयरर की छवि

अक्सर देखा गया है कि पशु चिकित्सकों को समाज में वह सम्मान नहीं मिल पाता जो मानव चिकित्सकों को मिलता है। उनकी पहचान एक सीमित 'डॉग केयररर या रगाय का डॉक्टर' तक सिमट जाती है, जबकि वे महामारी विशेषज्ञ, सर्जन, टीका नियोजक और शोधकर्ता की भूमिका निभाते हैं।

इस समस्या का समाधान सिर्फ वेतन और पदोन्नति में नहीं, बल्कि समाज की सोच में बदलाव में छिपा है।

पशु चिकित्सा में तकनीक का प्रवेश: भविष्य की दिशा

आज डिजिटल इंडिया की लहर पशु चिकित्सा में भी प्रवेश कर रही है। मोबाइल ऐप्स के ज़रिए पशु स्वास्थ्य रिकॉर्ड, ई-डायग्नोसिस, ऑनलाइन परामर्श जैसी सुविधाएँ शुरू हो रही हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ड्रोन तकनीक भी पशु गणना, निगरानी और आपातकालीन सहायता में सहायक बन रही है। यह बदलाव ग्रामीण स्तर तक पहुँचे, इसके लिए सरकार और निजी क्षेत्र को मिलकर काम करना होगा।

नीति निर्माण और पशु चिकित्सा

सरकारी नीतियों में पशु स्वास्थ्य को अब भी प्राथमिकता नहीं मिल पाती। बजट का एक सीमित हिस्सा ही पशुपालन और वैटरनरी सेवाओं के लिए निर्धारित होता है, जबकि यह क्षेत्र लाखों लोगों की आजीविका से जुड़ा है। पशु चिकित्सकों की संख्या, ट्रेनिंग, और इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश बढ़ाना ज़रूरी है।

'वन हेल्थ मिशन' को ज़मीन पर लागू करने के लिए राज्य सरकारों को भी जागरूक और प्रतिबद्ध होना पड़ेगा। जब तक पशु चिकित्सक को फ्रंटलाइन हेल्थ वर्कर का दर्जा नहीं मिलेगा, तब तक समग्र स्वास्थ्य की बात अधूरी रहेगी।

सम्मान, संसाधन और संरचना—तीनों चाहिए

विश्व पशु चिकित्सा दिवस पर केवल बधाइयों से काम नहीं चलेगा। ज़रूरत है एक गंभीर मंथन की—कि हम अपने पशु चिकित्सकों को कितना सम्मान, कितना समर्थन और कितने संसाधन दे पा रहे हैं। अगर पशु बीमार पड़ते हैं तो किसान कर्ज में डूबता है, दूध की सप्लाई रुकती है, और अंततः उपभोक्ता भी प्रभावित होता है।

इसलिए यह दिवस केवल पशु चिकित्सकों का नहीं, पूरे समाज का पर्व है। यह हमें याद दिलाता है कि पशु स्वास्थ्य, मानव स्वास्थ्य और पृथ्वी का स्वास्थ्य—तीनों एक ही सूत्र में बंधे हैं।

आज ज़रूरत है एक ऐसी सोच की, जो पशु चिकित्सकों को केवल रपशु डॉक्टररर नहीं, बल्कि 'स्वास्थ्य योद्धा' के रूप में देखे।

पहलगाम आतंकी संपर्क झारखंड से ?
एक युवती समेत चार गिरफ्तार

एटीएस का 15 जगह रेड , हथियार बरामद, कार्रवाई जारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

बोकारो , झारखंड एटीएस ने शनिवार को धनबाद में बड़ी कार्रवाई की है. छापामारी के क्रम में एटीएस ने एक युवती समेत चार को हथियार के साथ गिरफ्तार किया है. इनमें धनबाद के गुलफाम हसन, आयान जावेद, शहजाद आलम और शबनम परवीन शामिल हैं. इनके पास से दो पिस्टल, 12 कारतूस, मोबाइल, लैपटॉप, प्रतिबंधित संगठनों से संबंधित दस्तावेज/पुस्तक बरामद किए गए हैं. एटीएस रांची में आपराधिक मामला दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है.

झारखंड एटीएस को गुप्त सूचना मिली थी कि HuT (HIZB UT-TAHRIR), AQIS (Al-Qaeda in Indian Subcontinent), ISIS एवं अन्य प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों से जुड़े कुछ लोग झारखंड के अन्य युवकों को अपने नेटवर्क से जोड़कर सोशल मीडिया एवं अन्य माध्यमों के जरिए उन्हें गुमराह कर रहे हैं. धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देते हुए राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का संचालन कर रहे हैं. इस सूचना की जांच करने के दौरान यह बात सामने आयी कि इन संगठनों से संबंधित व्यक्तियों द्वारा धनबाद जिले में अवैध आर्म्स का व्यापार एवं राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है.

झारखंड एटीएस ने इन सूचनाओं के आलोक में आज धनबाद जिले में संदिग्ध जगहों की तलाशी के लिए छापामारी को लेकर कई टीमों का गठन किया. छापामारी के क्रम में 21 वर्षीय गुलफाम हसन (पिता-फैयाज हुसैन, अलीनगर, थाना-बैंकमोड़, जिला-धनबाद), 21 वर्षीय आयान जावेद, (पिता-जावेद आलम, अमन सोसाइटी थाना-भूली ओपी, जिला-धनबाद), 20 वर्षीय शहजाद आलम, (पिता-मिनहाज आलम, अमन सोसाइटी गेट नं.-04 नियर भूली बाईपास ओपी, भूली थाना, बैंक मोड़ जिला-धनबाद) एवं 20 वर्षीया शबनम परवीन, (पति-आयान जावेद, शमशेर नगर गली नं-03, थाना-बैंकमोड़, ओपी-भूली, जिला-धनबाद) को गिरफ्तार किया गया है .

झारखंड एटीएस ने इनके पास से दो पिस्टल, 12 कारतूस, कई इलेक्ट्रोनिक्स डिवाइस जैसे-मोबाइल, लैपटॉप, भारी मात्रा में प्रतिबंधित संगठनों से संबंधित दस्तावेज/पुस्तक बरामद किए गए हैं. इस संबंध में एटीएस रांची में आपराधिक मामला दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है.

HuT (HIZB UT-TAHRIR) को कानून के खिलाफ क्रिया कलाप निवारण (UAPA) अधिनियम-1967 के तहत 10 अक्टूबर 2024 को भारत सरकार द्वारा प्रतिबंधित किया गया है. इस संगठन के प्रतिबंधित होने के बाद यह देश का पहला आपराधिक मामला

टीवी पर लाहौर जीत लिया, ज़मीन पर आँसू बहा दिए
— जब राष्ट्रवाद स्क्रीन पर चमकता है और असली ज़िंदगी में धुंधला पड़ जाता है।

न्यूज़ चैनल राष्ट्रवाद को एक स्क्रिप्टेड तमाशे की तरह पेश करते हैं। रात में टीवी पर ऐसा माहौल बनाया जाता है मानो भारत ने पाकिस्तान पर हमला कर दिया हो, लेकिन असलियत में कुछ नहीं होता। मीडिया, फिल्मों और चुनावी भाषणों में सर्जिकल स्ट्राइक जैसी सैन्य कार्रवाईयों का खूब प्रचार होता है, जबकि असली शहीदों और उनके परिवारों की पीड़ा को भुला दिया जाता है। सोशल मीडिया पर जब लोग सवाल पूछते हैं, तो उन्हें देशद्रोही कहकर चुप करा दिया जाता है। चुनावों के समय राष्ट्रवाद को मुद्दा बनाकर असली समस्याओं जैसे बेरोजगारी और शिक्षा से ध्यान भटका दिया जाता है। यह लेख पाठकों से पूछता है — क्या वे सिर्फ इस दिखावे का हिस्सा बनकर ताली बजाते रहेंगे या असली देशभक्ति दिखाते हुए सच्चाई और पीड़ा के साथ खड़े होंगे? असली देशभक्ति शोर में नहीं, संवेदना, सच्चाई और सवाल पूछने की हिम्मत में होती है।

– प्रियंका सौरभ

रात का वक्त है। घरों में लोग टीवी ऑन करते हैं, न्यूज़ चैनल्स लगाते हैं, और अगली ही पल स्क्रीन पर धमाके शुरू हो जाते हैं — "भारत ने लाहौर में घुसकर की बड़ी कार्रवाई!", "पाक के होश उड़े!", "घुटनों पर पाकिस्तान!" जैसे शीर्षक चलते हैं और एंकर ऐसे चीखते हैं जैसे वो रणभूमि से लाइव रिपोर्टिंग कर रहे हों। लेकिन जब सुबह आँख खुलती है, तो सब वैसा ही होता है जैसा था। कहीं कोई युद्ध नहीं, कोई हमला नहीं, बस टीआरपी का तिलिस्मी खेल था। यह युद्ध नहीं, एक स्क्रिप्टेड शो है — राष्ट्रवाद का एक सजीव तमाशा, जो टीआरपी के नाम पर परोसा जा रहा है। असली सवाल यह है कि क्या देश की सुरक्षा, शहीदों की शहादत और जनता की भावनाएं भी अब मीडिया मार्केटिंग का हिस्सा बन चुकी हैं?

मीडिया का 'वीर रस' तमाशा:

भारतीय न्यूज़ चैनल अब सूचना का स्रोत कम और नाटकीय मनोरंजन का मंच अधिक बन चुके हैं। एंकर युद्ध के मूड में होते हैं, पैनल में रिटायर्ड जनरल्स, कट्टर राष्ट्रवादी प्रवक्ता और एक दो रदुश्मन देशर के चेहरे बिठाए जाते हैं। सब चीखते हैं, एक-दूसरे पर चिल्लाते हैं, और दर्शक टीवी से चिपके रहते हैं।

CGI से बना नकली बम, मिसाइल के धमाके, और नकली नक्शे — यह सब दर्शकों को एक 'महायुद्ध' का आभास कराते हैं। लेकिन जमीनी हकीकत क्या है? जमीनी हकीकत यह है कि इस पूरे ड्रामे से सिर्फ एक चीज़ मजबूत होती है — चैनल की रेटिंग और सरकार की छवि।

सर्जिकल स्ट्राइक, सिनेमा और सेंसर:

2016 की उड़ी घटना के बाद भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक किया। अगले साल इसपर आधारित फिल्म रउरीर आई। देश ने इसे हाथोंहाथ लिया। "How's the josh?" डायलॉग हर बच्चे की जुबान पर चढ़ गया। विक्की कौशल हीरो बन गए, और परेश रावल जैसे अभिनेता पर्दे पर 'रॉ' चीफ अजित डोभाल बन गए — जो हर मिशन में एक मोबाइल यूज़ करते और फिर फेंक देते। लेकिन इन सबके बीच असली ऑपरेशन को अंजाम देने वाले सैनिक, उनके परिवार और उनकी बलिदान की कहानी कहीं खो गई। जब कोई जवान शहीद होता है, तो न्यूज़ चैनल पहले उसकी फोटो के साथ ब्रेकिंग चलाते हैं — "एक और जवान शहीद", लेकिन अगले ही पल एंकर ट्रेंडिंग टॉपिक पर लौट आता है।

सोशल मीडिया और सबूत की राजनीति:

जब बालाकोट एयरस्ट्राइक हुआ, तो लोगों ने सोशल मीडिया पर सवाल उठाया — "क्या सबूत हैं?", "कितने मरे?"। सरकार चुप रही, लेकिन ट्रोल आर्मी सक्रिय हो गई। जिसने भी सवाल उठाया, वह "पाकिस्तानी एजेंट" करार दे दिया गया। राष्ट्रवाद अब 'साइलेंसिंग टूल' बन गया है — जो बोलता है, वह देशद्रोही है। जो पूछता है, वह गद्दार है। जनता से जवाबदेही माँगना अब भी अपराध बना हुआ है, और सोशल मीडिया पर राष्ट्रभक्ति का मतलब बस प्रोफाइल फोटो बदलना और ट्रेंडिंग हैशटैग लगाना रह गया है।

शहीद के आँसू और आम आदमी का अकेलापन:

मीडिया युद्ध तो दिखाता है, लेकिन युद्ध में जो लोग वाकई मरते हैं, उनका क्या? जम्मू-कश्मीर या उत्तर-पूर्व में जब कोई जवान शहीद होता है, तो क्या उसकी विधवा की पेंशन समय पर आती है? क्या उसके बच्चों को मुफ्त शिक्षा मिलती है? क्या उसकी बूढ़ी माँ को इलाज मिलता है? अक्सर नहीं। मीडिया एक दिन रोशनी डालता है, लेकिन सरकार और समाज बहुत जल्दी भूल जाते हैं। जो बच जाते हैं, वे अकेले रह जाते हैं। वो मां जो कहती है, "मेरा बेटा तिरंगे में लिपट कर आया, मुझे गर्व है" — उसे गर्व के साथ साथ जीवनभर की पीड़ा भी झेलनी पड़ती है।

राजनीति और राष्ट्रवाद की साठगांठ:

चुनाव के मौसम में यह 'टीवी युद्ध' और भी आक्रामक हो जाता है। नेताओं की रैलियों में सर्जिकल स्ट्राइक का जिक्र होता है, बटन दबाने को 'बम गिराने' जैसा बताया जाता है। विपक्ष के सवाल को रपाक प्रेमर कहा जाता है, और राष्ट्रभक्ति के नाम पर असली मुद्दे — बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य — सब गायब हो जाते हैं। हर बार चुनाव के करीब कुछ न कुछ रस्ट्राइकर होता है — कभी एयर, कभी डिजिटल, कभी बयानबाज़ी की। देश की सुरक्षा को एक चुनावी ब्रांड बना दिया गया है। जो वोट न दिला सके, वो देशप्रेम कैसा?

युद्ध की असली तस्वीर:

जो लोग युद्ध का नारा लगाते हैं, वे कभी युद्ध नहीं लड़ते। युद्ध लड़ते हैं — वो जवान जो पहाड़ी पोस्ट पर जीरो तापमान में बैठते हैं, वो परिवार जो हर फोन कॉल से डरता है, और वो माँ जो हर दरवाज़े की आहट से चौंक जाती है। और आतंकवादी घटनाओं में मारे जाने वाले आम नागरिक — उनकी भी कोई आवाज़ नहीं। उनके लिए कोई फिल्म नहीं बनती, कोई नेता श्रद्धांजलि नहीं देता, कोई मीडिया चैनल ब्रेकिंग नहीं चलाता।

हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहां देशभक्ति अब एक टीवी शो बन चुकी है, फिल्मी स्क्रीन पर बिकने वाली स्क्रिप्ट है और चुनावी रैली में गूंजता हुआ नारा है। असली देशभक्ति — सवाल पूछना, पीड़ित की मदद करना, और सच्चाई को पहचानना — अब खोती जा रही है।

हमें तय करना होगा कि क्या हम इस तमाशे का हिस्सा बनना चाहते हैं या उसके विरोध में खड़ा होना चाहते हैं। क्या हम सिर्फ तालियाँ बजाना चाहते हैं, या शहीद के परिवार के आँसू पोछने वाले बनना चाहते हैं?

झारखंड के भोगनाडीह से आदिवासी धर्मान्तरण, घुसपैठियों के खिलाफ होगा आन्दोलन -चंपाई सोरेन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची , जम्मू-कश्मीर के पहलगांव में जिस प्रकार आतंकी हमले के बाद विदेशी (बांग्लादेशी) नागरिकों के खिलाफ देश में एक्सन आरंभ हुआ है उसी का फलस्वरूप पहली कड़ी के स्वरूप में शनिवार को गुजरात के अहमदाबाद में 890 तथा सुरत में 143 बांग्लादेशी पुरूष नागरिक समेत करीब 1000 महिला एवं बच्चे जो अवैध रूप में भारत में रह रहे थे उसे गिरफ्तार कर लिया गया है । अब उन्हें अपने देश में भेजने का प्रबंध किया जायेगा । इसी परिप्रेक्ष्य में झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन ने भी ठीक समय पर राज्य में बढ़ते धर्मांतरण और बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ निर्णायक आंदोलन की छेड़ रखी है । पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई ने कहा कि हूल दिवस (30 जून) को भोगनाडीह की पवित्र भूमि से यह आंदोलन शुरू होगा, जहां हजारों की संख्या में आदिवासी समुदाय के प्रतिनिधि, धर्मगुरु, मांझी-परगना, पाहन, मानकी-मुंडा और पड़हा राजा जुटेंगे.उन्होंने प्रेस वार्ता में बताया कि यह केवल एक आंदोलन नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व, संस्कृति और परंपराओं की रक्षा की एक ऐतिहासिक शुरुआत होगी.

चम्पाई सोरेन ने कहा कि यदि धर्मांतरण पर समय रहते नियंत्रण नहीं हुआ तो हमारे सरना स्थल, देशाऊली और जाहेरस्थान वीरान हो जाएंगे. उन्होंने दो टूक कहा कि जो व्यक्ति आदिवासी जीवनशैली और परंपराओं को त्याग चुका है, या दूसरे धर्म में विवाह कर चुका है, उसे आदिवासी आरक्षण का लाभ लेने का कोई नैतिक या संवैधानिक अधिकार नहीं है.

उन्होंने 1967 के उस ऐतिहासिक क्षण को याद किया जब बाबा कार्तिक उरांव ने संसद में डीलिस्टिंग विधेयक प्रस्तुत किया था. उस विधेयक में धर्म परिवर्तन करने वाले आदिवासियों से आरक्षण समाप्त करने की मांग की गई थी. यह विधेयक संसदीय समिति के पास गया, जिसने इसे आदिवासी अस्तित्व की रक्षा के लिए आवश्यक बताया. हालांकि, चम्पाई ने आरोप लगाया कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने मिशनरी दबाव में इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया. उन्होंने बताया कि उस समय 322 लोकसभा और 26 राज्यसभा सांसदों ने इस विधेयक का

समर्थन किया था.

चम्पाई सोरेन ने तीखे शब्दों में राज्य सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि पाकुड़, साहेबगंज, दुमका जैसे जिलों में बांग्लादेशी घुसपैठिये आदिवासी जमीनों पर कब्जा कर रहे हैं. वे हमारी बेटियों से छल या धमकी से विवाह कर रहे हैं. इसके बाद उनके माध्यम से आरक्षण व्यवस्था में अतिक्रमण किया जा रहा है. उन्होंने पूछा कि जब सीएनटी-एसपीटी एक्ट जैसी कानूनी सुरक्षा मौजूद है, तो इन घुसपैठियों को सैकड़ों एकड़ जमीन कौन दिला रहा है? जमाई टोला बसाने में कौन मदद कर रहा है?

चम्पाई सोरेन ने खेरवाड़ वीरों, तिलका मांझी, सिदो-कान्हू, बिरसा मुंडा, टाना भगत, पोटो हो और तेलंगा खड़िया जैसे स्वतंत्रता सेनानियों का स्मरण करते हुए कहा कि जब इन महान आत्माओं ने कभी समझौता नहीं किया, तो आज का आदिवासी समाज क्यों झुके?

ग्लोबल सपने, लोकल जड़ें: नया भारत किस ओर?

सादगी से शानो-शौकत तक : हमारी बदलती जीवनधारा

आज का युग उपभोक्तावाद की चकाचौंध और आधुनिकता की रफ्तार से सराबोर है। एक ओर जीवनशैली ऐसी शानो-शौकत से भर गई है, जो कभी केवल परीकथाओं में नजर आती थी, तो दूसरी ओर हमारी सोच और मूल्यों की जड़ें भी नई दिशाओं में बढ़ चली हैं। वह दौर अब बीते जमाने की बात लगता है, जब सुख का मतलब था परिवार के साथ पुराने ट्रांजिस्टर पर विविध भारती की मधुर धुनें सुनना, बाजार से नई साइकिल लाकर बच्चों के चेहरों पर चमक देखना, या गर्मियों में पुराने पंखे की फड़फड़ाहट में सुकून तलाशना। मध्यमवर्गीय जीवन तब संयम और संतुष्टि का दर्पण था—न अधिक की हवस, न कम में बेचैनी। मगर जैसे ही वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण की लहर भारत में उमड़ी, हमारी दुनिया ने पलट कर नया रंग ओढ़ लिया। बाजार विदेशी ब्रांडों की बाढ़ से जगमगा उठे, और हमारे सपनों ने भी आसमान छूने की ठान ली।

इस आर्थिक क्रांति ने न केवल हमारी जेब को समृद्ध किया, बल्कि हमारी आकांक्षाओं को भी नई उड़ान दी। पहले पढ़ाई का लक्ष्य था एक सम्मानजनक सरकारी नौकरी या स्थानीय रोजगार, मगर अब सपने विदेशों में बसने और वैश्विक मंच पर अपनी पहचान गढ़ने तक सैर कर आए हैं। छोटे शहरों से लेकर चमचमाते महानगरों तक, इंजीनियरिंग और मेडिकल कोचिंग सेंटरों का जाल बिछ गया। जयपुर, कोटा और पटना जैसे शहर शिक्षा के चमकते सितारे बन गए, जहाँ लाखों युवा अपने सुनहरे भविष्य को तराशने की जिद में रात-दिन एक कर रहे हैं। माता-पिता की उम्मीदें अब केवल अपने बच्चों को डॉक्टर या इंजीनियर बनाने तक सिमटी नहीं, बल्कि उन्हें सिलिकॉन वैली की टेक दुनिया या लंदन की गगनचुंबी इमारतों में शिखर छूते देखने की है। नतीजा, नई पीढ़ी ने अपनी मेहनत और हौसले से विदेशों में ऐसी कहानियाँ रचीं, जो प्रेरणा बन गईं। आज हर गली-मोहल्ले में कोई न कोई विदेश की धरती पर अपनी छाप छोड़ रहा है, और उनकी कमाई भारत में नए मकान, जमीन और कारोबार की शक्ल में लौटकर समृद्धि की नई इबारत लिख रही है।

इन बदलावों ने हमारी जरूरतों की परिभाषा को नए रंगों से सराबोर कर दिया। पहले एक नई सिलाई मशीन या टू-इन-वन टेप रिकॉर्डर घर में उत्सव की लहर ले आता था, लेकिन अब लक्जरी एसयूवी, डिजाइनर हैंडबैग और लेटेस्ट स्मार्टफोन्स रुतबे की नई पहचान बन गए हैं। ब्रांडेड सामानों की चमक अब सिर्फ उच्च वर्ग की बपौती नहीं रही। टीवी और सोशल मीडिया के चटक विज्ञापनों ने हर दिल में ब्रांड्स का जादू बिखेर दिया है। फेस्टिवल सेल में 30-70% छूट के लुभावने ऑफर देख लोग मॉल्स की ओर उमड़ पड़ते हैं, मानो सपनों की सैर पर निकल पड़े हों। "सस्ता बार-बार, महंगा एक बार" का मंत्र अब हर जुबान पर चढ़ गया है। गाँवों और कस्बों तक अंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स के चमचमाते स्टोर अपनी जड़ें जमा रहे हैं, और हर कोई इस जगमगाती दुनिया का सितारा बनने को बेताब है।

मगर इस चकाचौंध की बयार में कुछ सवाल दिल को बेचैन करते हैं। क्या महंगे ब्रांड्स का अंबार ही तरक्की की कसौटी है? क्या हमारी पहचान अब सिर्फ विदेशी लेबल्स और आलीशान जीवनशैली की मोहताज होकर रह जाएगी? हमारी पुरानी पीढ़ी, जिसके लिए सादगी और आत्मनिर्भरता जीवन का मंत्र थी, शायद इस दिखावे की दुनिया को देखकर स्तब्ध रह जाए। उन्होंने वह ज़माना जिया, जब एक छोटा-सा रेडियो घर में उत्सव की लहर ले आता था, और विदेश यात्रा का ज़िक्र पड़ोसियों की गपशप का मसाला बनता था। आज जब बच्चे विदेशों से महंगे परफ्यूम या स्मार्टवॉच लाते हैं, तो शायद वह पीढ़ी सोच में डूब जाती होगी—क्या यही वह भारत है, जिसका सपना उन्होंने बुना था?

बेशक, आज की पीढ़ी रात-दिन मेहनत की स्याही से अपनी कहानियाँ लिख रही है। विदेशों में पसीना बहाकर, टैक्स चुकाकर, और भारत में निवेश कर वह देश की समृद्धि में रंग भर रही है। मगर इस भौतिक उड़ान के साथ हमें अपनी जड़ों को भी थामे रखना होगा। हमारी संस्कृति, हमारे मूल्य, और हमारी परंपराएँ उतनी ही अनमोल हैं, जितनी हमारी आर्थिक ऊँचाइयाँ। अगर हम सिर्फ चमकते ब्रांड्स और ठाठ-बाट को ही प्रगति का पैमाना मान लेंगे, तो कहीं न कहीं अपनी आत्मा को खो देने का डर है।

जीवन का सच्चा सुख संतुलन की सुंदर जुगलबंदी में छिपा है। यदि हम अपनी भौतिक विजयों के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक और नैतिक विरासत को भी सहेज लें, तभी हमारी प्रगति का सूरज पूर्णता को छूएगा। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि भारत की आत्मा उसकी सादगी, उसकी संस्कृति और उसके अटूट मूल्यों की गहराइयों में बसती है। अगर हम आधुनिकता की सरपट दौड़ में इस अनमोल प्रकाश को खो बैठे, तो हमारी चमक एक अधूरी तस्वीर बनकर रह जाएगी। सच्चा भारत वही होगा, जहाँ लक्जरी कारों की रफ्तार के साथ मंदिरों की घंटियों की गूँज ताल मिलाए, जहाँ स्मार्टफोन्स की चमक के साथ परिवार की गर्मजोशी का आलम भी कायम रहे।

इसलिए जरूरी है कि हम बीच-बीच में ठहरकर खुद से सवाल करें। क्या हमारी दौड़ सिर्फ बाहरी चमक को पकड़ने की है, या हम अपने भीतर की शांति और मूल्यों को भी उतना ही गले लगा रहे हैं? अगर यह संतुलन हमारी नजरों से धुंधला पड़ रहा है, तो वक्त है कि हम अपनी सोच को नए सिरे से तराशें। क्योंकि सच्ची समृद्धि वही है, जो बाहर की जगमगाहट और भीतर की रोशनी को एक साथ बुनकर एक ऐसी तस्वीर गढ़े, जो अधूरी न लगे।

-प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर, हमारी जिम्मेदारी

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर हमारे देश की सबसे मूल्यवान संपत्तियों में से एक है। ये हमें जीवन के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं, जैसे कि ऑक्सीजन, जल, और भोजन। इसके अलावा, वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर हमारे देश की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

वन संपत्ति पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जैसे कि जल चक्र को नियंत्रित करना और मिट्टी का क्षरण रोकना।

वन संपत्ति में जैव विविधता बहुत अधिक है, जिसमें कई दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियाँ शामिल हैं।वन संपत्ति से हमें लकड़ी, फल, और अन्य वन उत्पाद मिलते हैं, जो हमारी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं।

प्राकृतिक धरोहर हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हमारी पहचान और इतिहास को दर्शाती है।प्राकृतिक धरोहर पर्यटन के लिए एक महत्वपूर्ण आकर्षण है, जो हमारी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है।

प्राकृतिक धरोहर शिक्षा और अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है, जो हमें प्राकृतिक संसाधनों के बारे में जानने और उनकी रक्षा करने में मदद करता है।

हमें वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर का संरक्षण करना चाहिए, जिससे ये आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रहें।

हमें वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर का जिम्मेदार उपयोग करना चाहिए, जिससे इनका दीर्घकालिक उपयोग सुनिश्चित हो सके।हमें वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिए, जिससे लोग इनकी रक्षा करने में मदद करें।

वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर हमारी सबसे मूल्यवान संपत्तियों में से एक है। हमें इनका संरक्षण और जिम्मेदार उपयोग करना चाहिए, जिससे ये आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रहें। हमें वन संपत्ति और प्राकृतिक धरोहर के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिए, जिससे लोग इनकी रक्षा करने में मदद करें।

ओडिशा में निवेश के लिए अब सही समय है: मुख्यमंत्री मोहन माझी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: अब सही समय है। ओडिशा में निवेश करें । उन्हें समृद्ध और विकसित ओडिशा के निर्माण में भागीदार बनने दीजिए। यह बात मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी ने कही। मुख्यमंत्री ने मुंबई में आयोजित इंडिया स्टील-2025 शिखर सम्मेलन में भाग लेते हुए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय इस्पात निर्माता कंपनियों से ऐसा आह्वान किया है।मुख्यमंत्री ने निवेशकों को ओडिशा में औद्योगीकरण के लिए अनुकूल माहौल के बारे में जानकारी दी, जिसमें पर्याप्त कच्चा माल, कुशल मानव संसाधन और मजबूत संचार बुनियादी ढांचा शामिल है।

मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कहा, भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा लौह अयस्क उत्पादक देश है। ओडिशा देश का सबसे बड़ा लौह अयस्क उत्पादक राज्य है। ओडिशा देश की लौह अयस्क आवश्यकता का 55 प्रतिशत आपूर्ति करता है। भारत में इस्पात उद्योग के विकास में ओडिशा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खनिज संसाधनों से समृद्ध मुख्यमंत्री का जिला क्योंझर राज्य के कच्चे माल का 50 प्रतिशत उत्पादन करता है। इसलिए, राज्य में इस्पात और इस्पात से संबंधित उद्योगों के लिए अपार संभावनाएं हैं। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा, राज्य में सत्ता में आने के बाद भाजपा सरकार ने औद्योगीकरण के लिए अनुकूल माहौल बनाया है। यह पिछले जनवरी में आयोजित ओडिशा एक्सीलेंस कॉन्क्लेव से साबित हुआ है। सरकार ने सुनिश्चित किया है कि औद्योगिक क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार कच्चा माल, भूमि, सड़क और रेल संपर्क, बिजली और पानी उपलब्ध कराया जाए। पिछले 10 महीनों में राज्य सरकार ने राज्य में 44 बड़ी खदानों की नीलामी की है। जल्द ही 8 और बड़ी खदानों की नीलामी की तैयारी शुरू हो गई है। जब ये सभी खदानें चालू हो जाएंगी, तो 323 मिलियन टन कच्चे माल का उत्पादन होगा। मार्च 2026 तक अन्य 22 खदानों की नीलामी की जाएगी।

छत्तीसगढ़ सरकार ने महानदी का कलमा बैराज के सभी गेट बंद किया, ओड़िशा की लोगों परेशान

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : छत्तीसगढ़ सरकार ने कलमा बैराज के सभी गेट एक-एक करके बंद कर दिए हैं। बैराज के 66 में से 65 गेट पूरी तरह बंद हैं, जबकि लोगों को गुजरने की अनुमति देने के लिए एक गेट को सिर्फ 5 सेंटीमीटर खोला गया है। इस गेट से नीचे बहने के बजाय, नीचे बहता पानी सूखी महानदी में समाहित हो रहा है। परिणामस्वरूप, इस वर्ष अप्रैल के आरंभ से ही छत्तीसगढ़ के लिए बैराज के दूसरी ओर पानी की कमी हो गई है, तथा ओडिशा के लिए भी पानी उपलब्ध नहीं है। झारसुगुड़ा जिले के लखनपुर ब्लॉक में सुखासोधा के पास भी स्थिति ऐसी ही है, जहां महानदी नदी ओडिशा में प्रवेश करती है। सुखसोड़ा में सूखी महानदी नदी ट्रिपल इंजन की विफलता का संकेत है। ओडिशा और छत्तीसगढ़ में केंद्र में भाजपा सरकार होने के

बावजूद छत्तीसगढ़-ओडिशा महानदी विवाद अभी भी अनसुलझा है। परिणामस्वरूप, मार्च के अंतिम सप्ताह से कलमा से पानी नहीं आ रहा है। वह सूखा मैदान जहाँ कुछ वर्ष पहले धूप वाले दिन भी महानदी उफान पर रहती थी; आज उस सूखे के दौरान महानदी में धूल उड़ रही है।परिणामस्वरूप, पूरे वर्ष महानदी के पानी पर निर्भर रहने वाले मछुआरे अब अपनी आजीविका खो चुके हैं। दूसरी ओर, महानदी के पानी पर रबी की फसल उगाने वाले किसान भी खेती नहीं कर पा रहे हैं। विडंबना यह है कि जहां छत्तीसगढ़ की ओर महानदी भारी बाढ़ के कारण उफान पर है, वहीं ओडिशा की ओर यह एक विशाल रेगिस्तान जैसा दिख रहा है। यह विश्वास करना कठिन है कि ओडिशा के नदी तटवर्ती निवासियों को भीषण गर्मी में, जबकि आसमान से आग बरस रही है, पानी पीने के लिए किस तरह संघर्ष करना पड़ रहा है। जबकि मनुष्य से लेकर मवेशी तक सभी परेशान हैं, छत्तीसगढ़ में औद्योगिक संयंत्रों को उच्च क्षमता वाले पंपों का उपयोग करके सुरक्षित जल की आपूर्ति की जा रही है। महानदी के निचले इलाकों में रहने वाले ग्रामीणों को इसके कारण अकल्पनीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। दूसरी ओर, महानदी में पानी की कमी के कारण ओडिशा में भूजल स्तर भी कम हो गया है।

गुरुवर जी हमको पार लगाना जैन भक्ति विडियो एल्बम सुमति धाम महाकुंभ इन्दौर विशेष

लरिहर सिंह चौहान। देवाधिदेव श्री सुमतिनाथ दिगंबर जैन जिनालय गोधा एस्टेट महाकुंभ पर विशेष भजन में "गुरुवर जी हमको पार लगाना" जिसमें इस भक्ति एल्बम के इस भजन के माध्यम से प्रभु भक्ति व गुरु सेवा का अनुपम गुणगान किया गया भक्ति विडियो एल्बम रिलीज किया गया। इस भजन के लिये श्रमण परम्परा के अध्यात्मयोगी दिगम्बर जैनाचार्य 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ । इस भजन को लिखने एवं गाने का सौभाग्य इंदौर के प्रसिद्ध युवा भजन गायक अंश जैन जीं को प्राप्त हुआ एवं इंदौर के ही पुण्यार्जक परिवार श्री राजेंद्र जीं गाया जीं जैन कंचन बाग़ इन्दौर को प्राप्त हुआ ।। यह जानकारी श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर नसिया जी के मिडिया प्रभारी व स्वतंत्र लेखक लरिहर सिंह चौहान जी ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है उन्होंने बताया की इस भजन को आप सभी अंश जैन इन्दौर यूट्यूब चैनल पर भी सुन सकते हो ।

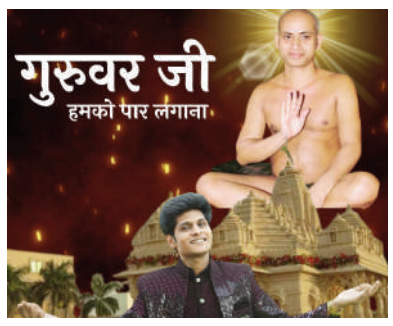

पचमढ़ी की प्राकृतिक सुंदरता। झीलें,झरने। और धार्मिक मंदिर।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

पंचमढ़ी की प्राकृतिक सुंदरता वास्तव में अद्वितीय है।पचमढ़ी मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यह हिल स्टेशन सतपुड़ा पर्वतमाला की गोद में बसा हुआ है, और इसकी ऊंचाई समुद्र तल से लगभग 1067 मीटर है।

पचमढ़ी की प्राकृतिक सुंदरता।

पचमढ़ी में कई झीलें और झरने हैं, जो इसकी प्राकृतिक सुंदरता को और भी बढ़ाते हैं।

पचमढ़ी के आसपास के वनस्पति और जीव-जन्तु बहुत विविध हैं, जिसमें कई दुर्लभ प्रजातियाँ शामिल हैं।

पचमढ़ी से पहाड़ी दृश्य बहुत ही मनोरम है, जिसमें हरे-भरे वन और पहाड़ी चोटियाँ शामिल हैं।पचमढ़ी के प्रमुख आकर्षण,,,

बी फॉल पचमढ़ी का सबसे प्रसिद्ध झरना है, जो अपनी सुंदरता और शांति के लिए प्रसिद्ध है।

पांडव गुफा एक प्रमुख धार्मिक स्थल है, जो महाभारत के पांडवों से जुड़ी हुई है।

जटाशंकर मंदिर एक प्रमुख धार्मिक स्थल है, जो भगवान शिव को समर्पित है।

पचमढ़ी एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है।पचमढ़ी में कई धार्मिक स्थल हैं, जो इसकी सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं।

पचमढ़ी के आसपास के वनस्पति और जीव-जन्तु का संरक्षण करना बहुत महत्वपूर्ण है, जो इसकी प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखने में मदद करता है।

पचमढ़ी एक प्राकृतिक और सांस्कृतिक खजाना है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी झीलें, झरने, वनस्पति और जीव-जन्तु के लिए प्रसिद्ध है।

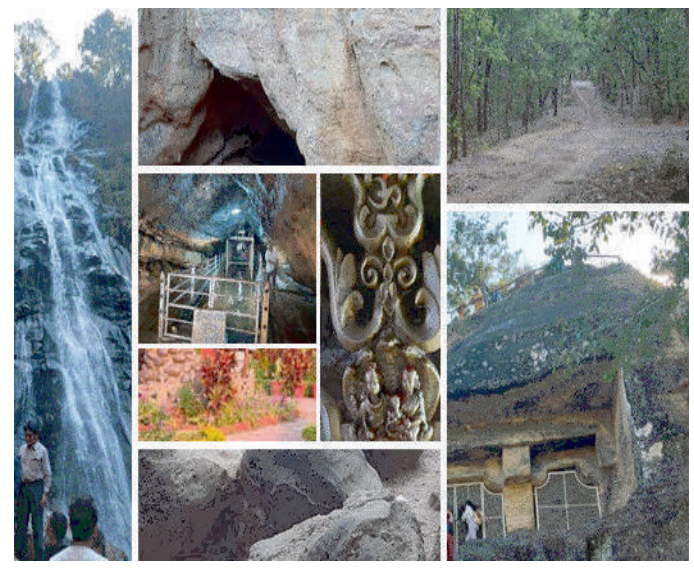

मुख्यमंत्री ने स्पेन, स्वीडेन के निवेशकों को खनिज ब्लाक नीलामी तथा उपकरण मे निवेश हेतु दिया आमंत्रण

देश के कुल खनिज का 40 प्रतिशत हिस्सेदारी केवल झारखंड की है

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला , खनिज संपदा के मामले में अत्यन्त धनी राज्य झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन इन दिनों स्पेन व स्वीडेन के दौरे पर गये है . साथ मे गये प्रतिनिधिमंडल ने निवेशकों को खनन क्षेत्र में विशेषकर खनिज उपकरण निर्माण व खनिज ब्लॉक की नीलामी में निवेश का न्यौता वहां जाकर दिया है . खान सचिव अरवा राजकमल व खान निदेशक राहुल कुमार सिन्हा ने निवेशकों के समक्ष पीपीटी के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी.

प्रतिनिधिमंडल में गए अधिकारियों के माध्यम से बताया गया कि झारखंड राज्य देश के उन राज्यों में से एक है, जो प्राकृतिक खनिज संपदा से समृद्ध है. यह राज्य भारत के कुल खनिज संसाधनों का लगभग 40% हिस्सा समेटे हुए है. झारखंड खनिज उत्पादन के क्षेत्र में देश में पांचवें स्थान पर है और इसकी खनिज संपदा भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करती है. राज्य कोयला, लोहा, तांबा, बॉक्साइट, चूना पत्थर, डोलोमाइट, क्वार्ट्जाइट, मैंगनीज, यूरेनियम, चाइना क्ले, ग्रेफाइट, सोपस्टोन, फायर क्ले, फॉस्फोराइट, एपेटाइट, क्वार्ट्ज, फेल्ड्सपार, सोना और पाइरोक्सीनाइट जैसे अनेकों बहुमूल्य खनिजों से परिपूर्ण है.झारखंड को कोकिंग कोल का एकमात्र उत्पादक होने का गौरव प्राप्त है. इसके अलावा राज्य देश में कोयला भंडार में दूसरा, लौह अयस्क में दूसरा, तांबा अयस्क में तीसरा और बॉक्साइट में सातवां स्थान रखता है. इन सभी तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड देश के खनिज मानचित्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

झारखंड के विभिन्न प्रमंडलों में खनिज संसाधनों का व्यापक वितरण है. राज्य के कई जिलों में खनिजों का व्यापक भंडार मौजूद है, जिससे राज्य को न केवल खनिज उत्पादन में बढ़त मिलती है, बल्कि उद्योगों के लिए भी बड़े अवसर उपलब्ध होते हैं.

अधिकारियों ने जानकारी दी कि खनन क्षेत्र के विकास के साथ खनन उपकरण निर्माण में भी झारखंड में अपार संभावनाएं हैं. ड्रिलिंग रिग, आर्टिकुलेटिंग ट्रक, बुलडोजर, ड्रैगलाइन, ड्रिल मशीन, हॉल ट्रक, लोडर, मोटर ग्रेडर और एक्सकेवेटर जैसे खनन अन्वेषण वाहनों और उपकरणों का निर्माण एक बड़ा उद्योग क्षेत्र बन सकता है. इसके अलावा, खनिज प्रसंस्करण एवं शुद्धिकरण उपकरण जैसे कि ग्राइंडिंग इक्विपमेंट, मैग्नेटिक सेपरेटर, थिकनर, क्लैरिफायर आदि के निर्माण में भी निवेश के सुनहरे अवसर हैं. वाहन उपकरणों के निर्माण के साथ-साथ परिवहन साधनों जैसे कि बेल्ट कन्वेयर, मोटर स्क्रैपर आदि के निर्माण में भी अपार संभावनाएं मौजूद हैं.

निवेशकों को बताया गया कि झारखंड एशिया के सबसे बड़े ऑटोमोबाइल निर्माण क्लस्टरों में से एक है. राज्य की सरकार ने निवेश को आकर्षित करने के लिए कई आकर्षक प्रोत्साहन योजनाएं लागू की हैं. बड़ी परियोजनाओं और एमएसएमई के लिए विशेष रियायतें दी जा रही हैं.'ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस' को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने झारखंड इंटीग्रेटेड माइंस एंड मिनरल्स मैनेजमेंट सिस्टम' (जिम्स) लागू किया है, जिससे खनन कार्यों का डिजिटलीकरण और पारदर्शिता सुनिश्चित हो रही है.

राज्य सरकार खनिज ब्लॉकों की नीलामी के माध्यम से निवेशकों को आकर्षित कर रही है. खनिज अन्वेषण में भी अनेक तैयार अवसर मौजूद हैं.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023